



श्री सूर्यहरस्य पारीक स्मारक प्रथममाला  
प्रथम पुष्प 17

# चौबोली

२८७०

सम्पादक

डा० कन्हैयालाल सहल  
साहित्यरत्न पं० पतराम गौड़ 'विशद' एम० ए०

मूषिणा-सेवक  
श्री जैनेन्द्रकुमार



मिहने का पता

टी स्टूडेंट्स बुक कम्पनी

जयपुर

१९६२

खोद्यपुर

मूल्य ८० नये पै०

प्रकाशक—

दी स्टूडेंट्स बुक कम्पनी  
जयपुर जोधपुर

मुद्रक—  
यूनाइटेड प्रिण्टर्स  
जयपुर ।

## विषय-सूची

भूमिका

आमुख

१	राखी चौबोली की बात	१
२.	सीवा बीजे की बात	२४
३	राजा मानसावा की बात	४३
४	सूरी घर सतवादी की बात	२६



## भूमिका

कहा गया कि मैं इस पुस्तक पर कुछ शब्द लिखूँ, शायद इस लिए कि मैंने कतिपय कहानियाँ लिखी हैं। कहानी के आदि का पता चलना कठिन है। इतिहास में उसकी इति मी होने वाली नहीं है। मनुष्य न भाषा जब से सीखी और पारस्परिकता जीवनमें आरम्भ हुई, तभी से कहानी उपजी और मनुष्य में आपसीपन जब तक रहगा, कहानी रहेगी।

आजकल छापा है और बहुत-से अन्वयार निकलते हैं। लग भग सभी को उनमें आपने के लिए कहानी चाहिए। इस तरह कहानियों का एक नया ढंग भी चल पड़ा है। जैसे कपड़ों के नये वर्ण निकलते हैं, कहानियों के भी रगरूप नये निरूढने लगे हैं। यानी कुछ के लिए कहानी ही साम्य हो गयी है। छाप से पहले ऐसा नहीं था। तब कहानी हमेशा साधन थी। पत्र से पत्रक यही कह सकते हैं कि वह अनोरजन का साधन थी, पत्र से पत्रक बड़ी धर्म-तत्व का रूपक हो जाती थी। कहानी अपने आप में कला न थी यद्यपि कही जाने और सुनी जाने के धरण उसमें एक प्रकार की कला का होना अनिवार्य था। छापे से पहले की कहानी में इसीसे एक चित्र मयता है। जब कहानी समझ सुननेवाले से परोक्ष पढ़ने वाले के लिए लिखी जाने लगी, तब उसकी इस चित्रात्मकता में, लगता है, कमी भी आ चली। उसमें प्रसाद कम हुआ, उस पस्तु को कम माँग रह गई, जिसको अमेजी में *path* कहते हैं और वह कुछ अध्ययन-अनन की शीर्ष बनने लगी। मैं नहीं मानता कि आज की अन्वयारो कहानियों को कहानी का विक



## भूमिका

कहा गया कि मैं इस पुस्तक पर कुछ शब्द लिखूँ, शायद इस-  
लिए कि मैंने कतिपय कहानियाँ लिखी हैं। कहानी के आविष्कार  
पता चलना कठिन है। इतिहास में उसकी इति भी होने वाली  
नहीं है। मनुष्य ने माया-जगत् से सीसी और प्राकृतिकता जीवनमें  
आरम्भ हुई, तभी से कहानी उपजी और मनुष्य में आपसीपन  
जब तक रहेगा, कहानी रहेगी।

आजकल कापा है और बहुत-से अन्तर्गत निकलते हैं। लग  
कर सभी को समझने के लिए कहानी चाहिए। इस तरह  
कहानियों का एक नया डंग भी चल पड़ा है। जैसे कपड़ों के नये  
तर्ज निकलते हैं, कहानियों के भी रंगरस नये निकलने लगे हैं।  
कानी कुछ के लिए कहानी ही साम्य हो गयी है। आपे से पहले  
पेसा नहीं था। तब कहानी हमेशा साधन थी। घट से घटकर  
वही घट सकते हैं कि यह मनोरंजन का साधन थी, घट से  
घटकर वही धर्म-तत्व का रूपक हो जाती थी। कहानी अपने  
आप में कला न थी मर्यादा नहीं थी और सुनी जाने  
के कारण उसमें एक प्रकार की कला का होना अनिवार्य  
था। आपे से पहले की कहानी में इसीसे एक चित्र  
मयता है। जब कहानी समझ सुननेवाले से परेष्ठ पढ़ने  
वाले के लिए लिखा जाने लगी, तब उसकी इस चित्रात्मकता में,  
लग्ना है, कमी भी आ चली। इसमें प्रसाद कम हुआ, उस  
बलु की कम मार्ग रह गई, जिसको अंधेजो में राह करते हैं  
और वह कुछ अभ्ययन-मनन की चीज बनने लगी। मैं नहीं  
मानता कि आज की अन्तर्गत कहानियों को कहानी का विक



सिंह रूप कहना ठीक होगा। उनमें मुझे टिप्पण तत्प कर्म वीरता है। मानव की स्वच्छ प्राकृतिकता की अगह आईकृत बनाव इसमें विरोध है।

कहानी मैंने लिखी तो है, लेकिन यह मुझे अधिष्ठाधिक अनुभव होता रहा है कि जिसमें कही जाने पर कुछ मिलकुल नहीं रह गया है, उसे कहानी भी नहीं कह सकते हैं। जो कही नहीं जा सकती वह आसपास के आदमी को प्रभावित कैसे कर सकती है? चापे से आज सुबिधा मिली है कि हम ऐसी मांग किस सकते हैं जिसे पास-पड़ोसी न समझें, इने गिने शिक्षित लोग ही समझें। प्रत्यक्ष होता उससे अप्रभावित रहते हैं और उसका प्रभाव परोक्ष पाठक के लिए ही घट जाता है। इस सुबिधा से कहानी जन-सामान्य के हित के लक्ष्य से दूर जा पड़ा है। जब वह एक व्यसन तक बन गई है। पश्चिम की कहानी की बारीकी का मैं फायला हूँ, लेकिन यह भी है कि उसमें एक-दुसरे का क्या है, वम कर्म।

भारत के जनपदों में अनेकानेक कहानियाँ अति-कर्म से बनी आई हैं। ये हमारी रीति-नीति, हमारे आदर्श और हमारे जीवन-चरान को अज्ञान रूप में अपने में धारण किये हुए हैं। इतिहास में विधि और व्यक्ति होते हैं। क्या मैं वैसा ऊपरी दुद्ध नहीं रहता। काल-भेद लुप्त हो जाता है और आदमी रासस और वैयता, पशु और पनस्पति संक्षेप में अस्तित्व प्रकृति का साथ एकताव हो जाता है। क्या का बाह्य केवल संस्कृति का अन्त र ग को बहन करने के लिए है। उसका अपने आपमें अस्तित्व नहीं। इससे यह पर्याय से भी परिपक्व नहीं / 'चौबोली' में राजा भोज के मित्र इसके समकक्ष नहीं है। एक है वैराग्य दूसरा है सुबारी तीसरा मदबाण और चौथा और। यानी बहौ राजा अपने राज्य से बिरा नहीं, शेष दुनिया के लिए यह सुला

है। पों क्यो, दुनिया क्य नहीं बह तो क्यानी का राजा है। ठस राजा क्ये किसी राष्ट्रसी के केशा में फँस रहनेवाली एक मफनी बनने में कठिनता नहीं होती। ऐसे ही हमके मित्र भी कुछ न कुछ बन जात हैं—अर्थात् इन कहानियों में मुम्मस उसम्मस के बीच क्ये रहना नहीं छोड़ी गइ है। मुना है मैगोलियन ने कहा था कि 'असम्मस' जैसा राष्ट्र असके कोप में नहीं है पर हमार क्यानीकार के आगे मैगोलियन की क्षमता लँगड़ी ही समझनी चाहिए। मैगोलियन के जिंग ओ डींग हो सफ्ती है, हमार क्यानीकार के जिंग तो यह नित्यप्रति का स्वप्न है। भाव क्य बुद्धि वाली पाठक कुछ भी कह, पर यह भूठ नहीं है कि हमार क्यानीकार ने मानव-अमानव चेतन-अचेतन और आक्षय पाताल के मेहों को एकमएक करने की बेहूदगी करके भी हमार आजीव जीवन के डीरे को यामे रक्ता। जिन कहानियों में पशु पक्षी मनुष्य की माया में बाव फरते हैं, उन कहानियों ने यमार्थ की मजमुष ही छित्री हानि की, यह तो हमें नहीं मात्र पर मानव-जाति क्य पयान्त प्रयोजन उनसे सधा, इसमें हमें सन्देह नहीं ✓

आदर्श हया में नहीं रह सक्या। रूपक पहिनकर राष्ट्र में यह रहता ही आया है। इसमें राष्ट्र पर सग्रा ही बोक पड गया है। विचार राष्ट्र से रखा पा जाता है, पर भाव मदा शक्यावीत है। राष्ट्र संकित से उसे बेता ही सक्या है, पर नहीं सक्या। इसी से शुद्ध प्राणबस्तु रूपक और आक्षयसिद्धाओं के रूप में उपलब्ध है। आनन्द और अनुमृति एक से दूसर तक, और आत्र से क्त तक यदि पहुँचाये जा सक्ये तो किम माध्यम से ? यह माध्यम है क्या। इसमें प्रतिपादन नहीं, मात्र उद्घाटन है। कर्क के बल से नहीं, रस के योग से क्या प्रभावक होती है। स्पष्ट

है कि वह रस अभ्यात्म की ऊँचाई से भोग की निचाई तक हर परावर्तन पर नाना रूप में क्या द्वारा विस्तार पाता रहा है। यह भी स्पष्ट है कि वह रस विवना भोग से अभ्यात्म की मोर उठता हुआ होगा, कहानी उतनी ही श्रेष्ठ होगी। पर कहानी समय की विशेषता जो भी हो वर्णन की विशेषता भी वहाँ बरफार है। कहानी का कहानीपन वर्णन की सच्चित्रता में है।

प्रस्तुत कहानियाँ धर्म-गाथा नहीं झोकझपाएँ हैं। लौकिक रीति-नीति के धारे में उनमें व्यंग्य है। अक्षर्य कहीं मनोरंजन ही अपना इष्ट पन गया बीलता है। मनोरंजन से ध्युत कहानी को बिफल ही समझिए, खास तौर से जब कि सुननेवाला सामने हो। सुननेवाले का मन उबटा कि कहानी ही व्यर्थ हो गई। इससे मन झगामे रचने की अतिरिक्त खेप्टा भी इन कहानियाँ में नजर आती है। पर वह सम्य हानी चाहिए।

हिन्दुस्तान के विविध प्रान्तों में लोक-सचित्रित ऐसी कथाओं का संग्रह हो तो भला हो। भाषा वही उनका बोझपास की रहे। नीचे सरल हिन्दी में लया हो। ऐसे हमें अपने आजीव इतिहास और अपने बतमान के भी अक्षरंग का प्रत्यक्ष झगा और भारत के अक्षर्य निमाण में सहायता मिलेगी।

पंचयती सुरेश्वर

( टीकागण )

०४ मून १९५१

जैनेन्द्रकुमार

## आमुख

संसार के प्रत्येक देश में इतिहास में कहानी की प्रयत्नता रही है। राजस्थानी साहित्य भी इस विषय में कोई अपवाद नहीं है। उन भाट घोर जाणों की कृपा से जो अपने शासकों की प्रशंसा बर्णन करने में सिद्धहस्त थे मात्र भी हम प्राचीन राजस्थानी कान्ठों और वाताओं का सम्यक्कारण कर सकते हैं। अन्य जातियों की तरह राजपूतों में भी कहानी कहने-सुनने की परंपरा प्राचीन काल से ही बनी जाती है।

इस सम्बन्ध में एक बात विशेषतः उल्लेखनीय है। साधारणतः लोगों का स्वभाव ही सुकटा है और उनका ऐसा विचार होता सामाजिक भी है कि राजस्थानी साहित्य में जो कहानियाँ उपलब्ध हैं उन सबमें राजपूतों की बीरता और उनके शौर्य की ही भजना है, उनमें जीवन की विविधता नहीं पाई जाती किन्तु वास्तव में वास्तविकता ऐसी नहीं है। यह तो निश्चयपूर्वक सत्य है कि अधिकांश राजस्थानी कहानियाँ राजपूत राजाओं की बीरता को लेकर लिखी गई हैं, किल्ले प्रेम, बैरिन्द, मालूम तथा नीति के अनेक प्रसंग पर स्वतन्त्र रूप से मिली हुई कहानियों का भी राजस्थानी साहित्य में अभाव नहीं है। स्वर्णय परिष्ठत सूर्यचरणकी पापीक राजपूती सम्बन्ध राजपूतों के अनुभव युद्ध-कर्मण्य, उनकी हठ-अभिज्ञा, आत्मगीर्ण की धरिष्ठ रक्षा प्राणुत्तमन के विरुद्ध, राज-बीरता और धारती पुरतीरता के अन्वय प्रशंसक के और उनका विश्वास या कि राजपूती सम्बन्ध और संस्कृति का विवरण करने वाली राजस्थानी कहानियों के प्रकथन से राजस्थानी और साथ ही साथ हिन्दी-साहित्य की भी श्रीवृद्धि होती और इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने प्रथम प्रयास में बीरता से सम्बन्ध रखने वाली सात ऐतिहासिक कहानियों का एकत्र 'राजस्थानी वाता' के नाम से किया था।

उनकी यह भी इच्छा थी कि इसके बाद बर्म नीति धारि इतर विषयों से सम्बन्ध रखने वाली कहानियों का संकलन भी बनावसर उपस्थित किया जाय । किन्तु विधि-विधान के विचार से अपनी परजान मन के मन में ही रखकर अपने काम को धबूरा छोड़कर वे सदा के लिए उच्च प्रदेश को बलें पये बहूँ से बीटकर कोई नहीं आया । स्वर्गीय पारीकजी की यह भी धम्यजन इच्छा थी कि राजस्थानी भाषा की कुछ कहानियाँ हिन्दी प्रबुवाह-सहित हिन्दी बान्ध के सम्मुख रखी जायँ । प्रस्तुत संकलन उसी दिशा में धर्म को धारो बहाने के लिए एक प्रयास है ।

इन कहानियों में धाबुनिक धरि के बमालोचक को कसा का बहूँ विवर्धित रूप देखने को न मिलेगा जो धानकम भी कहानियों में नामा जाता है । बरि राजस्थानी कहानियों में धाबुनिक कहानियों की बॉति बीकन के धानासन को स्पष्ट करने की उमसा नहीं है तो उनमें बाह्य हत्यों के चित्तस की कुशलता धौर कसता की लक्षण उद्धान धवस्य निसती है । धरि उनमें धाबुनिक पाठक बरिध-बिबल लखिला कपोप-कमन धौर कसा का उमास्वारन नहीं कर सचता तो कम से कम प्राचीनता-ब्रंजी पाठक के लिए उधमें मनोरंजन धौर रत की धर्मिध सामग्री धवराव है । एक धनमूर्खी है, दूसरी बहिर्मुखी । एक चित्तमय है, दूसरी हृदयमय । एक ध्यक्तिगत मनुभूति की लौबडा मिय हुए है, दूसरी में ध्यक्ति नधारर ।

राजस्थानी कहानियाँ किसी ध्यक्ति-विशेष की मिथी हुई नहीं है । ऐसा ध्याभूत पड़ता है जालो सम्पूर्ण सबाव ही बहानी बहने बाध उभा मुनने बाला हो गया है । इस प्रकार की लोकायाधों में धम्पूर्ण सपाव की अनोबुतियाँ एक ठाप प्रतिबिम्बित हुई है । इनमें कुनभूति के धाधार पर बमी घाठी हुई एक प्राचीन धरम्भत वा बमिक चिकनत निसता है जो राजस्थान की प्राचीन संरुति धौर सभ्यता का धरिधारक है । वे कहानियाँ धरना-धबाव है । इन कहानियों में मनोरंजन की लो कुर्ल धौर धाधुताक सामग्री है किन्तु बाध्पोधित रत की बमी है ।

किर भी ये लोकप्रियता बहुत लोकप्रिय है और इनकी लोकप्रियता का मुख्य कारण बनासुर बन ही है। लोकप्रियता और कला का परस्पर मेम भी नहीं है, क्योंकि कलात्मक इतिहास बहुत कम लोकप्रिय हुआ करती है।

इन राजस्थानी बातों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये लिखित कहानियाँ नहीं हैं किन्तु मौखिक परम्परा के माध्यम पर कही जाती हैं 'बतों' हैं। लिखित और कथित कहानी में बड़ा अंतर होता है। राजस्थानी बातों के पढ़ने पर यह अंतर स्पष्ट प्रतीत होता है। कथित कहानी में शब्दों पर इतना संयम नहीं रखा जा सकता। परन्तु जब दाढ़ी पर हाथ फेरकर कुछ कारण "बर मजबूतों बर कृपा" कहते हुए उत्सुक अपनी कहानी के प्रवाह को धामे बढ़ाता है उस समय योंता न जाने किस अनिर्बचनीय भावना में डूबा रहता है। राजस्थान की विद्वति अपने अज्ञ में लोटे हुए जब इन कहानियों के नन्हे-नन्हे वाक्य कुछ बचता की बिह्वला पर कुमकते हैं, उस समय उनकी बासक धी-धी सरसता और मोहोपन पर श्रोता का मुख्य होना स्वाभाविक ही है। इस प्रकार मनोरंजक बचता तथा मनोरंजक बात के प्रत्यक्ष सम्मिलन से भावना प्रियुक्ति हो जाता है।

लिखितता भी राजस्थानी कहानियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। एक ओर उनमें जहाँ अतिशय नाइटस वैसे कल्पनिक कहानियाँ हैं वहाँ दूसरी ओर इतिहासिक तथा वर्तमान वैसे उपरोक्तक कहानियों की भी कमी नहीं है। जहाँ इनमें हमें वैचित्र्यपूर्ण विषयमायी कहानियाँ मिलती हैं, वहाँ पारसी कहानियों के ढंग की कहानियों की भी कमी नहीं है। कहीं कहीं अतिशय रूप में राजस्थानी कहानियों में प्राकृतिक मनोवैज्ञानिक तथा अर्थ और धार्मिक-प्रधान कहानियों के बीज मिल सकते हैं। किन्तु अधिकतर कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें अमौखिक तत्व और कथानक के अन्तर्गत कथानक पाया जाता है। एक ओर वहाँ कुछ कहानियाँ इतनी लम्बी हैं कि चाप पर एक रात में समाप्त भी न हों तो दूसरी ओर कुछ कहानियाँ इतनी

छोटी है कि १०-१५ मिनट में ही भाषानी से समाप्त की जा सकती है । इन कहानियों में ह्रास म्यानक परतुना कीर धादि सभी रस मिलते हैं । इन कहानियों ने अबू धीर केतन कम धीर प्रथम, परतु, पक्षी धीर मनुष्य सभी को अपना विषय बनाया है ।

किन्तु रुचिबालु धीर हरय-कर्ण इन कहानियों में जिस परपूर्वता धीर विराधता के साथ किया गया है वह प्रशंसनीय है । उक्तियों पर उक्तियाँ उपमाओं पर उपमाओं की स्त्री धीर बात का रस बैठते हो जाता है । उदाहरण—

“सो पनां किये मांठरी सीसरी सोमा नारेखु परबाण  
 निजाइ बोजिरी जौखि चंद नासिछ जाणें वीपकरी लोइ । कंड  
 यखो केमल दरसावे जिक्को वीपतां पाणी निजर ध्यावे । आंगन्यां  
 मू गच्छ्यां सैं तुले नांदि । जांखे गुलाब रो फूज । हास मंद मानो  
 सैंसे कला बसोत पंद.....”

इन बातों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें धनेक पुनरु-वृत्तियाँ होने पर भी एकतात्मता का सूषापन थाप ही कितनी कहानी में सम्भव हो । ज्यों-ज्या कहानी का प्रवाह धीरे बढ़ता है रसो-रसों धोजा भी उत्पुष्ता भी बढ़ती जाती है । कविज कहानी में इस प्रकार के धी-मृत्स्य का समार होने पर कहानी का धाट मज्जा ही किरकिर हो जाता है । कहानी में यह धी-मृत्स्य-वृत्ति प्राधुनिक सनारोत्थनों के मज्जानुसार प्राप्यत प्रावश्यक है । यदि कहानी का धाट पहुँचे ही मानुष हो बाप या कहानी के रसास्वादन में व्याबाध उपस्थित हुए बिना नहीं रहेगा ।

प्रभाव की एकता कहानी-कला की सबसे बड़ी विशेषता है । यदि किसी कहानी में इस एकात्म्य का समार हो तो उसे कहानी की संज्ञा ही नहीं मिल सकेगी । राजस्थानी कहानियों में भी यह धार प्रायः सर्वत्र पाया जाता है । कभी-कभी ऐसा जान पड़ता है कि कला ने कहानी के मूल का बहुरूप कहानी बहुत प्रारम्भ प्रिया फिर उस मूल को इ इस प्रकार पुमाना है किन्तु धोजा की कभी-कभी यह भ्रम हो

समझा है कि बल्क अपने विषय से बाहर जा रहा है किन्तु जब कहानी समाप्त होने को होती है तो क्या-मूत्र इस प्रकार बुना दिया जाता है के धागा कहानी की एक-मूत्रता को देखकर एक पारदर्शक प्रसन्नता में मग्न हो जाता है और पूर्वापर बटुओं का सम्बन्ध वह अपनी भाँति समझ लेता है।

प्रस्तुत पुस्तक में राजस्थानी कथा-साहित्य की चार विभिन्न-विषयक प्रतिनिधि-कहानियों का सानुवाद संकलन है। इन कहानियों में सर्वप्रथम कहानी 'बौबोरी कम की दृष्टि से ही नहीं, अपितु कथा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है और उसी के मास पर पुस्तक का आखिरका रूप दिया गया है। इसके प्रतिरिक्त 'बौबोरी पुस्तक में चार कहानियाँ संग्रहित हैं तथा प्रत्येक कहानी में चार सम्बन्ध कहानियाँ हैं, इसलिये केवल बौबोरी ही बौबोरी नहीं है किन्तु चारों कहानियाँ बौबोरी हैं। शीर्षक को समझना इसलिए भी आवश्यक था कि वहाँ पाठक 'बौबोरी को घनीर बूखे वाले 'बौबोरी' न समझ बैठें।

साहित्य के इतिहास की दृष्टि से भी इन कहानियों का मूल्य कम नहीं है। प्राथमिक साहित्यिकों का ध्यान भी राजस्थान के कथा-साहित्य की ओर आकर्षित हुआ है। श्री ब्रजमोहन गुप्त एम. ए. तथा राजस्थानी एवं बँग साहित्य के सम्बन्ध-संशोधन में विशेष अभिरुचि रखने वाले श्री अणुबन्धु काष्ठ ने साहित्य के इस उपेक्षित मूल्य की पूर्ति करने पर जोर दिया है। हिन्दी में प्राचीन यक्ष-साहित्य का प्रायः प्रभाव है, किन्तु राजस्थानी का यक्ष-साहित्य बहुत समृद्ध है जिसके प्रभाव में घाने पर हिन्दी यक्ष-साहित्य की विकास-परम्परा का बहुत कुछ निरिक्त अनु-मान लगाया जा सकता है। बाँते और क्वाँते के रूप में राजस्थानी का विद्यान यक्ष-काव्य अब भी सुर्धित है। हजामी नरोत्तमराजजी के राज्यों में 'इन छहवाँ छप्पड़ दिया बाप ठो न जाने बिठने क्यामरिखण्ड' या 'कह्यपरजनीकरित तैयार हो जाँव'। यह बहुमूल्य मौखिक साहित्य को पुनि-परम्परा के माध्यम से प्रायः-चारों की कृपा से अब तक जीवित है,



वहीं काज के तर्ज में बिबीन न हो जाय इसलिये इसके प्रकथन की नितांत आवश्यकता प्रतीय होती है।

इसके प्रतिरिक्त इस प्रकार के साहित्य की उपयोगिता एक दूसरी दृष्टि से भी है। इन बातों और कथनों में हमें राजस्थानी जीवन का प्रतिबिम्ब भी देखने की मिलता है। यदि केवल 'बीबीन' की चार कथाओं को न ही दृष्टिगत करें तो उसमें भी हमें कृष्णभक्त, शर्मिष्ठा-बाहु, इस पालन शक्तिशाली अर्धम-बैबल, भूत-बीताल-मंत्रादि मनोचिन्तक बातों में विश्वास सत्यवादिता और शर्मिष्ठा के अनेक उदाहरण प्रकाश हो उपलब्ध हो सकते हैं; किन्तु इस सम्बन्ध में हमें यह न भूलना चाहिए कि हमें से अतिव्यक्त कथाओं का केवल राजस्थानी जीवन रहा है और इसके बल्य उनके साहित्य चारण और बाट है। फिर भी अन्वेषक को उनमें उत्कृष्टतम सम्पदा और संस्कृति के अनुसन्धान के लिए अथवा मसाला मिल सकता है।

बीबुन विषोबी हिन्दी ने 'बीबीन' पुस्तक होने कुछ आवश्यक गुणकारों की भी आवश्यकता इनके अनुसंधान है। हिन्दी-साहित्य के प्रतिष्ठित मन्त्र-मिच्छक एवं उन्मत्तकार भी बीबीन ने इन पुस्तक की भूमिका निरवहार हमें उपलब्ध किया है, जिसके लिए उन्हें अनेक सम्पदा लेकर भी हम अपनी बतवता को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं कर सकते।

कन्हैयालाल सहाज  
पठपथ गीह 'बिराज'

चौबोली



## ॥ अथ राणी चौबोली री बात ॥

उजेणी नगरी राजा भोज राग्य करे । नब धारी नगरी ।  
 चौबोली चौबोली, छतीस पोली । ब्यार बरस्य रहे । छतीस  
 परन जाति लोक बसे । फोडीपत्र ब्यापारी रहे । पट बरसणी  
 रहे । तिख नगरी रे विप्रे राजा भोज राग्य करे । छतीस राज  
 कुली राजा री सेवा करे । विप्रे राजा रे ब्यारि मित्र । आगीयो  
 बेवाज । कबडिबी जुधारी । माणिकडे मद्रबाण । सापरौ चोर ।  
 सु राजा भोज रे धरे आया । यणा कायदा किया । अनेक भाति री  
 भक्ति हुई । धर्णा सनमान वे नै कछी-पनरहबी बिद्या मोमु  
 जिय भात आवै तिम छरी । ताहरां ब्यारां हो कछी-जु बापही  
 देवी रे जाइ ने पूजा आहवान करि देवी आउहिस्थी । पिय

उजेन नगरी में राजा भोज राग्य करता था । वह नी बरबाओं  
 वाली नगरी थी । चौबोली चौबोली (चौर) छतीस पोली थीं । उसमें  
 चारों बर्ग रहते थे । सब प्रकार के छतीसों जाति के लोग (बर्ग)  
 रहते थे । फोडीपत्र ब्यापारी रहते थे । पटबरसणी (पंडित) रहते थे ।  
 उस नगर में राजा भोज राग्य करता था । छतीसों राजबटने के लोग  
 राजा की सेवा करते थे । उस राजा के चार मित्र थे । माणिक्या बेवाज ।  
 कबडिया जुधारी । माणिकडे मद्रबाण । सापरौ चोर । वे राजा माज  
 के घर घाते । राजा ने उनसे बहुत इज्जत की । अनेक प्रकार से उनकी  
 पावभगत हुई । बहुत सम्मान देकर राजा ने कहा कि पन्द्रहवीं बिद्या  
 मुझे किब भाति घाते बैसा करो । हम पर चारों ने ही कहा कि बापही  
 देवी के यहाँ जाकर पूजा-आवाहन करके हम देवी की पाठबना

हेक थोक माहाराज करखी छे । पण राणीमी अर थां गाड़ी सुख छे । कोई बात पूछे तो नटो मठां । अर नटो तो कहो मठां । अरु बात नटि नै कहीयो तो थारो मरण हुसी ।

राजा कह्यो—भे कयां ही मु कहिय्यां । एक दिन राजा आयेगतो हुयो और राणी की मांक्यां उड़ावता हुता । गल्ल गरी रो भांगली थी, तितरै एक कीड़ी बायल ले नै हाली हुती तितरै थीमी आइ सोसण लु मू थी । बाहरां कीड़ी बोली—भो आगा बसू सोसे । भै बावसू राजा भोजरी वाली मादे घणाही पड़िया छे । तू और ले आइ । बाहरां कीड़ी कही—हारे पाटुयां आया छे ले जापण दे मोमु । इसी बात सांभलि नै राजा भोज इसीयां । राजा जीवभाया सरन जाणती । बाहरां राणी पूछीयो—तु माहाराज कुण बासवे इसीया । राजा नटीयो । राणीमी

करे । परन्तु माहाराज । एक बात तुमको करनी है । बुक्ति रानीमी और तुम में प्रतिष्ठ प्रेम है, इसलिये यदि यह कोई बात पूछे तो इन्कार मत करना और यदि इन्कार कर सो तो बहना मत । और यदि बात को इन्कार करते बह दोने तो तुम्हारा बरण होना ।

राजा ने कहा कि हम क्यों रहेंगे । एक दिन राजा भोजन कर रहा था और रानीमी मन्त्रियां उड़ रही थीं । परना भोजन था । वहाँ एक चीटी बावल सिकर जाती । उसी समय कुछी चीटी बाहर छीनने के लिए निकल गई । उस चीटी ने कहा—मेरे प्राये से क्यों छीनती है ? ये बावल राजा भोज की पानी में बहुत पड़े है । तू और ले जा । इन पर चीटी ने कहा—हमारे मैदुपल प्राये है, मुझे से जाने दे । ऐसी बात सुनकर राजा भोज हुआ । राजा सब चीजों की भाव्य जानता था । उस रानी ने गुहा कि माहाराज, प्राण फिट करण

बहुत गाढ़ करि पृथक् लागी । तब महाराज, मोनु इसीया  
 रो विरलन कहीये । राजा मन में बिचारीयो-नदीयो तो कह्य रो  
 नहीं । कहीये तो मरण हुये । राणी बांठण फरि नहीं । ताहरां  
 राजा कर्मा-बल गंगा की रे तट कहीयसी । राजा पानीयो ।

गंगाजी रे <sup>सम्भव</sup> कट्टे सिहकर सहर हुवा । बाहिर जाइ उतरीया  
 उवा हू असेस पांवे पके नदी रे कट्टे जंगल माहे डेरा हूया ।  
 नदी रो <sup>गंगा</sup> इवा देस भर जंगल पचारीयो । एकत पचारीया ।  
 भागे पूयो है । पूरे माहे कचरु रो बेल बहुत फली है । कूवे  
 कट्टे पवइ चरे है । एक <sup>सम्भव</sup> छाला पापरे तु कहे है-पूरे माहि  
 कचर ले रे जो तोनु बर । ताहरां बाकरो बोनीयो-महारी  
 पकत राजा मोय मिली नहीं है । बाहर रे कहीये मरण तु

हूये ? राजा ने इन्कार किया । रानी बहुत पाछ करके पूछते नदी  
 कि महाराज मुझे हँसने का कृतान्त कहो । राजा ने मन में बिचार  
 किया—इन्कार कर दया तो सब में कहने का नहीं । यदि कह दिया  
 तो मरण होगा । रानी बहुत नहीं कली । तब राजा ने कहा कि गंगाजी  
 के तट पर बात कहूया । राजा बचा ।

दंगयो के समीन सिहकर सहर या—उसके बाहर पाकर राजा  
 जणय । कट्टे के दाँव कोय की हूरी पर एक नदी के समीन जंगल में क्या जहाँ  
 एकत या । भागे एक बुया या । बुए के कन्दर ककड़ी की बेल के बहुत मे  
 कउ तरे हुर मे । बुए के पत्र मेह-बर्जियों का सुगठ चर छा या ।  
 एक बट्टी बकरे को कह रही थी—बुए बाबा बाबर यदि तैकर दे तो  
 मैं तुम्हें खारी कर । इस पर बकरे ने कहा—मेरी बुद्धि राजा मोय बीची

आइ है । सिर साबत ली ज्याह पणों । तिअ पात सांमझि ने  
 राजा बिचारीयो खु हु बौतह बिद्या री निधान सु म्हारी मठि  
 वाम्हे कही । राजा पाखी डेरे आयो । रंछी आय हयूर बैठी  
 छै । राखी कहे—उपसँ गंगा री बात कइ करखी छै नही । राबसै  
 विमाह करखी छै । राजा कहे—रखीखी, म्हारे विमाह की करखी  
 छै नही । महाराज विमाह अबस्य करिस्वी । बीमाह करी तो बीबोली  
 परखीत्रिस्वी । भ्यु हूँ ई समुण सोक आई । राजा जालीयो, रंछी  
 म्हारे क्यन नही । ताहरां मोहो मंगाइ सोसदान मुहरां मरि  
 सुवे कटक एकली यदि छकीयी । बाबतां आवतां वेनै तो  
 असू एक पादाइ माहे रामस रामसखी रे गोहे माधी इ  
 सूतो छै ।

गई है जो ली के कहन पर मरने जा रहा है । “सिर साबत ली ज्याह पणे ।”  
 यह बात सुनकर राजा ने विचार किया कि मैं बौतह बिद्या-निधान  
 और मेरी बुद्धि का एक बकरे ने धेर मरट कर दिया (रोन रोन  
 ही) । राजा लोट कर डेरे में आया । रंछी आकर सामने बैठी ।  
 रंछी ने कहा कि आपकी संपा की तीर्थ-वाधा तो कुछ करणी है नहीं—  
 आप तो (दुमय) विमाह करेंगे । राजा ने कहा—रखीखी मुझे विमाह तो  
 कोई करता है नहीं । रंछी—महाराज । विमाह परतब करेंगे । विमाह  
 करे तो बीबोली में करिये कि जिये में भी समझूँ कि लीन तो  
 पाई । राजा ने समझा—रंछी मेरे कहने में गयी । तब मोहा मंवा  
 कर तोमराज मोहुरे से भर भर कटक को बोवा हुआ थोड़कर राजा मकेमा  
 निघन बना । जाते-जाते क्या कैगना है कि पहाड़ में एक राजा रंछनी  
 के दुन्दे पर बानर रये हुए सोया हुआ है ।

सेखरी कगाही उकलें छै । अगर रा हाकड देठे घुल्ले  
 छै । राजा अगर री बास सु मन में बिचारीयो—जे एय कोई  
 सुबेध राजा छै । के पवनबंध योगी छै । तेरे अगर बल्ले <sup>पञ्चम</sup>  
 छै । राजा भोज अगर री बास सु ब्य आयी । राखसणी राजा  
 सु देखि ने साही री पञ्जी फेरियो । समस्या कीयो तू  
 एय ब्यु आयी । सोनु राखस खासी । राखसणी सोवनमाखी  
 राजा नुं करि ने जग माहे राखीयो । राजा ब्यारे ही घरम-  
 माई समरिया । आगीयो । करबीयो । खाफ्टी । माणिकदे ।  
 घरम-माई ब्यारे ही ब्यो हुयी । राजा सोनु फाई दोहरी बरीया  
 हुबै तेय म्हानुं समरे । आइ हाजिर हुस्मां । राजा राखसणी री  
 बटा माहे विमासे छै । म्हारी अफज पूक जु गंगात्री रे कठ <sup>पञ्चम</sup>

तेज का कड़ा उभन रहा है । अगर की लकड़ियां नीचे बल  
 रही है । राजा ने अगर की मुग्धि से मन में बिचार किया  
 कि यहाँ कोई शक्तिशाली राजा है अथवा शास्यायामी योगी है जिससे  
 धर बल रहा है । राजा भोज अगर की मुग्धि से बहाँ घाया ।  
 राखनी ने राजा को देखकर साड़ी का माचन (मुह पर) बाज सिया  
 धीर प्रश्न किया कि तू यहाँ क्यों आया ? तुझे राखस खा जायगा ।  
 राखनी ने राजा को स्वर्णमन्त्री बना कर बटा के धन्दर रख लिया । धीर  
 राजा ने अपने बापें धर्म-शास्त्रों—माणिया, करबिया बापए धीर  
 माणिकदे को स्मरण किया । बापें ही धर्म-शास्त्रों ने कहा पा कि  
 राजा जब भी तुम्हारे सामने प्राणितिकाम उपस्थित हो, तभी हमें  
 स्मरण कर सेना—घाकर हाजिर हो जायेंगे । राजा राखनी की बटा  
 में बिचार-विमर्श कर रहा है—जैसे हमने कितनी घूम हुई कि मयात्री



मरख हुबे इठ ली मुगति जाबत । तबी न गयो । द्विवे म्हाउ  
घरम-भाई हुवा छोइ तु समरीस खु भाखी हुबो नीसरीस ।  
सु उबे च्चारे ही वीर च्चई पाठिसाह री छोरी गया इवा ।

सु पणो ही मफ्त न्याया इवा सु पाठही देवी री पूजा करे  
छे । ताहरां उबां जांखीयी—राजा सांकरे पड़ीयी । म्हानुं समरे  
छे । ताहरां छोडे पढ़ि चर सडीया । रामस हुवी तय आया  
छे । ताहरां आपन मांहे विचार मांडीयी—आपां कासू करिस्यां ।  
ताहरां सापरी घोलीयी । मो कग्हे उपाध मन्त्री छे । चरयारी  
फोपरी में काजल पाड़ीयी छे । विफो काजल इल में पाठिस्यां ।  
नास्वी । पाठसाही मूरछा गति हुबो । ताहरां राससणी रे माथे  
सोबनमाखी रे रूप राजा हुवी सु कादि उरही छीयी । ताहरां

के पाठ भरल होउ ली मुक्ति मिमती । कहां में नहीं गया ।  
गब को मेरे बने-भाई धे, उनको स्मरणे कर्कबा बिछते मन्त्री की  
पोनि मे हुकाए फल । के चारों ही वीर किसी बाणसाह के पहां  
छोटी करते बने थे ।

तो बहुत माल भावे थे । इराविय बाणसाही देवी की पूजा कर रहे  
थे । उब तपव उनको जान हुमा कि राजा पर विपत्ति पड़ी है वीर  
हुने स्मरण कर रहा है । तब छोड़े पर बड़ कर बल पड़े । कहां उरम  
बा कहां भावे । तब उन्होंने पास में विचार किया कि हुने क्या  
करना चाहिए । तब चारे वे कहा—मेरे पाठ बाणसाह उरम है । बैसा  
की कजमराणी (मुमाराणी) में कजम उगाइ हुमा (वेवार चिया हुमा) है ।  
बहु कजम इतनी (पानी में) डालिये । कजम खाना । शकते ही चल्नी  
मूछि हो गई । तब चल्नी के मस्तक पर बो स्तण—मन्त्री के रूप में राजा  
वा उबको निराज कर आपन से गये । तब उन शोरी ने राजा से

राजा नु पुछीयो—सु यां कस्तु विचार करियो । म्हांती मानु  
 च्छी हुती । ताहरां राजा कहे—भा बात परमेस्वर री चाही  
 दुई । रांणी म्हानु बोलीया—जु बीबोली परणीया सु परणी  
 चाहीये । ताहरां छबे कहे राजा बीबोली री बात माहा कठिन  
 छै । पिण्य भारी माग वञ्ची छै, सु उपाय सक्ती करियां ।  
 ताहरां भेसा दुइ नै पैडे चालीया छै । भरती लोपि भर बीबोली  
 रै सहर पवासीया छै ।

मास्तीरै घरे सन्नरी जाइया बागीचा माहे डेरी लीयो ।  
 मास्तीरै नु मोहरी बोधी । वीमण्य करायी । डेरै सरं जावतो  
 कीयो । तद् मास्तीरै नु पुछे छै—बीबोली नु बोखानण्य चाबे  
छे सु किस्ती भांत बोखाने छै । जे राति बीबोली न बोले ती

पूछ कि यह तुम्हें क्या सूझ ? हमने तो तुम्हें पहले ही कहा था ।  
 तब राजा ने कहा—यह बात बगवान् की मर्जी से हुई है । राणी ने  
 मुझसे कहा कि बीबोली से विवाह करो । इसलिये उससे विवाह  
 करना चाहिए । तब उन्होंने कहा कि राजा । बीबोली की बात बड़ी  
 कठिन है लेकिन तुम्हारा नाम बड़ा है, इसलिये भरसक उपाय करोगे ।  
 तब वे दण्डे होकर राते चम पड़े । राता पार करके बीबोली के  
 शहर में पाये ।

राणी के घर जाकर बगीचे में खण्डी-सी अण्डा डेरा बना । मास्तिर  
 को एक मोहर दी और कहने लगे बीबोली की व्यवस्था कर ही उपा  
 डेरे का पूरा जवाबदा कर दिया । तब ( राजा ने ) मास्तिर से पूछा कि  
 वो बीबोली से मुनवाने के लिए ( मुझ से शपथ निकलवाने के लिए )  
 पाते हैं, वे किस प्रकार मुनवाते हैं ? ( उसने उत्तर दिया )—यदि रात में

मरण हुवे इंत ही सुगति आर्षत । तबी न गयी । द्विद्वै म्हात्त  
धरम-माई हुता हाई तु समरीस खु मास्ती हुवी नीसरीस ।  
सु सवे च्यारे ही बीर काई पातिसाह री बोरी गया इता ।

✓ सु घणौ ही माळ स्याया इता सु धाटाही देवी री पूजा करे  
छे । ताहरां सवां बांणीयो—राजा सांठवे पड़ीयो । म्हात्तु समरे  
छे । ताहरां घोडे पढ़ि घर खडीया । रत्तस हुवी तेव आया  
छे । ताहरां आपन माई विचार मांडीयो—आपां कासू करिस्थां ।  
ताहरां क्षापरो बोडीयो । मो कन्है उपाव मली छे । बेरयारी  
फोपरी में फज्जल पाड़ीयो छे । तिको अजल इख में पातिस्थां ।  
नास्वी । पातवाही मूरवा गति हवी । ताहरां रत्तसखी रे मावे  
सोबनमास्ती रे रूप राजा हुती सु काढ़ि छरही लीयो । ताहरां

---

के पास मरण होना वो मुक्ति मियती । वहाँ में नहीं गया ।  
तब जो मेरे बर्म-माई से, उनको स्मरणे बक ना बिसेसे बकती नी  
बोनि से छुआव पाऊ । वे चारों ही बीर किनी बारणाह के पहा  
बोटी करी बसे से ।

तो बहुत धान लामे से । इसलिये बारणी देवी की पूजा कर रहे  
से । उध समय उनको आज हुआ कि राजा पर विपति पड़ी है और  
हमें स्मरण कर रहा है । तब बाड़े पर बज कर बत बड़े । जहाँ उलन  
या वहाँ भावे । तब उन्होंने धान्य में निहार किया कि हमें क्या  
करना चाहिए । तब सागरे ने कहा—मेरे पास बण्ड उपाव है । बैया  
की कज्जलखनी (दुर्गासानी) में कज्जल उपाडा हुआ (विचार किया हुआ) है ।  
वह कज्जल खनी (घोड़ों में) बाँधने । कज्जल बाता । आपने ही उलनी  
मुँह हो गई । तब उलनी के मलय पर जो स्वर्ण-मन्ती के रूप में राजा  
या उसको निदान कर धन्य हो गये । तब उन लोगों में राजा से

राजा नु पुछीयो—जु वां कात् विचार कीयो । म्हांती धानु  
 क्यो हुती । ताहरां राजा कहे—भा वात् परमेश्वर री बाही  
 दुई । रांखी म्हांनु बोझीया—जु बीबोली परणीया सु परणी  
 पाहोअै । ताहरां अये कहे राजा बीबोली री वात् माहा कठिन  
 छै । पिण्ण धारो माग बडो छै, सु उपाय ससरो करिस्था ।  
 ताहरां भेला हुइ नै पैडे बालीया छै । भरती लोपि भर बीबोली  
 रे सहर पधारीया छै ।

माझीरें परे ससरो जाइगा बागीचा माहे डेरी लीयो ।  
 माळण नु मोहरी बीधी । धीमण करयो । डेरें अरें जाबतो  
 धीयो । तत्र माळण नु पुछे छै—बीबोली नु बोझावण धाने  
छै मु किन्ती मांव बोझावै छै । ने राति बीबोली न बोली छी

पूछा कि यह तुम्हें क्या सूझ ? हमने तो तुम्हें पहले ही कहा था ।  
 तब राजा ने कहा—यह बात जपवाइ की मर्जी से हुई है । रानी ने  
 मुझ्से कहा कि बीबोली त विवाह करो । इसलिए उससे विवाह  
 करना चाहिए । तब उन्होंने कहा कि राजा ! बीबोली की बात बड़ी  
 कठिन है लेकिन तुम्हारा ध्यान बधा है, इसलिए यत्नक उपाय करेंगे ।  
 तब वे दण्डुं होकर राते चल पड़े । राता बार करके बीबोली के  
 दर में धाए ।

रानी के घर जाकर बगीचे में धापी-बी बागह डेरा बना । माझिन  
 को एक मोहर री धोर उचने उचने मोहन की व्यवस्था कर री तथा  
 डेरे का पूरा आबता कर दिया । तब ( राजा ने ) माझिन से पूछा कि  
 जो बीबोली से बुझाने के लिए ( मुख से उचने निकलवाने के लिए )  
 धाते हैं, वे किस प्रकार बुझाते हैं ? ( उसने उत्तर दिया )—यदि रात में

परमात्त हुये <sup>नीकर</sup> आर्गा पांखी बोवावे छै । तै सारु घेइ बिचारि आइ  
 येसिया । तै ऊपर राखा भोज । आगीयो वेताल । कबडीयो  
 चुभारी । स्नापरो चोर । माखिकवे मदपाण पांच ही वैसि बिचार  
 कीयो—आपां कित्सां भाति बोलाबित्सां । सु फूड सुहाइसी नही ।  
 ताहरां बोझसी—अ पांचे ही टाकुर अमस पाखी सरीस्य हुइ नै  
 वरपार मुं हासीया । ताहरां प्यारे ही पोसीया—तू तौ राखा काइसी  
 तारे वैसीस ताहरां म्हारो चोर कोई चालिसी नही ।  
 पिछ म्हे छां कीर काया भांज करि बिडू ठिकर्यो आइ बैसित्सां  
 ताहरां ये वाति कहि नै म्हालु पुझीया म्हे फूड बोसित्सां ताहरां  
 रंणी मोलसी । ताहरां स्नापरो चोर हार में आइ बैठो । कबडीयो  
 चुभारी बोझीये नै आइ बैठो ।

बोबोली न बोली तौ प्रभाव होले पर बहु नीकर की तरह पानी भर  
 बाठी है । चाटी बाउ क्य बाह निकर ने पाकर बैठ गये । इस पर राजा  
 भोज, धामिया बैताल कबडिया चुभारी, घालच चोर, माखिकवे मर  
 बाण—हम पांचों के बैठ कर बिचार किया कि हमें कित्त प्रकार  
 बुझराना चाहिये । फूड पण्ठी मनेवी नहीं । घसवे ( फूड क्य  
 घाघव लेने से ) बोझीयो । ये पांचों ही चण्डार घटीम-अन  
 भादि से निवृत्त होकर बरवार की तरह बसे । तब पाचों के कट्टा कि  
 घसा तुम तौ आकर [ जीबीली के ] के पाह बैठ चापीये घोर छि  
 हमाच कोई बय बनेवा नहीं परन्तु हम है कीर । चाटी को मारम करके  
 चार स्थानों पर जा बैठे । तब तुम बाउ बहकर हमसे पूछना—हम  
 फूड बालेये तब रानी बोझीयो । तब आपच चोर [ रानी के ] हार  
 में जा बैज । कबडिया चुभारी घाट पर जा बैठे ।

माणिक्ये मदबाण मार्ये ऊपर जाइ बैठे । आगीयो बैताल  
 दीये जाइ बैठे । ए क्यारे बीर माली रो रूप करि बिहु ठिक्करी  
 जाइ बैठे । राजा मोज जाइ दरबार ऊमी रखी । ताहरां आगे  
 दरबार माहे ठाकुर उमराव ऊमा हुवा सु राजा नु पूछय सागा-  
 राजा, बीबोनी नु बोलाबिस्यो ? राजा बोस्यो-मनका छे, बोला  
 बिस्यो । ताहरां उने ठाकुर योजीया भगला राजा पारह भरस हुवा  
 पाणी भरसां । छे रावि न बोली तो परमावि येइ उवां भेला  
 हुस्यो । तद् राजा बोलीयो-म्हाई नु उवां पाणी भरयो जिकीयो  
 छे तो म्हेई उवां भेला हुस्यो । पिण हकरसा इयांनु बोलाबिस्यो ।  
 ताहरां माहि गिलमां विद्यायां । ऊपर जाइय विद्यायां । ताहरां  
 राजा नु जे गया । आगी प्रीछ तांणी हुती नै बाहिर राजा नु

माणिक्ये मरबाण मार्ये ( बर्तन-बिरोप ) पर जा बैठे । माणिया  
 बैताल दीपक पर जा बैठे । ये आगे बीर माली का रूप बनकर आगे  
 स्वामी पर जा बैठे । राजा मोज दरबार में जाकर बैस हुवा । तब दरबार  
 के अन्दर बी ठाकुर उमराव आये बड़े से, वे राजा से पूछने लगे-क्यों  
 राजा बीबोनी को बुलवायोगे ? राजा ने कहा-इच्छा तो है, बुलवाऊंगा ।  
 तब वे ठाकुर कहने लगे कि अपने राजाओं को ही पानी भरते बाह्य  
 बर्तन हो गए । जो राजा को बीबोनी न बोली तो प्रजात होने ही घुम भी  
 उनमें शामिल हो आयेगे । तब राजा ने कहा-मेरे माम् में भी यदि  
 उनी तरह पानी भरना लिखा है तो मैं भी उनमें शामिल हो जाऊंगा ।  
 परन्तु एक बार इसे बुलवाऊना अवश्य । तब अन्दर आसीन विद्वाने मये ।  
 उन पर चर्च बिछाई गई । वे राजा को बहाने मये । आगे पर्यट तना  
 हुवा था । तबसे बाहर राजा को बिजाया । अन्तर उनी बीबोनी बैने

बेसारियी । भीतर राणी बीबोली बैठी छै । बीबो लोक रासी सवास सरप बहुबाया । राजा भरु राणी बीच मीठु बीया महसां मदि बैठ छै । प्यारे बीर बिहु ठिअणे मासी रूप बैठ छै ।

[इम करता राजा भोज बोलीयो जु महसरी घखीयाली बोखे नही प्यार पहर राति किसी भांति चितीठ हुसी । ते ऊपर कप बीयो जुवासी बोलीये कपर मासी रूप बैठी हुयो सु बोलीयो—हे राजा, सुणि । पहिली तो पाहाड में अठ हुयो सु सुअई ने सुयार बोलीयो बडीयो । आठे ठोडे बांधीयो । नवार सु पणीयो कपरि साहा तीन मणरी बेडी आवासी उपर्या करे । बाव ती कहि सगु नही । ज हुँ पाव कडे तो हुंकारो खु ] राजा कहे साबास रे बोलीया साबास । हुंकारे देने तो वो सारीसो कासू छै ।

बी । अग्य सब लोग बसी, काई पारि बापिस घा बए । राजा भीर राणी बीच में परस चिरे हुए महल के घखर बीठे से । बाट बीर बाटो स्थानों पर माली के रूप में बीठे ।

इस प्रकार बीठे हुए राजा भोज ने कहा कि महल की मालकिन बोलती नहीं—उठ के चार पहर किन्न तखु कट्ये ? इस वर कपड़िये पुषाटी ने जो कि मंच वर मणरी के रूप में बैठ बा कहा—हे राजा सुनो—पहले तो पहाड पर के जो बाव था, उसको सुतकर बड़ई ने नव बनाया और उसको टोक-छाक कर टोक दिया फिर निबाड छे बुना । उस मंच पर साई तीन मन मजन वाली बीबोली उपर्या कर रही है । इअतिर बाव तो मैं बहु नहीं सफ्या जो तुम बाव बहो तो मैं हुंवार देना छु । राजा ने कहा—साबास रे मंच साबास । बरि हुंकार देना छे तो सुक-जीवा भीर भीर ? तब राजा भोज बाव बहना है-एफ

ताहरा राजा भोज वात कहे छै । एक हुती साधण रो बेटी । एक हुती सिन्नाबटे रो बेटी । एक हुतो सूजी रो बेटी । एक हुतो मुनार रो बेटी । पाँ चारे ही मित्राचारी यी सु भेला हुइ बेसावर नु हासीया । खावता आवता एके उद्यान मन बिपे आधुण हुबी । ताहरा चारे बोलीया-रोही रो समीयी छै । पहरि पूखी सावधेठ रहयो । पहले पहर सिन्नाबटे रो बेटी बेठी ताहरा सिन्नाबटे मन मै बिचारीयो । निरुमां नु राति कटे नहीं कोई आवच कीजी । तब एक पत्थर पीठी ।

[ताहरा पूतली निरुती । तिवरे पहर बितीस हुबी । ताहरा सूजी नु अगायी । ताहरा सूजी पूतली देखि बिचारीयो-साथी यही । ताहरा सूजी कमड़ा सीबि पहिराया । इतरे दोइ पहर बितीस हुवा । ताहरा सोनी नु अगाबी । सोनी पूतली देखि अर गइयां

या ब्राह्मण का लड़का । एक का कारीगर का लड़का । एक का सुबी का लड़का । एक का मुनार का लड़का । इन चारों में मित्राचार या इस्लाम के इच्छु होकर परदेस को गये । एष बनोद्यान में पहुँचते पहुँचते मूर्खान्त हुआ । तब चारों कहे गये—अंगल का नाम है, पहरे बहुरे से सावधान रहना चाहिए । पहले पहर कारीगर का लड़का बीछ तब कारीगर ने मन में बिचार किया । निरुमे बीठे छठ कटेवी नहीं कोई समय बिगाने का उद्यम करें । तब छठे एक कपर रिछाई दिया ।

उस पत्थर की उठने पुगली बनाई । इतन में एक पहर बीठ गया तब बर्जी को बयाया । तब बर्जी ने पुगली को देखकर सोचा कि सावी । गइ हो सी । इत पर बर्जी ने कपड़े लीकर पहना दिये । इतने में पहर बीठ गये । तब मुनार को बयाया । मुनार ने पुगली को देख घोर पहन बइ कर पहना दिये ।



घड़ि पहिराया । तितरें सीखी पैहर विसीत हुबो । ताहरं ब्राह्मण  
 नुं अगायो । ब्राह्मण पुतली बूमि नै मन में विचारीयो । आगसे  
 सायीये पुतली तैवार कीवी । हिने भी परमेरवर री मजन बरु  
 ब्युं जीव पड़े । ताहरं पुतली फिरण लागी । तब ठवे ज्यारे ही  
 बिरबीया । ऊ कहे ग्दारी बाहर, ऊ कहे ग्दारी बाहर । बोलीया,  
 उभा केरी बाहर । ताहरं बोलियो बोलियो—कपड़ा पहिराया  
 ठे री बाहर । ताहरं रांछी बीबोली बोलीये नुं काठ बाही ।  
 बोलियो बुर बुर हनी ॥ ताहरं कहे—क्युं रे कुकठ कपूत । तब  
 कपड़ा बेटी नुं बाप पहिराये । गहणा पहिराया तैरी बाहर । ताहरं  
 बडा नीसाण पबीया । तां उपरि राजा भोज एक बंकी बीयो ।  
 ताहरं बीबोली रा मावीस साहर लोक सय सुसी हुआ ।

इतने में तीसरा पहर बीत गया । तब ब्राह्मण को बगया । ब्राह्मण ने  
 पुतली को बैसकर मन में सोचा कि अपने सापियों ने पुतली को तैवार  
 कर दिया । अब मैं भी परमेस्वर का मजन करूँगा जिससे यह तजीव हो  
 जाय । तब पुतली चलने-फिरने लगी । तब के चारों घाणस में घमड़ने  
 लगे । वह बहने लाग—मेरी स्त्री, वह बहने लया—मेरी स्त्री । ( राजा ने  
 पूछा ) हे मच ! बनायो कि वह स्त्री जिसपरि है ? तब मच ने बतार दिया  
 कि जिसने कपड़े पहनाये उसपरि स्त्री है । इन पर रानी बीबोली ने मच  
 के नाम मारी, जिससे मच बुर-बुर हो गया । घोर वह बहने लगी—क्यों  
 रे कुकठ कपूत । कपड़े तो बेटी को बाप पहनाया है, जिसने पहने पहनाये  
 समती स्त्री है । वहाँ पर बड़ा-ता लमाड़ा पड़ा हुआ था । उस पर राजा  
 भोज ने एक बंकी की चोट मारी । तब बीबोली के माग-रिजा घोर  
 स्वर के सब घारमी गुरा हुए ।

घाव कोई राजा बेटी को सु डेक घरीयां बोलाई । इतरे एक  
 पहर बितीव हुनी । दिने बीजे पैहर रे अमलु माइ राजा मोख जुर  
 बोलीयो—वीन पहर राव रहे छै महसरी बलीयाणी बोले नही, रावि  
 किसी भाति बितीव हुसी ताहरां माखिकदे मन्बाण म्यरी में  
 बैठे हवो सु बोलीयो—राजा मुणी, हू म्यरी पही अर पाणी  
 मुं मरी । हू किसी भाति बोल्द । वाव कहीस छौं हुंभरो दे छौं तो  
 सारोमी बीजा क्यु नही । ताहरां म्यरी हुंभरो दे छै । राजा भाव  
 कहे छै । एक हुती प्राणण तेरे बेटी बह कुमार हुती । सहाजण अउ  
 प्यार टोह पाती हुती । प्यारे ही टीहे सगाई करि एक सारी  
 थापि दीयो । प्यारे ही जानां भाइ उतरियां । प्राणण नुं बिचार  
 उपनी । बेटी एक नै जानां प्यारि भायां । दिपे असुं बीजसी ।  
 ताहरां बेटी बोला—बाप पिन्ता मति क्यो । हू म्यारी थापे निवे

(नालों में साक्षात्) घाव कोई राजा घावर बैद्य जिन्ने बीबीनी में एक  
 बार बुझा लिया । इन्ने में एक पहर बीजा । घब दूसरे पहर के प्रारम्भ में  
 राजा भाव में बह—अल पहर तो रात बाकी है, महल की मातङ्गिनी बीबीनी  
 नहीं एक किस तरह बटेकी ? तब पाणिकरे मन्बाण को म्यरी पर  
 बैद्य का कहने लग—हे राजा । मुनो में म्यरी हू जो पगी हुई घोर  
 पाणी में बरी हुई है । में किस तरह बानू ? राजा ने कहा कि बात  
 कहने पर तू हुआउ देनी रहे छौ तुक—सरीकी हुनरी कोई नहीं । तब  
 म्यरी हुआउ देन मयी घोर राजा बात कहने लगा । एक का बहाण ।  
 उमकी बड़ी मझी कुनारी थी । टीअर अर जपह बेका पा । घाते ही  
 स्वामीं वर सगाई करके मुहूर्त निश्चिन कर दिया । घाते ही बघते  
 या उगते । बहाण के मन में तयान हुआ—बेटी एक घोर बघतें वार  
 घाई । घब का क्या बापगा ? तब बेटी बानी—हे पिता पिन्ता न

बीस । ताहराँ ब्राह्मण बिहुं नुं सीवा पाँखी दीया । क्यो—केस-  
रीय वागा पहरि नै तोरण भाबो । गाडा ब्यारि चंवरु मंगाइ  
अरु आरोगी बयाइ नै माहे ब्राह्मण री बेटी जाइ वेठी ।

अँ ब्यारे वीद तोरण भाय उभा रया । ताहराँ ब्राह्मणी  
पोली-मोसुं हथलेखो जोहे सु भाबी । ताहराँ एक वीद पोहे हुं  
छतरि हथलेखो जोहे वेठी । बीजा ऊमाहीअ रया । ताहराँ सवानुं  
अगनि सगाय दीबी । ताहराँ वीद छतरि नै चान्या अर फलीर  
हुवा । जानाँ आपरे घरे गया । ताहराँ एक ठी थी गंगाजी फूल ले  
यी । बीजा देसावर बलठो रया । वीजा मसाळ सेवण वेठी ।  
अँके देसावर नुं छतरीयो सु एके गरहे अतीव री चेलो हुबो ।  
गहराँ संघा मेखली पाळि अरु मिस्या मांगि साबे । मेखली

एके । मै एके मान हल्ले निबट भुंपी । इत पर ब्राह्मण ने चारों के  
ताने-वीने वर प्रवचन किया घोर बहा—कैतलिया बाबा फूल कर तोरण  
के मिय माधो । अगन की लकड़ी की चार मकिया मंवा कर घोर चिवा  
अना कर ब्राह्मण की लड़की उत पर जा बैठी ।

वे चारों दुन्हे तोरण के तिये धाकर अडे हो गये । तब ब्राह्मणी ने  
क्यू-जो मुझने पाणिपट्टण करे, बहु पावे । तब एक दुन्हे ने पोहे से  
उतर कर पाणिपट्टण किया । दुठरे सडे ही रहे । तब उन्होंने अग्नि  
लगा दी । इनके बाद घोर दुन्हे उतर कर अत तिये घोर फलीर हो गये ।  
बचते बापिन लौट गईं । उन कवीरों में से एक ठी थी मपारी वृत्त से  
गया । हुमरा परदेस अण गया । तीसरा मलान गिने लगा । जो परदेस  
मया था वह एक वृत्त संन्यागी का वैसा हो गया । वह कया घोर देवता  
बाजार मिया मीकर मागा । वैसा में एक लकड़ी थी जो पीठ के

साहि प्फ साकडी सु मंगरा लागी । ताहरां गुरु तुं च्यो—मेखनी  
 नीच लकड़ी हे सु बाल देवा । ताहरां गुरु बोलीपी—लकड़ी बहुत  
 गुखारी हे । बाखण री नही । ताहरां च्यो—बाबाजी, साकडी  
 साहि गुण हे सी कही तो रत्ना, नही तो बास देवा । च्यो तो  
 इस साकडी को गुण हे जो मू आदमी की हाडी कुं सगाइ ती  
 आदमी मृपो जीये । ताहरां एक समझे साकडी ले चलती हुयी ।  
 मासे ३, ४ मसाण आयो । रंगा कूत परबाह्य रयी हुतो सुई  
 आयो एवे साकडी आणि मसाण सुं सगाई ।

सु बेठ उठि बैठ हुवा । ताहरां पिहुं आपनीच म्हाको  
 हुयो । ऊ कहे—म्हारी बाहर, ऊ कहे—म्हारी बाहर । ताहरां म्हारी  
 बोली—मसाण सेबीयो तैरी बाहर । ताहरां बीयोडी रिस करि  
 ज्य जमकि म्हारी फोडी । भर च्हाय लागी—तैरी बाहर जो साय

मपती थी । तब गुरु से कहा—मेखना में जो लकड़ी है उसको बाल दे  
 क्या ? तब गुरु ने कहा—लकड़ी बहुत फुलवाली है बालनी नहीं  
 चाहिए । उसने कहा—बाबाजी लकड़ी में जो गुण है, वे बतलाओ, तब  
 तो रत्ने नहीं वा बाल दे । उसने कहा—इस लकड़ी में यह गुण है कि  
 जो इसे आदमी की हड्डी के लज दे तो पुरा की उठ । तब बड़े एक  
 समय लकड़ी लेकर बजता बना । तीन-चार महीने बाद मसान में आया ।  
 रंगा में कूत बाजते जहाँ से बाह्यण पना वा लज जगह आया । उन  
 लकड़ी को उम्मे मसान के लपाई ।

तो वे दोनों उठ बैठ । तब उन चारों में मानस में भगदा हुवा ।  
 बड़ बाजा—मेरी स्त्री बड़ बहना मेरी स्त्री । तब म्हारी बोली—जिसने  
 ममान मेवा था, उसकी स्त्री है । इस पर बीयोली ने खीच करके तथा  
 पचक कर म्हारी जोड़ हानी घोर रहने लगी—इसकी स्त्री है जो माय

बलीयो। ताहरां राजा नीसाण भाय बीयो। दोइ वेला बीबोली  
 बोली। राति पहर दोइ वितीठ हुई। हिये तीन्ही बात कहे छै।  
 महसरी घणीयाणी बोले नही राति किसी मांति वितीठ हुबे।  
 ताहरां दीबे उपर आगीयो बेताल पोलीयो—पहिले सोइ रो पबियो  
 दीयो। माहि पायीयो तेल। ईरी पाटी जगाई। बोल सगू नही।  
 साबास रे साबास बीना! हूँ कतो वै तो साबास छै। ताहरां राजा  
 भोज पाव कहे छै। एक हुती राजारी कुबरी। एक हुती मुदते रो  
 बेटो। एक हुती ब्राह्मण रो बेटो। महते रो बेटो पकि विधिन हूओ  
 ब्राह्मण रो बेटो मूरल रखी। ताहरां सयं लोक ब्राह्मण नू  
 मूरिओ बोलाबे। ताहरां राजा रो बेटी नो मुँहते रे बटे मती  
 बीयो—तु मीनं ले नीसरे ती हू धारे साये हखूँ।

जबा या। तब राजा के लबाड़े पर डंका लगया। दो बार बीबोली  
 बोली दो पहर एत ध्यतीठ हुई। सब तीसरी बात कहता है। जब  
 तीसरे पहर के आरम्भ में राजा बोला—दो पहर एत रही है। मूरल की  
 मानकिज बोली नहीं। एत किम तरह कटेयो? तब दीपक के ऊपर  
 बैठा हुआ घानिया बेताल बहो लया—पूजे लीख ना दीपक गड़ा  
 पया। उनके प्रभर बला पया तम। कई की बती जगाई गई।  
 इमलिए मैं बीन तो खता नहीं। खबार रे खायत बीपत। यदि  
 हुंकार है तो मुझे खबार है। जब राजा बोव बात कहता है। एक की  
 एतहुनाटी एक या मन्त्री ना लफ्फा, एक या ब्राह्मण का मफ्फा।  
 मन्त्री ना लफ्फा पद-निजकर होंदियार हुमा। ब्राह्मण का मफ्फा मूर्त  
 र्हा। सब लोग ब्राह्मण को मूर्त बहरर पुकारते ब। तब राजा की  
 लफ्फी बीर मन्त्री के लफ्फे के मराह की—यदि तू मुझे लफ्फ निज  
 बने तो मैं तुम्हारे साथ बरूँ।

ताहरां मुहने रे बेटे क्यो—हु परे जाइ तैयार हुइ धाऊ  
 छू । कुवरी नू क्यो—ये राजारै पाइगइ रा घोड़ा २ जय विजय <sup>पुइस</sup>  
 नाम छै सु ले मरदानो बागी पहर मरली ले ने बाग में आयो ।  
 मूरिले नू मेलिइ समस्या कराबिब्यो । भिम म्हे पिण्य स्वरब ले <sup>नरे</sup>  
 भाषां । ताहरां राजा री कुवरी महल में गई । जाइ आगला  
 कपड़ा उतारि मरदानगी कपड़ा पहरि मुहरां सु तोसदान मर  
 छोकरी १ ले ने पाइगइ गइ । पाइगइ जाइ राति रे समइये जय-  
 विजय घोड़ा छोड़ाया । घोड़े बडि बाग में आयो । ताहरां कुवरी  
 मूरिले नू नेल्दीयो—जु मुहने रे बेटे नु कहे खु पेगो भाये ।  
 ताहरां मूरिले सामे हु दौड़ती आयती । बेबी सारदा साम्ही  
 भाई । ताहरां पूछीयो—तू कुय छै । ताहरां क्यो—हू बेबी  
 सारदा छू । ताहरां मूरिले भाओ ले सिर फोड़य लाग्यो । हू

तब मन्त्री के लम्हे मे बहू—मै पर जाकर तैयार हुकर पात्रा हू ।  
 राजकुमारी मे बहू कि तुम राजा की दुकान मे जय-विजय नाम के जो  
 दो पाड़े हैं उनको लेकर, मरदाना बाग पहन कर, माण-भण्य लेकर बाग  
 में जा जाना । मूर्ख को लेकर सूचना लिखा देना ताकि मै लर्ब से  
 भाऊं । तब राजकुमारी महल में गई । जाकर पहने हुए कपड़े उतारकर,  
 मरनि कपड़े पहनकर, माहुरों मे तोसदान मरकर तथा एक  
 छोकरी साथ लेकर दुकान में गई । दुकान में जाकर राज के समय  
 जय-विजय पाड़े घूटे से खोल लिये । बोड़े पर बइकर बाग में पाई ।  
 तब राजकुमारी मे मूर्ख का चेहरा कि मन्त्री के बेटे को बहो कि बह  
 पन्दी भाये । मूर्ख अपने स छोड़ना हुवा धा छु पा । बेबी सारदा नामने  
 भाई । उनने पूछा—तू कौन है ? उतने बहू—मै बेबी सारदा हूँ । तब मूर्ख  
 पदर लेकर घटना फिर फोड़ने लगा और बजने लगा—मै शाहपु का

पामण री बेटी धर मूरख । का थिया रे का जोही पाटीस ।  
 ताहरां धारवा बोली—मुँह माडि । ताहरां मुँहवे माडि रल  
 मेस्ती । ताहरां मूरखे नूँ तीन लोक सूझण सागा ।

मूरखी पावरी मु इते कहे गयो । मु इते तु क्यो सारो  
 ज खीयो । मूरखे नूँ कपडा पहारम, ह्मीयार बंधाय तासवान मु इरा  
 वे मु इते क्यो—तू ले जाइ । मूरखी राज री कु बरी कहे आयी ।  
 कु बरी आखीयो—मु इते री बेटी आयी । हेके पोहे मूरखे बडियो ।  
 हेके पोहे कु बरी बडी । पदि खडीवा । आपतां आपता प्रमाति  
 हवो । ताहरां कु बरी बोली—मु इता रा बेटा राति क्यार पहर  
 मारिग पालीया पिल बोलीया कहे नही सु किसी संधीवाई ।  
 ताहरां मूरखी बोलीयो—हूँ मूरख धू । मुँहते री बेटी मुँहते  
 राखीयो । ताहरां राजा री कु बरी संधीत हुई । जो पाखा आजरे

लडवा घोर मूर्ख । या लो थिया रे का घुन की जगिन बन । तब  
 खारवा ने कहा—मुँह खोल । तब मुँह के पन्धर पाक सम ही । तब  
 मूर्ख थिनोरती हो गया ।

मूर्ख लीया मन्त्री के पास गया घोर मन्त्री ने साठ वृत्तान्त कहा ।  
 मूर्ख को कपडा पहना कर, ह्मियार बंधावर लोमशान में मोहरें भरकर  
 मन्त्री ने कहा—तू ले जा । मूर्ख राजगुमाटी के पास गया । राजगुमाटी  
 ने लमख—मन्त्री का लडवा धाया है । एक पोहे पर मूर्ख बना । एक  
 पोहे पर राजगुमाटी बनी । बढ़कर दोनों बन रिये । बलते-बलते मल काग  
 हुआ । तब राजगुमाटी बोली—हे मन्त्री के लडके ! तब मैं बार पहर  
 रास्ते बने परलु घुम बोने क्यों नहीं ? ऐसी क्या चिन्ता है ? तब मूर्ख  
 ने कहा—यै मूर्ख हूँ । मन्त्री के बेटे को मन्त्री ने रज किया । हम पर  
 राजगुमाटी को चिन्ता हुई । यदि नीचे तो जपह नहीं । सब लो मूर्ख

तो ठीक नहीं। द्विजे मूरखे गति। ताहराँ मूरखौ बोसीयो—ओ  
 येबी सारवा मोलुं बर कीयी द्विजे हूँ मूरिख नहीं। सचीव मठा  
 हूबी। इन करता एके सहर बाइ ठिकरखी जे नै बाइ छतरीया।  
 मास २ : ३ तिहाँ रखा। तिवरे सहर बिल्लै एक तसाव सखीबती  
 थी। तिल मी खीरतघम नीसरियो। तिल उमर पकनामौ सु  
 मिच्छाही बचै नहीं। एके दिन मूरिखौ जाइ नीसरियो सु मूरिखै  
 नामो बाँचीयो। तै नीचै सवा कोइ बिल बतायो। ताहराँ राजा  
 सुणाय बिल बढायो।

[ताहराँ मूरखै रौ नाम रतनपारखु कीयो। रतन परसावग्य  
 खोफ आवै। सोटे खरे री लखरि करि बै। ताहराँ कुबरी कही  
 सिद्ध भागा इसी राजकी छटाई। जे बापीयै ती भादमो हुबै।  
 एक समै सुबटो करि बैसरियो हुतो सु ख्याल करता छडीयो।  
 जाइ सहर रै राजा री कुबरी पंचकती नै मिहयो चपेरी कता

काही छटापु है। तब मूर्ख ने कहा कि देवी शारदा ने मुझे बरदान  
 दिया है, जब मैं मूर्ख नहीं हूँ, बिना मठ कर,। इस प्रकार बात कहे हुए  
 वे एक शहर में जाकर एक स्थान सेकर उठने गये। २३ महीने वहाँ रहे।  
 उस शहर में एक राजास कुबराया बा रहा था। उसमें कीर्ति-स्वप्न मिथ्या।  
 उसके आर एक पैसा नाम बा जिसे कोई नहीं पढ़ सदा। एक दिन मूर्ख  
 (कुबरी) जा मिथ्या। मूर्ख ने नाम बड़ लिखा। उसके नीचे सवा कपीड़  
 का बन बगनाया। तब राजा ने सुनबा कर पत्र मिथ्यासा मिया।

तब मूर्ख का नाम रतनपारखी रखा गया। रतन-परीक्षा करवाने के  
 लिए लोग पाने लगे। (मूर्ख) सोटे-खरे की बाँध कर बैठा। तब राज  
 कुमारी ने लिखी सिद्ध ने एक ऐसी राजी बलबाई जिसके बाँधने से तो  
 मारपी हो काम बरना पडी रहे। एक समय उसने गुणा करके उसे मिथ्या  
 रखा बा। बड़ कुछ विचार करके पड़ा। जाकर शहर के राजा की सखी  
 पंचकती ने मिना जो अपने की कनियो ने तुमनी थी। इमलिय



सुं तुलती । तेरो नाम पंचकली कहावती । तेरो मैहल जाइ बैठो ।  
 पंचकली पकड़ि लीयो । भर कयाल करता देखी ती रासही बे ।  
 रासही छौंछौं लो मनिल हवो ] राशि मनलि करे । दिनै सुनटो  
 करै । इम करता तबै सु शूरी । नू मालख फूल ल्याई जुसी-सु  
 जुसै नही । मालण जाय राजा सु वीनती की । कुबरी फूला सु  
 ताहरा राजा नगरनाइकर तेकी । तुं कुबरी रै मैहल  
 मै निगह कर । ताहरा नगरनाइकर जाइ महल में दिप बैठी ।  
 ताहरा नगरनाइकर चोर चोर कर पुकरी । ताहरा राजा रा लोक  
 छडी दीड़ीया । ताहरा मूरिलो रमाटी कुबरी रै मैहल हेठै साह री  
 पर हुती रै माहे कूर पकीया । साहजु क्यो—हू राजा री चोर  
 किय विष ऊबरू । साहकार रै बड़ कुमार चेटी सूती छी । मैलो  
 सुधाहीयो । राजा रा भादमी भाइ फिरि गया ।

उसका नाम पंचकली था । उसके महल पर जाकर बैठ गया । पंचकली के  
 उने पकड़ लिया और सम्मान कर देया तो राणी दिखाई दी । राणी  
 ज्यों ही कुझाई वह मनुष्य हो गया । इम प्रकार राठ को तबै मनुष्य  
 बना दे और दिन में मूया बना दे । इम प्रकार बरते हुए वह पंचकली  
 हो गई । मालिख फूल लाई । किन्तु राजकुमारी बराबर न तुल ली ।  
 तब मालिख ने जाकर राजा से प्रार्थना की कि राजकुमारी का बचन न  
 जाने कुनों से सचिकर क्यों हो गया ? तब राजा ने तमर की माषिवा को  
 बुगा भैया और कस्य कि तु राजकुमारी के महल में जाकर बात ना  
 पूजा गया । तब नगरमाषिवा जाकर महल में जाकर बैठ गई । जब  
 नगरमाषिवा 'चोर चोर' कहके पुकारी तब तब राजकुमारी बीठे । मूर्ति  
 राजकुमारी के महल के नीचे जो साहकार का घर था उसमें बुर पड़ा ।  
 साहकार के कस्य—रै राजा का चोर हू । कैसे बचू ? साहकार के बड़े कुमार  
 को लक्ष्मी छोटी हुई थी—जिबके साथ मूर्ति को मूया दिया । राजा के  
 भादमी जाकर बापन बने बने ।

घोर नास गर्मी । प्रभासि साह री बेटी कहे—ध्यारि पहर इयमेली  
 सूयी । मोनु औहीज परग्याह । ताहरां साह औहीज परग्यायी ।  
 एक दिन मूरखी बाजार गयी हुयी ताहरां पहिन की कुवरी री  
 झौकरी अलसीयाँ । ताहरां उवा कुवरी पिण उय भाह । पञ्चकली <sup>पहल</sup>  
 पिण भाह मेली हुह । ताहरां छीने कहे—उवा कहे म्हारी मरतार,  
 उवा कहे म्हारो मरतार । काहे बीचा । बी बीरो मरतार ? ताहरां  
 बीचौ कहे—जिक्क ले नीसरी छीयै री मरतार । ताहरां चौबोली  
 रीस करि बीचौ फोड़ि बीचौ । अर कहे माटी × छीयै रो छीयै  
 मारीजवौ राखिबौ । भाहरी बेटी री मरतार । ताहरां वहे राजा  
 मोज नीसाण घाष शीयौ । तन फेर चौबोली बोली । छीन पहर  
 बितीत हुआ [ चौबे पहर रै अमल राजा बोलीयौ । पाकिखी राति  
 अर मइस री घणियांछी बोलै नहीं । राति किस भाति बितीत

घोर माग पया । प्रातःकाम साहूकार की लड़की ने कहा कि  
 चार पहर हमके साथ सोई थी इसलिए मैरी इत्ती से शादी कर दो ।  
 तब साहूकार न इत्ती से शादी कर री । एक दिन मूर्ख बाजार गया हुआ था ।  
 उस समय पहले वाली राजकुमारी की भोकरणी ने पहचान लिया । तब वह  
 राजकुमारी वहाँ आई । पञ्चमी भी वहाँ आकर मिल गई । तब तीनों  
 घात में मजकुरे सर्पों—वह बहूजी मेरा पति वह बहूजी मेरा पति ।  
 हे दीपक ! बज्रभाषी वह किसका पति है ? तब दीपक ने कहा—मूर्ख  
 जिसको लेकर निकला था उसका पति है । तब चौबोली ने बोल करके  
 तीन छेड़ दिया और कहने लगी कि जिसने मारे जाते हुए  
 को बीबनरान दिया, उस साहूकार की लड़की का यह पति है । तब  
 फिर राजा मोज ने नवाड़े पर चोट मारी । छीन चार चौबोली बोल चुकी ।  
 छीन पहर खोजीत हो गये । चौबे पहर के प्रारम्भ में राजा कहने लगा—

× माटी=मर्ति

हुये । ताहरा खाफ़रीं चोर हारमें बैठे हुतो सु बोलीयी । सुखिही  
 राजा भोज ! चौबोली रा भरवार । हार हुसी क्यो । ताहरा चौबोली  
 रीस करि सबा कोइ री हार हुती सु तोड़ियौ । छोड़ि नै बोली-स्यु  
 रे बेसरम ! राजा भोज चौबोली कइ परखी हुती ? ताहरा  
 राजा भोज नीसाखौ पाव हीयो ॥

ताहरा पाव <sup>दुखीयौ</sup> <sup>नीसाखौ</sup> <sup>अपनी</sup> सहेन्यां चौबोली आगे आइ  
 ऊभ्यां रखा । धारी बड़ो भाग जु धारो नेम ही रखी अर राजा  
 भोज भरवार पायीं । ताहरा चौबोली कहे-मोनु रीस सु बोलाई ।  
 ताहरा बड़ाख समझइ अर क्यो-भारै भाग में हुती सु अर आयी  
 ताहरा राजा रै विवाह री साजव हुई । ताहरा च्यारे धीर सानी  
 हुया । राजा भोज आइ तोरण बूकी । आला नीला क्यूस करि

राज का अन्तिम पहर है धीर मूल्य की मानकिय बोनती नहीं—  
 राज किछ लख कटेपी ? तब आरय चोर जो हार में बैद्य वा बहने  
 लग्य—मुनो है राजा भोज ! चौबोली के भरवार ! हार मे ज्यों ही यों  
 कइ ल्यों ही चौबोली मे शोप करके सबा कपोइ अ जो हार या अमे  
 तोड़ अता । तोड़कर जाती—क्यों रे बेसरम ! राजा भोज मे चौबोली  
 ते कइ विवाह किया था ? तब राजा भोज मे मनाड़े पर डके की चोर जाती ।

तब पाव शक्तिबा<sup>१</sup> ताहरा<sup>१</sup> धीर सहेनियां चौबोली के धारे धार  
 पड़ी हो गई [ धीर बहने लगी ] कि तुम्हाय लोभाय है कि तुम्हाय  
 प्रय भी खू यवा धीर राजा भोज जैसा पति भी मिल गया । तब  
 चौबोली ने कहा कि मुझे शोप करवा कर दुपरा लिया । तब बड़ी  
 बुद्धियों ने समझकर कहा—तुम्हाय भाय में जो अर लिया था वह  
 मिल गया । इसके बाद राजा के विवाह की तैयारी हुई धीर चारों धीर  
 बचती बने । राजा भोज ने धाकर तोरण माण अर ते भरे हुए नीतरुम्भ

राजा भोज चौबोली परलीयो । सबरि राजा जितरा पाछी भरता सरब छोड़ीयो । सायो आप आपरै देस बसायो । हाथी घोड़ा सित्रबाना छोकरमाँ घणै दाइजी दे भर हलाया । राजा भोज राणी चौबोली नु छे भर घरे आयो । उणो सदाह कर राणी मानमती बसाया । बोल बोलीया हुवा मुँ राणी मानमती पासै उणो चौबोली आयी बसायो । बात चौबोली री संपूर्ण ।

---

राज्य राजा भोज ने चौबोली से विवाह किया । सबेर राजा ने बितने पानी भरले बासे दे उण सबको पुडा पिया घोर बहा—जायो घपने घपने देस को बसायो । सबे हुए हाथी घोड़े घोर बसिया तथा नूब हंज देकर ( राजा भोज को ) बिया किया गया । राजा भोज राणी चौबोली को लेकर बर आया । राणी मानमती ने बड़े उस्ताह के साथ बसाई री । राणी मानमती ने ताना मार पा सो उरके पास राजा भोज ने चौबोली को साकर बिठना दिया । चौबोली की बहानी समाप्त ।

---

## खीवै वीजै री बात

खीवौ—बीजौ बाबाधी पडा दोड़ा पडा चोर । बीजौ सोभिय  
 वसै । खीवौ नाहोल वसै । बेहू रा ओसाप पडा । उ छगु री नाम  
 जायै । उ छगु रो नाम जायै । पिख मिलीया कवे नहीं । एक  
 समीये बीजै मन में जायीयो । नू नाहूल पडी जायगा भर  
 नाहूल कवे पोटी न की । नाहूल पोटी कर्य ठी भसा । परला  
 रिनु छ । मेह बनमीया छै । इसा समीया मा बीजो नाहूल आवी  
 छै । बीजो नाहूल आवि नै दिन दोड़ रही । गली कूची सरप  
 वीत्री । वस्ति नै आव्य अमावस री राते आवै, आवि माववा री  
 आवी रात गई छ ताहरा फस्ती कयलू री गली मारे टोपी माये  
 मेल्हि जायीयो पहिरि हुरो काड़ि कडि बायि भर सहर माहे

### खीवा घोर बीजा की कहानी

खीवा घोर बीजा बड़े चोर थे घोर ने बड़ी मृत्युकार कले थे । बीजा  
 सोभिय में रहना वा घोर बीजा नाहोल में । बोनी का सपन बहू  
 बड़-बड़ था । उसने उसका नाम मुना था, उसने उसका नाम मुना  
 था, पर मिने कमी नहीं थे । एक समय बीजे में मन में विचार किया  
 कि नाहोल बड़ी पगड़ है घोर नाहोल कमी पोटी नी नहीं । नाहोल में  
 पोटी करें तो सम्पन्न रहे । वर्षा ऋतु है । बारण उमड़ छ है । ऐसे समय  
 बीजा मृत्यु माया है । बीजा मृत्यु माकर दो दिन रहा । सब गली  
 कूचि हेने । जब उसने देखा कि अमावस्या नी रात आवै, आवे मृत्यु  
 नी आवी रात गई तब बानी मृत्यु रापीर पर लपेटकर घोर टोपी विर  
 पर लपेट, बायिया पलकर, घुपी बजर में बायकर राह में पोटी के

बोली नु वालीयो । सहर माहे फिरता फिरतां किणारी री घर  
 बाबू मां नारी । तिसै समीचे स्त्रीचे रे पडने भाई बाजीयो । घर  
 भाषी राति मित्र गई छे । बीजा बस टाम भाई उमो छे । मन  
 में बिपारे छे । बाणे छे । एव बोरीये सु ती क्यु मजा छे । मजी  
 वस्त भात्रे हाय भर मारीजु तौ पिछ मजा । भाई नै पडीतरां  
 नेचा उमा रघो । माहे स्त्रीबी सूती छे, जसो छे ।

स्त्रीयो माहे सूतां बीतरें छे, पारें बीर छे । स्त्रीचे घर नुं सम  
 मरदें भोत्रे मठा । सूटे सु वज्रपार लो । वज्रपार लेतां यत्रं माली  
 उबो तेरे बीजे बिमासीयो जु घर री पसी जागीयो । बीजे बीजे  
क्याल ही हुं इ इयासु करि सु । ताहरां पडीत खोइयो बैठे नीबीत  
पकी खोरे छे । खोरेते खोइते गली की जिसही में मायी माये ।  
 स्त्रीयो तरवार कटि नै बैठो छे । मायी भाषो करे माये में तर

लिए निजाना । एहर में पूसने-पूमने चिठी का घर बाबू में न घात ।  
 ऐसे समय बहु स्त्रीके केरे में घा निजता । पावी एउ बन गई है ।  
 बीजा बस स्थान में घातर सदा है । मन में संकल्प-विकल्प करता है ।  
 यह ही बोरी करना कुछ मज्जा भी है, कोई मज्जा बीज हाय लदेपी  
 बीर भाय जाऊ या तो भी मज्जा है । घातर के पीछे की घोर झुक कर  
 बड़ा हो गया । घनर बीजा बोसा हुआ है किन्तु बा रखा है ।

घनर बोसा हुआ बीजा सोच रहा है कि बाहर बीर है । बीजे के  
 पत्नी स्त्री को बचानेया कि बालो मय । नूटे से तरवार उठाये ।  
 तरवार लेते समय मज्जा बड़ी, रिबट्टे बीजा समझ गया कि घर का  
 मानिक जय गया है । बीजे ने सोचा—उमाया तो मैं इसको निजाऊंगा ।  
 तब पीछ के हिस्से को खोरेने के निरु बीउ गया । निरिबन्ध होकर खोज  
 रहा है । खोरेने-घट्टे उधने बीरार में इतना बस दिन कर मिया,  
 नमें निर कुन मज्जा था । बीजा तरवार निजाने हुए देखा है कि

वार री घु । इ ए आंगुली धाल करे नै जोयो । मोहने खणोखर  
 रे माये हांकी देह नै भायो कीयो । तिवरे स्त्रीके बम मरि नै तर  
 बार बाही सु हांकी उपरा बाबी । सु हांकी कूटि गई स्त्रीको ही  
 हंसीको भर बीजोई हंसीयो । हंसीया यथा पीजो बोसीयो जु  
 इसको मैं ती एक स्त्रीको सुखीयो हुयो । स्त्रीको कहीयो इसको  
 पीजो सुखीयो हयो । कहीयो पीजियो म्हारो नाम । ती कहीयो  
 स्त्रीबर्ता म्हारो नाम । ती कहीयो भाबी मिला । म्हारनुं बाह रे  
 मिलाख री बांछा हुती । कदा कहीयो म्हानुं ही मिलाख री पांछा हुती ।  
 बाह नै मिलीया । एकटा बैठा । बैर नुं कहीयो छठि चलगी हूँ ।  
 बैर छठि मुंहके आगो आसि सुलां री रूप मेरही ।

मद री छम आसि मेरहीयो । मद पीबखे लागत । सुलां  
 छाबखे लागत । इति समय मैं दिन छ्यी । यणो हरस हयो ।

यह सिर पागे करे धीर ये सिर मैं तलवार की हू । उठने प्रभुति बाल-  
 कर देखा । देख कर बीजे ने कपीन सोने के धीवार के सिरे पर काली  
 हडिया रख कर धाने कर बी । इठने मैं बीजे ने बेग से तलवार वा बार  
 निम्ना धीर तलवार हडिया के ऊपर बजी । सो हडिया फूट गई । पीना  
 भी हंसा धीर बीजा भी हंसा । हंसते हुए बीजे ने कहा—देखा तो मैंने  
 छोरा ही मुग्रा पा । बीजे ने कहा—देखा धारपी मैंने बीजा ही मुग्रा  
 पा । उठने कहा—बीजा मेरा नाम है । उठने कहा—बीजा मेरा नाम है ।  
 तब कहने कहा—मापी मिले, मुझे तुमसे मिलने की इच्छा थी ।  
 तुमसे मे कहा—मुझे जो तुमसे मिलने की इच्छा थी । मरकर मिले ।  
 इन्हें हुए । स्त्री से कहा—उठ कर धाल बसी या । स्त्री ने उठकर  
 मुंह के सामने धूलों ( नास के पके हुए टुकड़ों ) की लीफ लगी ।

मद वा प्याला लाकर रखा । छटाब पीने लगे धीर नास लाने  
 लगे । स्त्री बीच में दिन गया । बदा दई हुया । धारबनन हाने लगी ।

भक्ति हुषणै लागी । हू म गाबणै लागी गाडो संतोप हुँयो । धरौं  
 मेल हूयो । ३५३ दिन हूया इसै समीपे मै पाखिलो पहर छै जीमण  
 ठईयार हूबी छै । पाजषट बिज्जाय नै भानि मादि नै जीमण बैठा ।  
 कया २५३ लिया तिसै स्त्रीया री बेर बोली । बीजाजी तू नै धारी  
 भाई बेब बडा रजपूत । माहरो पडो नाम । धामी एक समर  
 खानी ये भेला हूया । जिन्की एक बान करी सिगला माणूम हुवे ।  
 बीजा बोलीयो धामी कही तू कहे तिकाई करी । इस कछो हूँ  
 कही कहुँ । कहुँ तो बीताइ पोड़ी २ जय नै बिजय साह देवी-  
 दास रे छै जीयां रे पगे लागी तेजरो आय छै । उने पोड़ी आखो  
 तो ये बडा पाइवी । बीजा तो धाड़ा पला ही फरो छो छोटा  
 मोटा । इगरो फइतां बेठ अणां छठि नै बहू करे नै बोलीया ।  
 बहू मरि पायी छै नै कहीयो । जे उने पोछ्यां आखा तो एव भाइ  
 नै जीमा नही तो ए कखहु माये उदक आबखो ।

शोम पले लने बडा संतोप हूया । गूब मेन—ममाकाउ हुई । ३-४  
 दिन इत ठउर बीते । एने समय अन्तिम पहर का भोजन तैयार हूया ।  
 बोकी बिज्जाकर, बाल रजकर बे भोजन करलै बैठे । दो-तीन घास लिये ।  
 सब समय लीला की स्त्री बोल्यो—बीजाजी तुम धीर तुम्हारे भाई धेनों  
 बड़े राजपूत हो । तुम बड़े नामो हो । भयेइ उम्र में तुम लिये हो ।  
 कोई ऐसी बात करो जो सब जगह प्रसिद्ध हो जाय । बीजे ने कहा—  
 बाबी तू कहेगी बही करेगे । इसने कहु—यै क्या कहुँ । कहुँ तो बात  
 यह है कि चित्तौड़ में पोड़ी दो जय धीर बिजय नाम की साह देवीदास  
 के यहाँ है जो एक माखे ही हवा हो जाती है । बोखियां ने घायो तो  
 तुम बड़े बाहु हो । इसरी जगह तो छोटे-मोटे डाके गूब डालते हो ।  
 इतना कहुते ही धेनों जने उठकर धावमन करके बोने—तुम्हू बर पानी  
 लेकर बहा—जब ब पोड़ियां लार्देये लमी धाकर भोजन करेके नहीं तो  
 यद् जल हमारे मस्तक पर कर्तव्य लमये ।



दोनु बितोड़ मुं बालीया । बितोड़ आइ रखू हूबा । बीवी हुतो  
 विकी पाटा धंधि नै साह रे बारये आइ बैठो । धीजी रखी सहर  
 मांदि । इयु करता थकं आयुय रे आइ समझि करि करि आइ  
 समाचार पूछै । पूछता दिन २ ३ ६ हूबा तठै सारी माहरम पाई ।  
 पर दोला छै परकोटा तीया बीच साठभौ पबबो विख माहे  
 पोड़ी बसै एक एकण लुखो । पबयो केन्तुयो सुं ह्यायो । साठ  
 वासा माहे अडीये । साता ही दरवाजा री कूची सिरहायो देनै  
 साह पोडा री पछाडी छपर कियाब सुं मांभो अडाइ नै सुबै ।  
 साते दरवाजा मांदिना वासा अडीये । कूची सिरहायो दे सुबै ।  
 आ सवरि बीबै धीजे मु कही । तरे बीजे आइ सोहारी रे सोह री  
 खुंटी पड़ावियो । पडाइने अमावस री राति आइ ने धीजी  
 सागो । पडीयासै री पड़ी पाये तरे खुंटी २-६ मारे । वसे पड़ी

दोनों बितोड़ को बसे । बितोड़ का बटुपि । बीबा पहिली बांकर  
 साह के दरवाजे वा बीठ । बीजा रखर में रखा । यों कठे हुए सुपास्त के  
 समय पाकर बीबा देखबास कर बला घोर (बीजे से) समाचार पूछ जाता ।  
 पूछते हुए २ ६ दिन हो गये तब साठ भेर नामूम ही पया । पर  
 के चारों घोर ६ परकोटे से उनके बीच में साठवां पड़ावा वा बितोड़  
 एक-एक बने में एक-एक बोड़ी बैवती थी । बुझसान छपर से छाया  
 हुआ था । साठ राते उठके गये हुए थे । साती ही दरवाजों की चाबी  
 सिप्याने देकर साह पोड़ी को विछाड़ी से किनाड़ लनाकर घोर उठके  
 रात सदाकर सोता था । साती दरवाजों के धन्डनी लगे भी बड़े बाले  
 व घोर साह चाबी सिप्याने देकर सोता था । यह बात सीजे ने बीजे को  
 बतलाई । तब बीजे ने बाकर मुहायें ने सोह भी घूंटियां पड़ाई ।  
 गता वर पबबय्या भी राति को बीजा पाकर छिप गया । पकियाय भी

घात्रे ठरे लूटी मारे । [इसुं करवा छप पकड़ोटा सोपि ने पडवा  
दोहो भाइ फिरीयो । भाइ फिरि ने पडवे ऊचो चरीयो ।  
पडवे बडि ने पके बाती बिबलाःकोरु छतारीया ।

पसबाई भरती मूझीया । मूकि ने बेहु <sup>दुन्नत</sup> बाती पकड़ि ने माहि  
ले पासी पस मु छतरीयो । छतरि ने बीसो बुम्बाइ नीयो । बीसो  
बुम्बाइ ने माबा रा पागा ह्याय छपर उठाइ ने पारबती श्रीया ।  
पारबती करि ने सिरहायें हुँ इवलें इवलें कूँची श्रीयो । कूँची ले  
ने साते दरपाजा खोसीया । खोलि ने जय रे लगाम देर ने चढ़ी ।  
चढ़ि ने सलाम करि ने कपो माहरी भागे ही जय हुइसी । ] ले ने  
श्रीयें नु पकड़ाई । पकड़ाइ ने अपूठ्य ठाला बढतो गयो । बडि ने  
कूँची सिरहायें देने माँपो बले चिवाडा नु लगार्ने ने सीय मारिग  
भायो हुँतो तीयै ही मारिग अपूठ्यो चतरीयो । कैसू म्यू हुता

बड़ी बर बरती ठर बू १-७ मेक माया । फिर बड़ी बरती फिर मेक  
माया । धीं कली हुए छत्रों परकोयें को पार करके पुइयाल को वेव ।  
फिर भाकर पुइयाल के ऊपर चढ़ा । पुइयाल पर चढ़कर बिबने छपर  
की एक बाती उगायी ।

पान में जमीन पर छोड़ दी । छोड़ कर दूसरी बाती चढ़ कर ऊपर  
की ओर भट से उतर गया । उतर कर दीपक बुझ दिया । दीपक बुझ कर  
घने उलकर बाट को पारबती कर दिया । पारबती करके सिंघने ने  
धीरे-धीरे बाती के धी । बाती केकर बाती दरपाजे खोजे । खोजकर जप  
को लगाम लगाकर धोता । खोजकर लगाम करके कहा कि हवापी घासे  
धी जय हो । नेकर लगाम खींचे को पकड़ाई । पकड़ा कर फिर पान  
चढ़ा गया । चढ़कर बाती सिंघने उलकर, बाट फिर चिवाडों से लगा  
कर त्रिभु घाले से घापा पा उगी घाले बाँधित बना गया । छपर जैमा

त्यहीज वीमा । घोडी खने क्यो खीवांभी बाहरे हेसेरी रई छं व  
 ले भाबिग्यो । बख तो घोडी सेने भापाहीज खडीया । तितरी में  
 भाख पाटी साह नु नीर भाई सु जागे नही । तरे बाकर भाइ  
 ने बोझिया साहजी क्यु खगो नही । ताहरां साह जाग्यो । साह  
 जागि नै देखै तो घोडी नही । ताका खडीया वीठा मांभी पिवाहा  
 सु लागो छे । कृ'क्यां सिखान्यो छे । सु देखि नै साह साहखीं  
 साम्हें जोयो । साहखी साह साम्हें जोयो जोय नै किवाइ खोप्या ।  
 खोखि नै क्यार भादमी भापरा हुता धीया नु' तेदि नै क्यो सुर ग  
 बीसे नही । मीव फरही बीसे नही ताहरां सारां ही भिक्षि नै क्यो  
 साहजी घोडी देखीक हुती घोडी बपन गई । साह ही क्यो मुरी  
 बाठ । खोखं कहीयो धीजी ए पण अवन करी । शिको भावै तिखी  
 पु हीज खहराथे दिन ५ ५ ६ गुदरीया ताहरां एक दिन दोपहर ती

वा बीठा ही कर दिया । घोडी लेकर कहा—खीवांभी तुम्हारे हिस्से की  
 छ गई है तुम बैठे घाना । वह तो बाड़ी बैकर पाये बन दिया ।  
 इनने में तो पटी । साह को नीर भाई हुई तो इतलिय बना नही ।  
 छठके लीकरों में बाकर कहा—साहजी बपते क्यों नहीं ? तब साह  
 कहा । साह ने बककर देखा तो पोड़ी नहीं । ताले बन्द निने खाट फिवाड़ों  
 से लगी हुई थी । बाबियां सिखाने हैं । यह देखकर साह ने अपनी कमी  
 की धीर देखा धीर सैयनी ने साह को धीर देखा । बैकर फिवाड़ खोले ।

खोलकर जो बार लप्ती धारनी के, उनको बुलाकर कहा—तुरंत वा  
 सीधनी नहीं । मीठ भी नहीं वे दूरी हुई नहीं धीयती । तब तब के  
 मिलकर कहा—साहजी घोडी खनीकक थी घोडी तो उड़ गई । साहजी के  
 ने कहा—बाठ बकी है । लीमां ने कहा—(एक यह घोडी तो गई थी गई) दूधरी  
 की बरतक ३०००० रको । जो भाग बर बने बहता । बर ५ ६ दिन बाद

४२४

परिचा मीना रिगसता रिगसती भायी । नाक साय ही भाय  
 भाय बेसे । लोक वाहुडीयो । श्रीयो घोलीयो साहजी घोड़ी रो  
 प्पम् हूयो । कहीयो सोमा घोडी उपन गई । कहीयो राजि  
 पम् ही कदेरे उपनायी । कही उपन नही प्पम् हूयो । कही पोरे  
 कही । साह कही रे पोर क्यू करि कडे । इसि कहीयो हूँ कोह  
 गीताली काइ । कहीयो क्यु करि । कही ये क्यु मुता हुता ल्यु सूयो ।  
 मु हही बाकि ने सूयो । जाणी ती मोनु जीम सुँ काहेभ्यो । मु हही  
 मनी इलेतो । उलेली ती परम ती अण छे । युँ करि मूता क्यु  
 हुता ल्यु । इये मीनया मोइ नै कहीयो । पछे बदि नै केरू परहा  
 करि नै छरीयो ।

करि नै सिद्धाणे हूँ क्यू लीयो । सेने वाला उलेलीया ।  
 उलेलि नै घोडी भागै गयो । वे लगाम नै सोसि माची नै घोड़ी

ये सब एक दिन दुपहर के समय बीबा दूल्हा-दूल्हा बहलं प्राया । सब  
 पावनी धा पावर बैठ रहे थे । लौम मीन गये । बीबा कहने लगा—छात्री  
 घोड़ी का क्या हुआ ? कहा—बीबा घोड़ी मन्तर्जनि हो गई । बीबा ने  
 कहा—मगारज । पन्तु भी कभी मन्तर्जनि हुए हैं ? छात्र ने कहा—यदि  
 मन्तर्जनि नहीं हुई तो क्या हुआ ? उतने कहा—बोर ने निकलत नी ।  
 छात्र ने कहा—यरे बोर किस तरह निकलत सकता है ? उतने कहा—  
 मैं बैकडे-बैकडे निकलत सूँवा । छात्र न पूछ-किस तरह ? उतने कहा—  
 तुम किस तरह लोवे हुए थे बीने लो जापो । मुह इककर सोपो । यदि  
 मानून हो काने तो मुके बीब से इयाण कर देना । मुह मय बोपना ।  
 मुह सोनी लो घब की सोमय है । इन तरह करके छात्र को ब्यो सोया  
 हुआ वा लो मुया रिया । यह बीब काइ कर बघ । कदने के बार  
 प्पनर को दुर करके उण ।

उतर कर सिद्धाणे से बाबिया ली । लैकर लाने छोये । लौल कर  
 घोड़ी के घबे ग्या । लगाम लबाकर, माया इयाकर, घोड़ी बर

धाड़र काठी । अदि नै अपुठा किवाइ लड़ीया नही पोड़ी असवार  
 हुइ नै बजाया । पोड़ी लेने देखना आगे बहोर हुबी । ग्राह पिण  
 जीम निपक्षिपाठो हीम रहो । कुसल खेमे घोड़ी लेने घरे आया ।  
 घोड़ी बेची साल साल छपना । बेठा साहिबी कीजे । मद् पीजे  
 इम गपार्इजे । इमे समीये माहे बैठा एक दिन जीमै छै । सीबा  
 री बेर बोली । बीजाजी क्यो बयु भाभी । एक तो अपन  
 याहरी नाम हुतो सु ये की पिण जे पाटण इहो छै सबा कोइ रो  
 सतपुग रो इहो ये आँखों ती ये बड़ा पाइबी । इया बल्ले देखि  
 नै क्यो भाभी जे हिचे इहो धाड़र मुइदा आगे आखिस्था तो  
 धारै मुडा आगे जीमस्या ग्राहरी साहूधर हुआ बड़ो लबेस  
 करि धाड़रै स करि बहिरे छै स्वार करि । कपडो ले नै आक्षीया  
 साहूधर करि क्यो साहिब ग्हे परदेसी आकर छौ म्हातु एक

निकामी । निकाल कर पीछे से नित्राङ्ग बन्द नहीं किये । घोड़ी पर लवार  
 होकर बन गया । घोड़ी को लेकर टैलते-नेबते मुह के घाघे से बाहर  
 निकल गया । ग्राह जीम मपनपठा ही रह गया । सीबा घोड़ी लेकर  
 घर आया । घोड़ी बेची, लाख-लाघ रुपये देता किये । सीबा बैठा  
 साहिबी करता था । घर पीठा था हमों से पीठ गवाठा था । इस समय  
 बैठा हुआ एक दिन जोरन कर रहा था । लीके की रती से पूछ-उब  
 बीजे नै बहा-क्या बानी । एक बात ती तुमने ऐसी की जितते तुम्हारा  
 नाम अपन हो गया लेकिन पाटण में जो सबा कोइ का सतपुगी  
 कसय (पंदा) है उतको से घायो तो तुम बड़े ग्राह हो । इहने फिर लोबकर  
 बहा-आबीजी । अब कसय (पंदा) तुम्हारे सामने लाकर रखे तो ही तुम्हारे  
 सामने जोरन करेये । अब उन्होंने साहूधर का बैठा बनकर बैस घोर ऊट  
 तैयार किये । रुपये लेकर बने । किसी साहूधर से बहा-साहब हम परदेसी

इसकी ठोंक को मु एक ही आदमी बैठे रखवालो । ताहरां बैहरां में  
 ए हाट छै तय डेरो दिरायी । उअर बीसी सात पीकी छिरै । उअर  
 ए हुकम हुयो । ताहरां साह कमी म्हानु अपूठी हाटां यी ।

[ताहरां पूठ री हाटां कीयो । छठै रहै । अठै रहत। करतां बरस  
 १ हुयो ताहरां गोहरौ बपो एक पाखीयो । पाखि न हाटा ही नै  
 सम्यह । सम्यह गले भमर बोरी बाधि नै सम्यह । सम्यह नै  
 साहरां पोह माह रा दिन आया तरे एक दिन आपी रात  
 अमावस रै दिन से परमेसर री माम नै गोह बहाइ । कहीयो  
 ई दो खवारख समान बज्जलीअसी । ई दो हीरा माणिक खड़ीया  
 छै । साहरां पडलौं कीयो विण करि माहिं कीयो बीठो मूकि  
वीनौ नै ऊपरा मैख कपड़े सु अपेटि नै पट सु बाधि नै बीनौ  
बहीयो । जिसडे पीकी घाला आवे तरे बैहरां नु सागि रहै ।

गौकर ई । हमें एक ऐस्य स्वान को बड़ा एक ही आदमी रखवाली पर बैठ  
 रहे । तब बड़ा मन्विर भी हुकम भी बड़ा बैरा दिलाया । उसके बाटें थोर  
 सात बीठीयारों का पहर था । बड़ा का हुकम हुआ । तब इन्होंने कहा—हमें  
 पीछे भी हुकमों हो ।

तब पीछे भी हुकमों हीं । ये यहाँ रहने लगे । बड़ा रहते हुए जब  
 एक वर्ष बीत गया, तब एक गोहरे का बच्चा पाला । पालकर उसको  
 हुकम में ही ब्रित्तया । सिखाकर बने में भँवर-बोरी बांध कर सजाया ।  
 सिखाने के बाद जब पोह-माह के दिन आवे तब एक दिन अमावसा की  
 आधी रात को परमेसर का नाम लेकर पोहूत बहाया और प्रापस में  
 बाठपीठ भी कि कलश बजाते समय पहरान लेंगे । कलश हीरा-  
 माणिकों से जड़ा हुआ था । तब एक पड़लूत बनाया । लेकिन  
 उसके पन्वर रजा हुआ बीरक बीच रहा था, इसलिये ऊपर मोपजाने से  
 स्पेद कर पड़लूत बाँधकर बीजा बहा । जब बीनी बाला घाटा तब

बाँकीदार जाइ नें बलें बटे । यूँ करती करता जाइ पहुँची । पहुँच न  
 पड़ी बाजपो पकी मारै तरें धीरी ठड्कावे ] बने पकीयाल बाज  
 तर यजे धीरी सु ठड्काइ ठड्काइ नें कसस बाकीयो । बाकि नै  
 पूर कीया । कसस भाप छपेटि नै बाकि नै खियी । पकय बौर  
 नु पाइइ बरस हुआ ईं डे ऊपर नसतां भर बेस्या रे घरे रडे डे  
 भटकलीयो ईं डे नु चोर नागा ।

बाँकीदारों भटकलीयो नहीं । (उस वीजे) मकी बात हुई ।  
 उपर ती डगरीयो । म्हाइरीं हिमी होसी । इयु कहि इ डी उतारि  
 नै हाट माँई बैसि रखा । पा छिड़ी पकी हो राति हुई तरें बरबाज  
 जाइ ऊमा । बरेबाज नु कसो दाबडो बरस दोइ री फीत हूबो  
 छ । उपाकि । इयु कसो हूँ उपाईं नहीं । ताइरां रुपिया दोइ काहि

मगिर के चिपक जाता । बाँकीदार के बाने पर फिर बड़ता । वों कले  
 करतै वा पठु वा । पडु बने के बार बड़ियाल बजाने बाना जब बड़ियाल  
 बजता तब बड़ छीली ठड्का देना । जब फिर बड़ियाल बजा ती फिर  
 छीली से झुटा-उठ्का कर कसरा निघाम लिया । निघाम कर दर रत  
 बिया । कमरा घन्ने घीर के कपड़े से लगेट कर बाँच लिया । एक दूसरा  
 चोर बाजु बर से कमरा के लिए कोठिया कर रहा या घोर बड़ बेस्या के  
 बर रहता वा । वहाँ से उतने प्रगुनाम लिया कि कमरा के तो चोर  
 मर बने ।

बाँकीदार इस बात को ताइ नहीं सके । उनने ( चोर ने ) देखा-बाँकी  
 बाज हुई । हुनरे न उताप । घोर घैच भी हिस्सा होमा' वों बह कर ईं दा  
 उजार कर दुनाम में बैठ गया । जब राति के अन्तिम हो पूर बाकी रहे, तो  
 बरबाजे के घस बाकर चला हो गया । दरवान से बह-यो बर्य क्य एक बजा  
 बजता रहा दिवाइ बानी । उनने कस-दिवाइ कोठुँवा नहीं । तब से

शीघ्र । तबे लिङ्गकी उपाधि दी । श्री नीरुलिया । छायां पुत्राई नै  
 कही म्हारा साथी नीरुलिया कही जी श्री हो जाइ । चलीया  
 चलीया मसाण नीडी छै । उथ गया उथ जाइ नै ऊमा । तिसडे  
 पांसलो जोरि कपड़ा नाकि म्हन म्हन आइ नै सूतो । ताहरां  
 कही शीघा जी मुइ भाएण छै । कही भाएण छै । ताहरां नाबी घा-  
 रे बीच जाइ नै बोलीया कहीयो इण सगलां मङ्गां रे इवि कटारी  
 ये मारी । इयां दिवरांरे । उये दिसरांरे इ मारु छू । ताहरां कटारी  
 मारी । जोर उये रे छागी ताहरां बोलीयो ही नही । कहीयो  
 कही ओम्यबी पहीयो छै । सुण साइ नै बूरी । तरे साइ सुणि  
 नै कसस बूरीयो ।

छै बूरी नै आपरे हाटे आया । आइ बैठा । उये उठि नै  
 कसस काठि नै लपेटि नै येस्यारै पर आयो । आइ नै कसस बूरी

स्वये निकल कर रिये । तब लिङ्गकी बोस दी धीर यह निकल गया ।  
 (दुसरा) सपने में घाग मुनगा कर बोसा—वेरा साथी गया है । इरापाल  
 के बहा—मारी अभी बहा ही है । बलते-बलते मसान समोच  
 बा, बहां पहु बा । बहां बाकर बहा हो गया । इसी बीच में विद्यवा जोर  
 कपड़े उतार कर म्हन से बाकर सो गया । बीजे ने बीजे के बहा—पृष्ठी  
 बाठक है । उसने बबाब दिया—बाठक है । तब मसान के बीच जाकर  
 बीजे ने बहा—इस दिशा में इन सब मुरों पर तीरण बटापी का  
 बार करो । उन गिटा बालों के में मारता हूँ । बीजे ने उत्तर  
 दिया—इन दिशा में मैं बार करता हूँ । तब बटापी का बार किया ।  
 जो बहां जोर या उसके लगी पर यह बोला नहीं । बीजे ने बहा—बहीं  
 पांड की आई—पड़ गई । जोरकर बहूँ को पूर दो । ज्हंनि घग्ना जोर  
 कर कसस पाड़ दिया ।

उसको पूर कर स्वयं हुमान पर घा मये । बाकर बैठ गये । धीर यह  
 (जोर) उठ कर कसस निकलकर, लपेट कर बेरपा के बार आया । बाकर



मैं दिय रहो । मास पूबी । बीबे री ज्योति मंड पड़ी । ज्यु दिन  
 बढख जागो स्यु स्यु बीबा री ज्योति मिटती गई । ताहरां सोच  
 कहीयो बड़जो, ई बी नहीं । लोक पकट्य हूवा । कहीयो चोर  
 ई बी कत रीयो । राजा नु कबरि हुइ । पकट्य शहर रे चौराभे सह  
 भेखा हुआ । चारै ही हैईकार हूयो । राजा क न साइ नहीं । लोक  
 सरम हहाकार करये जागो । ताहरां बीबी नै बोसो बोलीस्य  
 धाडुरे इठते कंस सोच करी थी । आगे ही कही क्य आदमीयां  
 हीअ कसस करपी हुयो पक्षे कसस नबो करायो कर पांच हजार  
 रुपियां माइरा न्यो । फेर ई बी करायो बीबा ही साहूधर रुपिया  
 यो । राजा इठरी बात सुणि नै बहुत राखी हूयो । पबो सुल  
 पायो । प्रधानां क्यदारां बिचार नै राजा सु बीनती थी । महाराज  
 दिने कससुग आयो । ई बी पायर री फयई जे । राजा बात मानी  
 पासांय राई बी करायो ।

बलघ पाइ कर दिय रहा । पी कटी । बीक की ज्योति मंड पड़ गई ।  
 ज्यो-ज्यो दिन बड़जा गया त्यो-त्यो बीक की ज्योति मंड पड़ती गई ।  
 सब लोगों ने बहुत-बड़ा है ईका नहीं है । लोग इष्ट हूए चीर  
 बहने लगे-चोर ने ईका उठार लिया है । राजा को कबर हुई । शहर के  
 एक चौराहे पर सब इष्टे हुए । सब कम्ह हहाकार मन गया । राजा ने  
 धम-धमी छोड़ दिया । सब लोग हहाकार करने लगे । सब चीबे-बीबे न  
 राजा है बड़ा-राजा । इठती पिता क्यों कर रहे हो ? बहने की तो नहीं  
 के आदमियों ने कसस बड़वाया था, फिर नया कसस करता तो  
 चोर २० ०) रुपये हमारे को फिर ईका करवायो हुबरे  
 साहूकार (जी) राखे हैं । राजा इठो बात सुनकर बहुत गुठ हुआ ।  
 बहुत बुधी हुआ । प्रबल बरोठे ने विचार करके राजा ने जिनती बी-  
 पाहाकर । सब कमिपुय जाग्या ईका फयर क्य बनवाला बाधिये । राजा ने  
 बाल बाल की चीर कबर वा ईका बरसा मिया ।

दिन २ ५ ६ भरसा पड़ीया । ताहरां खीबो बीघी बोनीया  
 आरी ईंडी जोह आर्वा । परमाव रा खे स्रोत्ये मैदानां रे मिस  
 नाही गया । आगे धसै तो स्नाह माली छे । बीघी बोलीयो खियां  
 में ती क्यो मु इ मारण छै । कहीयोस पिबायी छै । सहर माह  
 हीज छै । पाछा आया इयां नै कहीयो एक बाजार मू बैसि । एकै  
 हूँ बैसू । अर बाजार माहें जिन्हे पुतंयां मू ग । सरो मास ।  
 फूलदारु । जिन्हे मोसावै सु मोषी । इयुं करवां बाजार माहें फिरै  
 कपडा मोसावै । इयुगी कणगी जोबै । खबरवारी करै । इयु करिता  
 सीसरा पहर री बैसु बैस्या सिणगार करि नै बणाव बणाइ नै बाजार  
 माहें आइ नै पुतंयां मू ग पूछीया । खीयो बोलीयो बीजा आपणै  
 पुतंया मू ग न छै । कहीयो आपे ती बेयां मही । कही रै पाव  
 थोपै तु बाहीजे । कहीयो पाव थोपै तु ती र्पां लड़ी छै ईज

२ ६ दिन वा घरा हुया । तब लीबे-दीबे ने बापस में सनाइ की-घाघो,  
 ईंदा देन धारें । धाउनाल के समय लीब के मिस लीज नैकर पठान में  
 बने । घाघे जाकर देखा तो लडका बासी पड़ा है । लीबे ने कहा—बीबा !  
 लीबे तो कहा था, पुन्नी बाठक है धीर पुछ—उसे कहनाले हो ? घर में ही  
 रहता है । बापस धाबे धीर लीबे ने कहा—एक बाजार में तुम बैठे, एक घं  
 में बैठे हूँ । धीर बाजार में बुतना मू ग, मण्डा मांस धीर फूल खण्ड क  
 थो नील कठबे, उस पर निपाइ रखो । इस तरह देखनाल करते हुए  
 बाजार में घूमते धीर कतई की दर पुछते रखे थे । इधर-उधर निपाइ  
 रखते धीर देखनाल करते थे । इस तरह करते-करते लीबे पहर बैसा ने  
 गृहार कर धीर बन-लकर बाजार में घाकर पुतने मू ग पूछे । लीबे ने  
 कहा—बीबा ! घने पहां पुतने मू ग है न ? उसने उत्तर दिया—घन  
 तो बैबे नहीं । उमने कहा—घरे । पाव थोने के मियु बाहिय । उमने

लगाबी जे भर तुरत पाव मिलै । तरे बस्या सांमसीयी । कहीयो  
 अस् कहीयो आ । कहीयो जी जको म्हारै छै तिसु पाव तुरत  
 मिलै । बेस्या सोई जनै डरे मु खाली ।

बांसे खीबो बीजो ही खालीया । बेस्या जाइ घर मांहे पैठी  
 बांसे खीबी बीजो ही फेठा । बेस्या रें बांसो बांस ही अ गया ।  
 आगे ठकुरासा पाटो यांपी सुतो छै । तिनैरे खीबी बीजे राम राम  
 कीयो । तरे ही छलखीया बबा ही जलसीयो । ताहरां खीबी  
 बीजो बोलीया तें दुरो काम कीयो चोर रो जाबो मही ।  
 इसी पाव कोई करै । या तो सरमरी पाठ छै । बडो  
 चोर होइने पाव कोई खीया । इये कहीयो हुइयो । जीमठ करायो  
 भला रहपा पगो मुन्न करि । बिदा मांगि डेरै गया । दिन ५ ३ ७  
 हुआ । ताहरां खीबी बीजे बिमासीयी हिये खालीजे । जाइ राजा सु

उत्तर दिया-बाब बीने की तो वह जड़ी है ही । लगई घोर खोज बाब  
 मिटा । तब बेस्या का उत्तर प्याल भा । उसने कहा-क्या कहा भी ?  
 कहा-जी हमारे पास बड़ी है जिसके बाब बड़ी जल्दी घर जाता है ।  
 बेस्या सीध लेकर डेरे को चली ।

उसके पीछे पीछे पीया घोर बीजा भी चले । बेस्या बाकर घर में  
 चुमी । पीछे से पीया घोर बीजा भी पुने । बेस्या के पीछे-पीछे ही गये ।  
 घाने टाकुर पट्टी बाबे सोला हुपा बा । बाकर गीरे-बीजे ने राम राम  
 किया । उसने इनको पहचाना घोर इन्होंने उसकी पहचाना । तब खीबे-बीजे  
 ने कहा कि तुने कुछ काम किया तू चोर का बैठा नहीं । कोई ऐसी बात भी  
 करता है ? यह तो चर्च की बात है । इनने बड़े चोर होकर तुम पापल  
 क्यों हुए ? उसने कहा-होलाहार ऐसी ही थी । भोजन कराया, एक ताब  
 रहे, बड़ा धामन्य बनाया । बिदा मांग कर डेरे गये । जब ५-६ दिन मुजर  
 गये तो खीबे-बीजे ने बिचार किया कि अब चपना बाहिये । बाहर राजा

मुजरी कीयाँ । कहीयाँ महाराज पराँ री खबर आई छै । बेटी री  
विबाह छै । राजा सिरुपाय द बिदा की उर्ये खोर कइ गेया । कहीपौ  
ईं की विहारी । कहीयाँ निहारी । ताहराँ सीबी बोलीयाँ एय बिहि  
पस्याँ नही मारबाइ माहि नै जाइ नै अय बहिपस्याँ ।  
ताहराँ ऊ खोर बोलीयाँ कितरा हँसा करिस्सौ कहीपौ तीन हँसा  
करिस्साँ ।

कहीयो ना की यु नही चार हँसाँ करिस्साँ । कहीपौ की ब्यारि  
क्याँहि रा । कहीपौकी मे पस्याँ री रहताँ बारह बरस हूवा । इये माहरा  
हीका कीया । कहीयोकी न्हाई रँ बरौ छै के हँसाँ होसी ताँ ।  
ताहराँ सीबी बोलीयाँ की बैस्याही रो हँसो करी । ईया ही खिज  
मत कीबी छै । ताहराँ बैस्याही रो हँसो करीयाँ । कहीपौ तैयारी करी  
हाजराँ री । एकत्र होइ नै हालीया छै । आनताँ आवताँ जाहरा

सं मुखप चिया । कहा—महाराज । पर सं समाचार प्राया है, बेटी का  
विबाह है । राजा ने सिरुपाय देकर बिदा किया । वे उस खोर के पास यय  
खोर कहा—ईंके के हिस्से करो । उसने कहा—यहाँ करो । तब लीबे ने कहा—यहाँ  
नहीं करोगे मारबाइ में बमकर हिस्ता करेये । तब उस खोर ने पूछा—कितने  
हिस्से करेये ? उन्होंने उत्तर दिया—तीन हिस्से करेये ।

उसने कहा—नहीं बी इत तख नही चार हिस्से करेगे । उन्होंने  
पूछा—चार कितके ? उसने कहा—की मुख बैरपा के पास खते हुए  
१२ बर हो बये । इसने बेटी सेवा की है खोर बेटी की ही है, इसलिए  
इसका हिस्सा रहेया । तब लीबे ने कहा—बच्छी बात है, बैरपा का भी  
हिस्सा रहेया । इसने भी सेवा की है । तब बैरपा का भाप भी निरिषय  
हो गया । कहा—बच्छा बजने की तैयारी करो । इबट्टे होकर सब बन  
गये । घाने-घान तब रानीबाइ प्युधि नब बीजा बजून मगा—नीचनी

दाँतीबाई आया ताहरां बीजे बोलीयी स्त्रीया जी इण भास्तु  
 वृष पावो काई नही आया ही केय लेजाहरयां । बेहूँ चाखि नै  
 इण कम्हे आइ बैठ । इये विद्यावर्णां कीया आइ बैठ । देखि मे  
 क्यो इंडी बाँटी । स्त्रीयां बोलीयी बाँटयो कंत्रु । विरह भाग  
 इकरिस्यां । ताहरां नाबिणबालो बोलीयी मा भी थां कहीयां  
 हुती । इये मु इतरी मु इ बाँहरे कहीमे आंली । द्विपे नां क्यू  
 कही । जितरी आपस मे असरबी हबी । आपस में बोतये लाग ।  
 ताहरां स्त्रीये कटारी काडि मे घाही । ५६४

दितरे बीजे विख कटारी घाही । चोर मारि मास्त्रीयी ।  
 तितरे नाबिण बोली हाइ हाइ क्यो हूँ ऊबरु । क्यो तुनु बसे  
 एलि मे काँई करिस्यां । ताहरां नाबिण तु ही मारी । मात्र से मे  
 पोर्क परे गया । पखा अमल करिया । दिन ५६७ रखा पखा इम

इत घाई को रूप क्यों नहीं दिखाते ? माने बहुत से बाघोये ? दोनों  
 चलकर इसके पास जा बैठे । यह विछीना बिछाकर बैठ गया । चौक  
 देलकर कहा—ईडे के हिस्ते करो । धीरे मे कहा—हिस्सा क्या करना  
 है ? तीन बड़े हिस्ते कर मेंये । तब नरुंरी बाला चोर कहने लगा—  
 नहीं भी, तुमने कहा न बा । इतको ( बैरया को ) इतनी दूर तुम्हारे  
 कहने से ही तो लाया हूँ । पर इतार क्यों करते हो ? इतने में आपस  
 में तकरार हो गया, बोलचाल हो गई । तब स्त्रीये ने कडाँटी निकाल कर  
 प्रहार किया ।

द्वि बीजे ने कडाँटी बचाई । चोर को मार डाला । तब नरुंरी  
 ने हाहाकार किया चोर कहने लगी—मुझे बचाओ । उन्होंने कहा—  
 फिर मुझे बचाकर क्या करेंगे ? तब इत नरुंरी को भी मार डाला । बाल  
 लेकर दोनों घर पहुँचे । गुरु घतबल रहें । ५७० दिन रहे । इनमें मे गुरु

गवाया । ताहराँ सीजी बोलीयो सीबा म्हानु सीब र्छी वपु परे  
 खावाँ । कछो वाह वाह । ताहराँ सीबो बोलीयो जी म्हारी पढ़ाई  
 यो । कछीयो जी पढ़ाई क्याँह री । कछीयो जी म्हारा पर सु  
 पछीया म्हारी पाहर घानु मूकिया ठै म्हारी पढ़ाई । कछीयो जी  
 इतरा दिन ये की न स्याया । अर पहिसाँ माँहीअ पोड़ी अँणी  
 म्हाँ पहिल की । घानु पढ़ाई क्याँह री । पछे आपस में असरबी  
 हूथी । म्हाबीया । पछे पंचे गमा । पंचे देखि नै कछो कुरदाँतली  
 रा ईँबा स्याबी तेरी पढ़ाई । ताहराँ एकै पीपज री माँली हेरि नै  
 आपा पाखिली राधि पढ़ी ४ यकाँ बोझुदीयाँ नु तोडि नै बेसाँ  
 योया । कुरदाँतली बोली ताहराँ सीबे बीजे न कछो न ईँबाँ  
 स्याव ।

बीजे कछो जिंके नु अथिके री वाह हुसी तिके पढिसी ।  
 ताहराँ सीबे खाँपीयो पहिरी पलकट कसि नै कापर ४ पलकट  
 माहे कसि नै पीपस माह बदीयो । बीजे पिण पलकट पाधि नै

गौत गवाये । तब बीजे ने कहा—सीबा मुझे बिना दो जो बर जाऊ ।  
 उसने कहा—वाह ! तब सीबे ने कहा मेरी पढ़ाई मुझे देकर जाओ ।  
 बीजे ने पूछा—पढ़ाई किस बात की ? उसने कहा—मेरे बर से निकले  
 मेरी स्त्री ने तुम्हें भेजा, इसलिए मेरी पढ़ाई । इतने दिन तुम कुछ भी  
 नहीं ला पाये । बीर पहले मैं ही पोड़ी लाया—मैंने ही पीपलछे किया ।  
 तुमको पढ़ाई किस बात की ? बीजे घालछ में तकरार हो गया । दोनों  
 अपने-बीर बाह में पंचों के पाठ दये । पंचों में देखकर कहा—जो कुछ  
 लाँतली के घडे लावे, उठी की पढ़ाई । तब एक पीपल के अन्तर पोषला  
 देह कर पाये । जब बार पढ़ी राठ बानी बनी, तब शाखापी को छोड़कर  
 बैठ गये । जब कुरदाँतली बीसने लगी तब सीबे ने बीजे से कहा—  
 जाँपो घडे लाओ ।

बीजे ने कहा—जिसको ज्यादा वाह हुआ, वह बड़ेना । तब सीबा  
 बाँधिया पहनकर कमर कसकर, कमरबन्द में ४ कापर लपेट कर पीपल  
 पर जा बसा । परन्तु सीबा भी कमरबन्द बाँध कर बना । एक तरफ़ सीबा

हासोयो । एके दिस स्त्रीयो बड़ीयो एके दिस बीजां पड़ीयो । स्त्रीयो जाइ नै काँकणीमार रा ईं बा लेतो गयो अर पीजे मवर काँकणीमार अर स्त्रीयो दोनु पर एल स्त्रीयो काबर मेसिह अर ईं बीं सै । अर बीजो स्त्रीये री पलट माहे मीगणो मूके अर ईं बीं सै । पु अरतां ४ मीगणा मूकिया ४ अ बा स्त्रीया । जे अर एके दिस स्त्रीयो उतरीयो पीजे दिस धीजी उतरीयो । बेने गांम आया । आबने पञ्चां भागे आया । कड़ीयो स्यापी । ताहरां स्त्रीये अङ्गीया । देसै तो मीगणां । ताहरां पीजे अङ्गी मी ईं बा दिया । ताहरां पञ्चां अङ्गी ईं बा स्यापी तेरो अधिको ईंसी । ताहरां बीजी बोक्षियो जी हाको आबो-आप बहिच लेस्यां । हेरें आइ नै आबो-आप बहिच दीयो । आपस में बड़ी पीठी की पणो हरस करि मी बीजी सोमिअ आयो । स्त्रीयो नाहन रणो । सुसै समापे यिससै अ । पीजे स्त्रीये री पाठ सम्पूर्ण । श्री ।

बड़ा, एक तरह बीजा बड़ा । बीजा बाकर काबर रखता गया और बंभमार अ ब बा लेता गया और बीजा बाबर और पीजे दोनों पर निपाह रखता गया । पीजा बाबर रखता और बंभ लेता । और बीजा स्त्रीये की शपेट में ढकके मीगण बालाज आता और ब बा लेता जाता था । यों करने-करते उसने बार मीगले छोड़े और बार घड़े से लिये । लेकर एक तरह तो बीजा उतप और दूसरी तरह बीजा उतप । दोनों पार में घाये । अपने पंखों के सामने पहुँचे । पंखों ने कहा—मायो । तब पीजे ने निकाले—देखा तो मीगले ॥ तब बीजे ने निपासकर घड़े रिये । तब पंखों ने कहा—जो ब बा माया है, उसका हिस्सा बाबिक है । तब बीजे ने कहा—बलो, आपा-आपा कर लेंगे । हेरे बाकर आब-आपा हिस्सा निपा । आपस में बड़ा प्रेम रजा । बहुत हँसि होकर बीजा सोमिअ आया । स्त्रीया नाहन ए । अवन—नै ले एने लगे । बीजे स्त्रीये की बाग गमलन ।

## अथ वात राजा मानधाता री

राजा युवनाश्वर राजा अश्वमेध की बहिन परखीयो । राजा युवनाश्वर मर्यो राजा बही राजधानी राजा युवनाश्वर र पुत्र नहीं । तीर्थ करि राजा सुधीन रहे । ताहरा राजा रिपोरधर री सेवा करे । एक दिन रिपोरधर महिरवान हुआ है । राजा नु संतुष्ट हुए न पाणी मंत्र बीयो है । पत्नी राजा को पाणी राणी नु पार करे पुत्र हुआ । ताहरा हरमिठ हुआ है । पाणी रो प्यालो भाण राणी नु मेम्ह बीयो है । राजा नु बात बीसति गई । इनरो कडाहीयो नहीं नु पाणी राणी पीयो । ताहरा प्यालो पाणी रो आदमी खाइ राणी नु बीयो राणी पाणी रो प्यालो कमर डमर मेनाइ मी बघाड नै म्नायो हीरो राजा कही मने मेम्हीयो है नु भापे कहिसी । राजा गति महलां मडि पचायीया है । पचायीया है । ताहरा भापी रावि

राजा युवनाश्वर का पररवान की बहिन से विवाह हुआ था । राजा युवनाश्वर बड़ा राजा था और उसकी बही राजधानी थी । राजा युवनाश्वर के कोई पुत्र नहीं था जिससे वह चिन्तित रहता था । इसविषय राजा ने शरीरवर्तों की सेवा की । एक दिन शरीरवर्तों की सेवा हुई मन्त्र होकर बहूने मन्त्र से पवित्र किया हुआ जल दिया । पत्नी—राजा यह पानी राणी को दिया, तुम्हारे पुत्र होगा । तब राजा इतना हुआ । पानी का प्याला नाकर राणी के पास रख दिया । राजा बात करता मन्त्र गया और यह कहा नहीं कि हे राणी ! यह पानी तुम पीना । अब जल का प्याला नाकर मैं बाहर राणी को दिया तब राणी ने जल का प्याला बगल के ऊपर रखकर कहा कर छाड़ दिया । सोचा—राजा ने जिन बाले रखवाया है जो मन्त्र ही कहेंगे । राज की राजा मन्त्र में



पाक्षि म्हे सत्यां दुस्वां थ टाबर पालिम्ब्यो । म्हासु न पत्ते । थ  
 पाक्षिस्वो । ताहरां प्रवान मुइता सरन एकठा हुवा । राजा नुं सत्यां  
 ३ साये मज्जल पहुँचायो । राजा रो कस्य कीयी । पुत्र रो नाम मानघाता  
 कीयो । टीको राजा रे कीयी । जाहरां राजा बारह बरसां रो हुयो  
 ताहरां मां नानाये गई । राजा अजयपाल ले पगे लगायो छे ।  
 हिने राजा अजयपाल कइए राजा मानघाता रहे । अजयपाल मामो  
 छे।माम्यां रा मुजरो करे । एक दिन राजा अजयपाल रो राजकोक  
 राही रे डेरे एकठो हुयो छे ।

सिसे समीये माहे माणोज मानघाता जाइ मुजरो कीयी ।  
 राँस्यां कइ छे माणोज पके समीये थारे मामो जी नुं ए पूर  
 खुसीयाल करि, केवल भर पूदे माहाराजा मोइल माहे पभारी छी  
 ताहरां नीसासा कपुं नामो जो इतरो थ्येरो म्हानुं ले वेई । राजा  
 मानघाता राजा अजयपाल मुं खुसिमाख बनि नी चीनठी कीपी

हुम सगी हौनी । हमने बच्चा न पनेया तुम्हीं पालता । तब सब  
 प्रवान मग्यो इच्छे हुए । सतिवों के साथ राजा को बहूमि  
 में बहु जाया । राजा का अन्तिम संस्कार किया गया । बेटे का नाम मान  
 घाता रखा गया । राज्यत्रिक किया गया । जब राजा बारह वर्ष का  
 हुआ तब ही लेकर निज्जान गई । ठमे राजा अजयपाल के बरख एत  
 करवाये । जब राजा अजयपाल के पास राजा मानघाता रूना । अजयपाल  
 मामो छे । मामियां को मानघाता प्रवान कछा । एक दिन राजा अजय  
 पाल के राज्यकोक राजी के डेरे में इच्छे हुए ।

सब समय मानघे मानघाता मे धाकर प्रणाम किया । राजीके मे  
 कहा—जापने एक समय तुम अपने मामाजी मे पूजा, कुछ करके घोर  
 कवन लेकर पूछता कि महापत्र ! जब धार महान में पधारो है, तब  
 निज्जान क्यों छोपे है । इतना खीर हूँ धाकर देता । राजा मानघाता  
 मे राजा अजयपाल ने कुछ देवार जार्जना की कि मामाजी एक दिनठी

मामाजी एक बीनोटी छै । ताहराँ क्योँ भाणोज कहि । मामाजी खेल  
 योँ तो क्यूँ । ताहराँ कोन दोयो । ताहराँ भाणोज कहे मामाजी  
 रापले परे बदा बदा बसोता एरयोँ बेठ्योँ छै । नै महापञ्च  
 राणीयोँ में पघारोँ ताहराँ निसासा बसु मेसोँ । ताहराँ या बात सुखी  
 राजा अजयपान्त भायो पृथीयोँ । नै मानपाता तँ बुरा कीबी या बात  
 पूछी । या बात पूछणी न थी । अर पूछीयोँ तै मो कन्हा कपल  
 सीयोँ अर बात पूछी तो जाइ मै महल माहे ऊँच छै सु से आव ।  
 मानपाता महल माहे जाइ मै काँब नु हाय पालीयोँ । काँब छै सु  
 हाय पातव समान बीज दौली फिरि गई ।

मानपाता नु से उठी छै । सात समदय रँ पार छवरयोँ छै  
 राजा मानपाता कीठो जाइजे केथ ताहराँ एक मारिग दीठो । तीयोँ  
 मारिग पालीयोँ । आगे आबे इन्ने छोँ तपसी क्यार पैठ छै । ६ पूयोँ

६ । उन्ने कहा—बही मानजे । उन्ने कहा—मामा, बचन की तो  
 कह । तब उन्ने बचन दिया । तब मानपाता कहने लगा—मामाजी  
 घातके पर बड़े-बड़े देसों की बहू-बेटियाँ हैं । पर महापञ्च, जब घात  
 रणबास में पधारते हैं तब निजबास क्यों छाड़त हैं ? यह बात सुनते ही  
 राजा अजयपान्त का मस्तक घूमने लगा—(घौर बहू कहने लगा) मानपाता,  
 यह तुमने बुरा किया कि यह बात पूछी । यह बात पूछनी न थी । घौर  
 पूछी थी तो मुझसे बचन लेकर बात पूछी । तो जब बाहर महल के  
 मन्दर आ लफ्फी की है उसे से घायोँ । मानपाता ने महल में बाहर  
 लफ्फी पर हाथ डाला । हाथ छानते ही लफ्फी उसके शरीर के चारों ओर  
 फिर गई ।

यह मानपाता का लफ्फी उड़ गई । छान लफ्फी के पार उग्रप ।  
 राजा मानपाता ने सोचा कि कहीं बचना चाहिए । तब उसे एक चस्ता  
 निष्क दिया । उस चस्ते जवा । घाते जाकर देखा तो बार नरसी

पाकि स्त्रे मर्त्यां हुर्यां ये टाबर पालिम्बी । म्हासु न पली । ध  
 पाकिस्त्री । ताहरां प्रधान मुहता सरव एकठा हुआ । राखा तुं सस्त्री  
 साथे मज्जुन पहुँचायो । राजा रोहस्य क्षीयो । पुत्र रो नाम मानभावा  
 वीयो । डीम्बे राजा रे वीयो । बाहरां राजा बाहू बरसां री हूयो  
 ताहरां मां नानाणे गर्ह । राजा अजयपाल ले पगे लगायो छै ।  
 दिबे राजा अजयपाल क्छे राजा मानभावा रहै । अजयपाल मामो  
 छै। माम्बा रा मुन्ना रो । एक दिन राजा अजयपाल रो राजहोक  
 राणी रे डेरे एकठा हुयो छै ।

सिसे समीये माहे भाणोज मानभावा बाइ मुन्ना रो क्षीयो ।  
 राँय्यां क्छे छै भाणोज एकै समीये चारे मामो जी मुं नू पूख  
 खुसीयाल करि, क्छे छै अर पूखे साहाय्यता मोहल साइ पभारी छो  
 धाहरां नीसासा क्छु नाम्नी छो श्वरी श्योरो म्हानुं के बेई । राजा  
 मानभावा राजा अजयपाल मुं खुसिमाख रसि नि यीमठी क्षीधी

हुन सती हौनी । हमसे बच्चा न पनेवा गुम्ही पातना । तब सब  
 प्रयां मग्नी इच्छे हुए । रातियों के साथ राजा को बहूनुमि  
 में पहुँचाया । राजा का अन्तिम संस्कार किया गया । बेटे का नाम मान  
 भावा रखा गया । राज्यलोक किया गया । जब राजा बाहू बर्न बन  
 हुआ तब मां सेकर ननिहास गई । जेने राजा अजयपाल के बरछ सती  
 करवाये । अब राजा अजयपाल के पास राजा मानभावा रखा । अजयपाल  
 माना है । मामियों को मानभावा प्रखाम करवा । एक दिन राजा अजय  
 पाल के राज्यलोक राणी के डेरे में इच्छे हुए ।

उक्त समय जानने मानभावा के घाकर प्रजाप किया । रातियों के  
 बहा—जानने एक समय तुम अपने मामाजी के बुझा, कुछ करके पीर  
 बचन सेकर बुझा कि महापत्र । जब घाय म्हा न में बपारले है, नब  
 निजबाप क्यों छोड़ते हैं । इतना श्योय हमें लाकर देना । राजा मानभावा  
 ने राजा अजयपाल को गुरा देनकर प्रार्थना की कि मामाजी एक दिनकी

मन्माडी एक नीलती है। ताहराँ क्योँ भाणोज कहि। मानाजी क्षेत्र  
 योँ तो क्यूँ। ताहराँ कोल दीयो। ताहराँ भाणोज कहे मानाजी  
 एवन पर बडा बडा बेसोता राण्याँ बेठ्याँ है। नै महाराजा  
 राणीबाँ में पभाते ताहराँ निसासा क्युँ मेलाँ। ताहराँ या बात मुखी  
 एजा भद्रपभात मायो घुणीयाँ। नै मानपाता तँ कुरा कीनी या बात  
 कही। या बात पूछणी न थी। अर पूछियाँ तै मो कन्हा कवज  
 कीनी अर बात पूछी तो खाह नै महल माहे क्योँ छै सु ले भाष।  
 मानपाता महस माहे खाह नै काँब तु हाय पातीयो। काँब है मु  
 हाय पातव समान बीज डौली फिरि गई।

मानपाता तु ले रही छै। साठ समंदरा रे पार बरियोँ छै  
 एजा मानपाता दीठो खाहजे केय ताहराँ एक मारिग दीठो। तीयो  
 मारिग पानीयो। भागे आबे हेले ताँ तपसी क्यार वेठ छै। ६ पूर्याँ

है। क्यूँने कहा—कहो मानये। उतने कहा—माना कवन रो तो  
 पूरे। तब क्यूँने कवन दिया। तब मानपाता कहन लगा—मानाडी  
 एजे पर बने-बने देयोँ की क्यूँ-कैटियाँ है। पर महापत्र अब पाप  
 एजात में पयाउ है तब निजबास क्योँ छाडने है? यह बात सुनते ही  
 एजा मानपाता का मस्तक झुपने लगा—(धीर बहू बहने लागे) मानपाता,  
 यह हमने कुछ किया कि यह बात पूछी। यह बात पूछनी न थी। धीर  
 पूरे की तो मुझे बहन केवर बात पूछी। तो अब बाहर मूस के  
 एकर की लकड़ी पड़े है अति ले घामो। मानपाता ने महल के बाहर  
 लकड़ी पर हाथ बांधा। हाथ बांधते ही लकड़ी उसके धीरे के चारों धोर  
 टिर गई।

यह मानपाता का लेकर यह घरे। साठ समुंरों के पार अजाप।  
 एजा मानपाता ने सोचा कि बहने कवनय बाहिर। तब उसे एक एजा  
 निपाँ दिया। उस एस्ने जता। घामे तारार कैरा ली चार लकड़ी

है। कोई धुई स्याही है। च्यारि धुई चागे च्यार तपसी येठ है।  
 राजा जाइ अर तपसीयां नु नमसअर कीमी। तपेसरीयां कछी  
 आब भाणोज तोनु राजा अजेपाल मरहीयो है। कछी मोनु मामे-  
 नी मेरहीयो है। ताहरां तपेसरीया कछी राजा उवे पावडीयां स्याअ।  
 ताहरां मानभाठा जाइ नै पावडीयां नु हाव घाटीयो है। हाव  
 पातव समान पावडीयां ले चडीयां है। मेर गिर पर्वत पर ले  
 जाइ उवरीयो है। चागे जाइ देस्यो तो अपहरां रा महल है।  
 महल माहे पैठो चागे <sup>सुखी</sup> होलीयो विद्यायो है। अपरि सेज विद्याबख्तां  
 कसीया है। ताहरां राजा विचारीयो—इयें होलीयो कोई सु आयो  
 रहसी। ताहरां राजा होलीयो उपर सूती है सु नीव आ गई है।  
 अपहरां इन्वर रे अस्ताडे सु आयो है।

देखे तो चागे राजा मानभाठा सूता है। अपहरायां जाइ  
 येण्यां है। ताहरां राजा आगीयो है ताहरां अपहरायां कछी भाणोज

बैठे है। १ बूली है २ बूली खानी है, चार बूणियों के साथे चार तपसी  
 बैठे है। राजा ने पाकर तपस्वियों को नमस्कार किया। तपस्वियों ने  
 कहा—जानते थाओ, तुम्हें राजा अजयपाल ने भेजा है। उधने कहा—  
 मुझे मामाजी ने भेजा है। तब तपस्वियों ने कहा—ये महल से थाओ।  
 तब मानपात्रा ने पाकर सड़क पर हाव खाना। हाव खाने के साथ  
 खण्ड उठे से उठीं। मुमैर पर्वत पर उभे से पाकर उठाव। थापे  
 पाकर देठा तो अन्तरणों का महल है। महल में दुला। थापे मंच बिछा  
 हुआ हुआ था। ऊपर सेज हुई थी। तब राजा ने घोषा—इस मंच पर  
 कोई थावा रहेया। तब राजा मंच पर सां वना सीर उभे नीव आ गई।  
 अन्तरण् एत्र के अस्ताडे से आईं।

देखा तो थापे राजा जानबाना छोपा हुआ है। अन्तरण् पाकर  
 बीठी। तब राजा जना। तब अन्तरणों ने कहा—जानते तुम्हारे मामाजी

मामा मेलहीयो । कछो खी ममाजी मेस्हीयो छै । ताहरां एके अप  
 धरा भाणोज रे बरमाल भाली छै । सु अपधरा सु सुस मोगयै  
 छै १/१० करवां मास ६ हुआ । छठे महीने फोठार री कू च्यां लाया  
 छै १/१० अपधरायां कछी छै १/१० चार फोठार मतां सोलेबयो । १/१० छहि  
 अपधरायां इन्द्र रे मुजरे गयां छै । ताहरां भाणोज मानघाता बीठ्ये  
 देखां अपधरायां कछी छै १/१० फोठार मतां सोलेबयो सु हुं फोठार  
 १ चलेलीस । ताहरां फोठार १ चलेलीयो । देखै सो फोठार माह  
 एक गरुड-वंस छै । ताहरां गरुड-वंस भासीस दीन्ही छै । कछी  
 भलो हो राजा मानघाता बारे बिना संसार री यायेरो कुण्ड  
 बिसाये । मोनुं केई मरस हुइ गया हुवा यदीलायै पबीया ।

राजा मानघाता पुछै कछी गरुड-वंस ठोनु किसै पासते रोफीयो  
 छै । गरुड-वंस फहै ये हु टाकुनां री रस छै, मो ऊपर असवार

न भेजा है । उसने उत्तर दिया—जी मामाजी न भेजा है । तब एक  
 अन्धरा न भानजे के बरमाला खापी । वह उस अन्धरा क साथ मुक्त  
 भोगता है । हम प्रकर १ मास अन्धीउ हुण । छठे महीने अन्धराए कमरे  
 की चाबियां लाई है । अन्धराओं ने कहा कि ये चार कमरे मउ खोलना ।  
 यह कहकर अन्धराए तो इन्द्र का मुचण करले गई । तब मानज मान  
 घाता ने सोचा—देखें अन्धरायां ने कहा है कि ये कमरे मउ खोलना ।  
 परन्तु एक कमरा छोडू पा । देखू तो अन्धर गया है । तब एक कमरा  
 खोल लिया । कमरे में देखा तो एक गरुडवंस दिखाई दिया । तब  
 गरुडवंस ने आसीबांद दिया और कहा—हे राजा मानघाता तुम्हारा भय  
 हो । तुम्हारे बिना सवार के दर्शन कौन करजा ? बन्दीखाने में पड़े मुझे  
 ५३ वर्ष बीत गये ।

राजा मानघाता ने पूछा—हे गरुडवंस बरमालो तुम्हें किसलिए  
 रोक रखा है ? परद्वारक बहना है—मैं अपघान की सजारी में मर जाऊँगा ।

हुँ। तो टाफ़राँ री दरसण कराइ ल्याऊ । राजा गरुड-पंख उमर  
 अपसवार हूँ। गरुड-पंख राजा सु इन्द्र रे अन्धारे ले गयो छै ।  
 छै परमेसरजी रो दरसण हूँ। छै अपहरायाँ इन्द्र रे अन्धारे  
 माहे नापे छै । अपहरा नापती नापती मानघाता नै दीठी छै ।  
 तद् ताल बूझी छै । तद् कहे छै मानघाता नजर आवै छै । तद्  
 वै क्यो छै अठे मानघाता फटा सु आवै । ताहरां यु करवा अन्धारे  
 बिसरयो छै । मानघाता परे आयो छै । गरुड-पंख नु आय  
 नै जदीयो छै । राजा आवै नै साइ रयो । इतरे मै अपहराया  
 आयो छै । आवै नै अठार मंमालीया छै । बेन्ने ती ताले रो घाठ  
 सतारीयो छै । अनै क्यो राजा तालो उखेलीयो हुवा । ताहरां  
 राजा कहे मै तालो उखेलीयो हुवो गरुड दीठा हुवो । ताहरां राजा  
 कहे कू भी सरही लीपी । छै मास लग कू भी मल राखी छै ।

सवार हो जायो तो तो मैं तुम्हीं भगवान् के दर्शन करवा लाऊ । राजा गरुड  
 पंख पर सवार हुआ । गरुड-पंख राजा को इन्द्र के अन्धारे में ले गया ।  
 वहाँ भगवान् के दर्शन हुए । वहाँ अन्धारे इन्द्र के अन्धारे में नाप  
 रही थीं । अन्धारों ने नापते-नापते मानघाता को देखा । तब ताल बूझ  
 गई और वहाँ से मानघाता नजर आता है । तब दूसरी अन्धारों ने  
 कहा-हुआ मानघाता वहाँ वहाँ में आता ? तब मैं करले हुए दरबार बिसरित  
 हुआ । मानघाता पर आया । गरुड-पंख को लाकर बन्द कर दिया । राजा  
 आकर तो रहा । इतने में अन्धारे आई । आकर अपने समूहमें । देखा  
 तो ताले का घाठ उलट हुआ है । इन्धारे पूछा—राजा तुमने ताला  
 ताला का ? तब राजा ने कहा—मैंने ताला उलट का । गरुड देखा था ।  
 तब राजा ने बाबियाँ आरिष ली थीं । ६ मास तक बाबियाँ अपने पास रहीं ।  
 हमने बाद जब सब अन्धारे बहने लगीं—हमारे की बाबियाँ रण आपी

पक्षे एक दिन सरव अपहरण बोलियाँ कोठार री कृषी मेन्ह  
 जाते । आगे कृषी बोली लागी छै । ताहरं कृष्या राजा  
 तु दीयाँ छै नै कसौ छै राजा तालो मतां सोने तालो सोल्या  
 वाते कुस्त्राय हुसी । ताहरं कसौ नही सोख । राजा बिचारीयी  
 अपहरणया टाले छै मु कोठार मतां सोना । मु ह ओइस तु माहें  
 कार् छै । ताहरं राजा तालो उम्पलीयी । देखै ती माह मोर छै ।  
 मोर कसौ धन्य राजा तु मानु संसार रो वायते लगायाँ । राजा  
 कहै मोर तो माहें कित्सा गुण छै । ताहरं मार कहै मुणी राजा  
 ह वातु नागलीक दिन्नायू पिण्य वयैषू नाग-कन्या वसि नै ऊभो  
 मतां रह । उवा माह बिस छै ते कट्ट छुँ । राजा कहै तुरव  
 आधीस । ताहरं मोर कसो म्हास्यां परत माह पेसि ब्यु न जाऊ ।  
 ताहरं राजा मोरयां परत माह पेसो सै । ताहरं मार ल नै  
 बहीयाँ छै ।

घाये बाबियां मरी लगती है, तब कृषियाँ राजा को दे हीं । राजा क  
 केकर कहा—राजा ताया मउ खोलन । ताया खोलन मे तुम्हए पहिन  
 होना । तब उसो कहा—नहीं खानूँवा । राजा ने चाबा—मनाएए टोक  
 परै है कि कसए मउ खोलना । सा में देणू वा कि इतयें क्या है ? तब  
 राजा ने ताया खोला । देख तो अन्दर मोर है । मोर ब कहा—कस्य हा  
 राजा तुमने मुझे सवार का स्थान कपया । राजा ने पूछा—हं मार  
 राजा तुमने मुझे सवार का स्थान कपया । राजा ने पूछा—हं मार  
 तुम में बीन-या गुण है ? तब मार ने कहा—हं राजा तुमने में तुम्हें माय  
 मोरू दितायू बिन्दु बह्यै नायकन्या बैलकर लड़े मन रह्या । अथयें विप  
 है इतलिए रह्या हूँ । राजा ने कहा—कभी घा जावेसे । तब मोर ने  
 कहा—मेरे पंखा पर बीटो बिलने से बनू । तब राजा मोर के पंखों पर  
 बैस । तब मोर बैकर जा ।



[पाताललोक लं गयो छै । सारी ठांवां बतायां छै । सात लोक दिखालीया छै । फेर मोर ठिक्करी हुतो तब आयो छै । राजा मोर नू ठिक्करी लगायो छै । तासा जदि नै थाप भाइ नै सूछो छै । तिवरि अपहरणयां स्वर्गलोक सू आयो छै । ताहरं कोठार साम्हो जोयो जाहरं दीठो मु तासो उलेलीयो छै । थाइ नै राजा नै जगायो छै । क्यो राजा बानु क्यो हुतो तासो मठां हस्तीयो, बे तासो क्यू सोस्यो । क्यो मँ जाणीयो या कोठार माहे क्यु छै । बेसल नू सोलीयो । ताहरं अपहरण पूंषी बरही लीयो ]  
 छ मास बने हुआ छै । ताहरां अपहरण इन्द्र रे मुजरे जावर्य साग्यां ताहरां बोलीयां पूंषी राजा तुं या थापां नही ल जावां । ताहरां कूषी राजा तुं बी । क्यो जी कोठार मठां सोलीयो । पूं कदि नै इन्द्र रे मुजरे गया छै । राजा कदि नै कोठार रो मुं हवां क्य-सीयो छै । वसै तो माहे सपतमुखो घोड़ो छै । घोड़ो आसीस रे छीयो छै । भजे राजा मानपावा नै बिगर मोनु कुण्ड छोडे ।

पाताललोक ले गया । घाटे स्थान दिखलाये घाटों सोक निम्नत्वे । फिर किस स्थान पर मोर का उस स्थान पर पापिस या गया । राजा ने मोर को अपहरण बन्द कर दिया । तामा बन्द करके घाट धाकर छो गया । इतने में अपहरण स्वर्गलोक ले आई । तब कमरे की ओर देखा । घब देखा तो तामा तुम्ह मिला । धाकरके राजा को बनाया घोर घोर कहा— राजा तुम्हें हम यह कई चीं कि तामा मउ खोमना तुमने तामा क्या सोला ? जमने कहा— मैं यह जानना चाहता था कि कमरे में क्या है ? देखने के लिए राजा था । तब अपहरण ने बाबियां बाप्पि ले लीं । फिर १ महीने लिए गए । तब अपहरण इन्द्र का मुख करके की बाने लगी तब करने लगी—बाबियां राजा को दे वा हम नहीं ले जावनी । तब बाबियां राजा का ही घोर बह—अपहरण मउ राजा । या बहकर इन्द्र का मुख करके कई । राजा ने उठकर कमरे का दरवाजा खोला । देखा तो अपहरण म तभी पास है । मोर आर्योबाँर बकर उड़ घोर बहने लगी—राजा मानपावा बने मच्छ हा तुम्हारे दिना मने नौन पुत्राया ?

ताहरां राजा कई घोड़ा तो माहे किसो गुण छै । ताहरां घोड़ो कई राजा मो ऊपर कई तीं सारी घरती प्रशिक्षणा कराऊ । ताहरां राज घोड़ो छोटि हाथ फेरि लीण करि ऊपर असवार हूयो छै । घोड़ो मृत्युलोक ले आयो छै । सारी घरती प्रशिक्षणा की । राजा तु सारा टिकारणा पढाया छै । वने टिकारणी आयो छै । राजा घोड़ मू उतरि घोड़ो टिकारण पायो छै । आप जाने सूतो छै । अपहरां इन्द्रे कारी नाटक करि गाइ नीं आयो छै । काठे सान्हां वल्ले तो कोत्रे सुलो छै । ताहरां अपहरा राजा नु कसो जी से तासो उल्लेखो । कसो जी म्हे उल्लेखीयो । तो कसो जी म्हां थानु पाजीया हवां । कसो जी सु तो म्हे उल्लेखीयो । ताहरां कृषी बरही लीयो छै । राजी मास छै राजा सुन्न मू थिलसे छै । तिवरै इन्द्रे चलाई तु अपहरां तैयार हूयो छै । ताहरा कसो राजा नु दीयां छै । अपहरा इन्द्रे असाई गयो छै । ताहरां राजा तालो उम्भलि कपाट खोलीयो छै ।

नर राजा ने पूछा—बोड़े तुम में कौन-सा गुण है ? नर बोड़े ने कहा—राजा मुझ पर बड़ो तो माये पूछो की परिष्का करावा हू । नर राजा बोड़े को मुक्त करके जीम मवावर, हाथ देन कर ऊपर कहा । पाइ उत मृत्युपाक में स पाया मारी पूष्पी की परिष्का की । राजा ने बोड़े मारे स्थान बनसाय । छिद्र घाने स्थान पर सा मया । राजा ने बोड़े ने उतर कर बोड़े को मनास्थान बाँध दिया और घात जाकर मो गया । घनराज इन्द्र के घाने नाटक करके और पाकर पाई है । कसने की पार केना गा कसरा बुना है । नर घनराजों ने राजा ने पूछा—बजों जी तुमने नाम्य भाषा का ? उनने कहा—जी कौने भाषा का । उतने कहा—जी कौने तो नाम्य भाषा । नर बाबियां बाबिय ले की और उ घान लक लयीं । राजा मुझ ने रूना का । इनके हँ इन्द्र के घनाड़े में जाने के लिए घनराज तैयार हुईं । नर बाबियां राजा को लीं । घनराज इन्द्र ने घनाड़े में गयीं । नर राजा ने भाषा गोन कर दरताना गोसा ।

दखें तो माहे गद्दी बँधी है । ताहरां गद्दे राजा न  
 तसलीम की छै । पछो छै भय्य राजा तू मोनु संसार रो पायरो  
 जगामो छै । राजा कहे गद्दे तू में कुण्ड शुण छै । गद्दे कहे तू  
 दोनु राजा अजेपाल नु भटाऊ । ताहरां राजा कहे सावास गधा  
 तै भली बात छडी । ताहरां राजा गद्दे नू बाहर कडीयो छै । राजा  
 गद्दे असवार हुबो छै । गद्दे उडीयो सु अजमेर आयो । ताहरां  
 गद्दे उकरडी बीठी । ताहरां राजा नू तामि मै गद्दे उकरडी  
 लुनीयो । गद्दे अरठा हुवां गद्दे ठीवां गद्दे जाइ मिलीयो ।  
 ताहरां राजा उठि मै गद्दे नु लेख गयी । गद्दे गद्दे मिलि  
 जोइ रखी गद्दे अज्ञोप डूयी । राजा अजमेर सामो आई  
 गयी । ताहरां राजा किको गद्दे पकडे सु अजमेर नु बोडे । राजा  
 अजेपाल रे पगे लागो । राजा मानवता सँ अजेपाल मिलीयो ।  
 पछो इरस्य कीयो । कइयो जायो मस्का नु सखाम करी ।

देखा तो पत्थर पक्का बँधा है । तब पछे के राजा को लजाम  
 किया भीर बह—हू राजा, तुम बय्य हो कि मुझे संसार के दर्शन  
 करणे । राजा ने पूछा—गद्दे, तुम्ह में कौन सा कुण्ड है ? गद्दे ने  
 कहा—मैं तुम्हें राजा अजमेराल ने मिला हुआ । तब राजा ने कहा—  
 साबास रे गद्दे, तुमन अच्छी बात बनी । तब राजा ने गद्दे को बाहर  
 निकाला । राजा गद्दे पर नवार हुआ । बच्चा ठस ली अजमेर आया ।  
 तब गद्दे ने एक पूछ देता । तब राजा को बटक कर गद्दे बुरे पर  
 मोट गया । जहाँ बच्चे था रहे व उन पद्यों में जाकर बिन गया ।  
 तब राजा उठ कर बच्चे को लेने गया । लेकिन बच्चा पद्यों में बिन  
 गया था । इसलिए राजा बिन गद्दे को बचकना बड़ी अजमेर को बीठा ।  
 राजा देखा छु । तथा अज्ञोपान हो गया । राजा अजमेर आया ।  
 बाहर राजा अजमेराल के बरलासठे जिने । राजा मानवता ने अजमेर  
 पान किया । जने बा हई हुआ । कहा—जायो मस्का नु सखाम को  
 जगाम करी ।

ताहरां माम्यां नु मन्नाम की छे । ताहरां राजा अत्रैपाल मानघटा नु याव पूषी । सारी हकीकत मालीम की । ताहरां राजा अत्रैपाल कह्यो माणोज मा ठोड मली कि उवा ठीइ । ताहरां फई मामाबी उवा ठोड मली । कइयो नीसासा मुं नाखरी हुतो । एक दिन राजा मानघटा नु माम्या बोलावां भाखाइ थारो आमो तो निसासा नाखरो सु हुई माली छे । मा बात तो अधिक हुई । ताहरां माणोज माम्यां नु मारी बात कही । बात सगले परगट हुई । ताहरां राजा अत्रैपाल मानघटा नु राज वने आप तपस्या करखै गयो । राजा मानघटा बडो राजा हुयो । बकने कइयां । बडी साहिबी हुई ।

इति मानघटा रो बान संपूर्ण ।

तब मामियों को सपान की । तब राजा अत्रैपाल ने मानघटा से बान पूछा । मागे हानचाम माकूम किय । तब राजा अत्रैपाल ने पूछा—मन्नामे यह स्थान अच्छा कि बहु खराब ? तब उसने कहा—मामाबी, बहु स्थान अच्छा है । अत्रैपाल ने कहा—मे निःश्वास हम किज छोड़ता बा । एक दिन राजा मानघटा को मामियों ने बुलावा घोर कहा—जानके, तुम्हाए नामा तो निःश्वास काड़ण ही बा परं तुम भी छोड़ने लके । बहु बान घोर भी बुछे हुई । तब मन्नामे ने मामियों का साथे बान कही । बहु बान तब जइइ प्रकट हुई । तब राजा अत्रैपाल मानघटा का राज्य देकर स्वयं तपस्या करने चला गया । राजा मानघटा बड़ा मारी राजा हुया । बकवर्ती कहलावा । जमवा राज्य बहुत बड़ा बा ।

मानघटा की कहानी मन्नां ।

## टिप्पणी

राजा मानवादा के सम्बन्ध में प्रपन्न उपास्यताओं में से एक उपास्यता निम्नलिखित रूप में मिलता है—

‘मानवादा एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा था। वह युवनाश्व का पुत्र था और अयोध्या उसको राजधानी थी। कहते हैं कि राजा युवनाश्व कोई सन्तान न होने पर भी संसार त्याग कर ऋषियों के साथ रहने लगा था। ऋषियों ने उस पर दया करके उसके परममान होने का विधि यज्ञ दिया। प्राचीन राज के समय जब यज्ञ समाप्त हो गया तब ऋषियों ने एक बड़े में धनिगन्धित जल भरकर बैठी में रख दिया और प्राय सो बसे। राज के समय जब युवनाश्व को बहुत अधिक प्यास लगी तब उसने उठ कर बड़ी जल पी लिया जिसके कारण उसे बर्न रह गया। समय पाकर उस बर्न से बाहिरी श्वेत पत्र कर पुत्र उत्पन्न हुआ जो यही मानवादा था। इन्द्र ने इसे अपना धर्म पुत्र बना कर पाला था। प्रायें बसकर यह बड़ा प्रजापी और ब्रह्मर्षी राजा हुआ और इसने शरादिभू की क्रिया विन्दुमयी के साथ विवाह किया जिसके गर्भ में पुत्रुत्पन्न सम्बन्धीय और मुद्गुत्पन्न नामक तीन पुत्र और पचास कन्याएं उत्पन्न हुईं।”

उक्त उपास्यता तथा राजस्थानी भाग में मूलतः साम्य होने पर भी राजस्थानी ब्रह्म ने ब्रह्मणी को जो मनोहर रूप दिया है वह उसकी शोभिता का पूर्ण परिचायक है। स्वर्गमोह की दिव्य स्मृति लेकर साम्य के विचार से बर्नसर्ब के धर्म राजु की तरह धर्मप्राय को कृष्ण पर माना पड़ा लेकिन स्वर्ग की स्मृति की भीड़ी केरना उसके हृदय में हमेशा कमलनी रही। जब केरना के कारण राजमहान में सिपने वाले सब धर्मप्राय उसे तुच्छ और भीड़े नामून पड़ने लगे और निजनाम मात्र उत्कल धारधारण रह गया। इन केरना के रहस्य के कारण ही राजस्थानी ब्रह्मणी में कामिना और नायिका धार्या है। मानवादा की तरह जो पान्क इन निजनाम का रहस्य जानना चाहें वह स्वर्ग निजनाम छोड़ कर ही इसे समझ सकेंगे।

# अथ बात सूर्य और सत्यवादी री

एक राजा कही देस री । तेरो नाम वीरमास । सु भो कुँवर सरथ करतो देखै क्यु नहीं । रुपीयो बंधरी बराबर कर मारने । तद इये रै वीरु खण मेरु एक ब्राह्मण एक लोहार एक सुधार । इहाँ सु कुँवर रै बड़ो प्यार । तद रजपूत कामदारे भेले हुम नै कुँवर नु कही राज ब मारब निर्मय यज्ञ करो छौ । इर कही रज पूव सु प्यार नहीं । सु राज करण करो छौ क नहीं । इहाँ इतरी कही तद कुँवर कही साबण सरपखारी भर राज थे तो जेने श्री परमेस्वरजी दीये तेरा छे । प तीन्हों सों मरु वे । इहु भी मरुती यही वै । बसा धुरो रा खीरी छे । जितरे म्हासाज मया छे इतरे ये सरथ म्हारा छे । अर अद म्हाराज किया न हुई तद प तीरु म्हासा वै । श्री साथे हुसी, कुँवर इतरी कही तद लोके कही धारी

## दूरधीर और सत्यवादियों की कहानी

किसी देश का एक राजा था । उसका नाम था वीरमान । उसका कुँवर सर्व करते कुछ बचना ही नहीं था । बंधकों भी तब तक कपड़े बहाना था । इसके तीन साथी थे । एक ब्राह्मण एक मूंदर, एक बर्द । कुँवर का एमि बड़ा प्रेम था । तब राजपूत कामदारों न इतद हुँकर कुँवर से कहा कि हे कुँवर ! तुम यकाज-रुमाय सर्व कर रह हो और किसी राजपूत से तुम्हारा प्रेम नहीं । राज्य का नाम करोसे कि कही ? इसके जना करने पर कुँवर ने कहा कि यज्ञा सर्वना और राज्य—ये तो जिनै परंपेत्तर देता है, उसके है बाकी इन तीनों के प्रेम है । इतिहास के धरे ही धीर है, कुण्ड मनाई के नाभी है । जितने दिन परमात्मा भी कृता है, उतने दिन इन सब धरे हो धीर अब मयद्यु भी दया न रूपी तब के तीनों के है—ये साथी हीके । कुँवर के देया कहा । तब

# टिप्पणी

उत्तम मानवात्ता के सम्बन्ध में प्रकल्पित उपाख्यानों में से एक उपाख्यात निम्नलिखित रूप में मिलता है—

‘मानवात्ता एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा था। वह युवतारक का पुत्र था और अयोध्या उतकरो राजधानी थी। कहते हैं कि राजा युवतारक कोई सम्राज्य न होने पर भी संसार स्थाप्य कर ऋषियों के माध्यम से प्राप्त किया। ऋषियों ने उस पर दया करके उसके घर सम्राज्य होने के लिए यज्ञ किया। प्राचीन एत के समय जब यज्ञ समाप्त हो गया तब ऋषियों ने एक घोड़े में धनिमन्त्रित जल भरकर बैठी में रख दिया और प्रायः तीसरे वर्ष के समय जब युवतारक को बहुत धार्मिक प्यास लगी तब उसने जल पी कर बड़ी जल पी लिया जिसके कारण उसे तर्पण हो गया। तब ही मानवात्ता था। इससे इसे अपना सन्तान पुत्र उत्पन्न हुआ जो प्रायः बलकर यह बड़ा प्रतापी और अत्यन्त ही राजा हुआ और इसने अयोध्या की राज्याभिषेक की गाथा विवाह किया जिसके पूर्व से युवतारक धर्मवीर और युवतारक नामक तीन पुत्र और पचास कन्या उत्पन्न हुईं।’

उक्त उपाख्यात तथा राजस्थानी भाग में मूलतः साम्य होने पर भी राजस्थानी बताते कहानी को जो समोद्धर रूप दिया है वह उपाख्यान की मूलिका का पूर्ण परिचायक है। स्वर्गलोक की दिव्य स्मृति लेकर माध्य के विधान से बर्तनवर्ष के धर्म विष्णु की उच्छ्रय राजराज को पृथ्वी पर आना पड़ा लेकिन स्वर्ग की स्मृति की मीठी बेरना उसके हृदय में हमेशा कमलनी रही। उन बेरना के कारण राजराज में विचित्र बाने सब प्रकल्प उसे सुष्ठ और पीके मायुम करने लगे और निरन्तर बान उसका धारवाप्त हो गया। इस बेरना के उच्छ्रय के कारण ही राजस्थानी कहानी में मायिका और वायव्य प्रायः है। मानवात्ता की उच्छ्रय जो वायव्य इस निरन्तर का उच्छ्रय जानना चाहें तो वह तर्पण निरन्तर छोड़ कर ही इसे समझ सकेंगे।

# अथ बात सूर्यां अर सतवादी रो

एक राजा कही वेस रो । तेरो नाम वीरभाए । सु भौ कुंवर  
 सरथ करखी बेसी क्यु नहीं । सुपीयी कांछरी बघवर कर करबे ।  
 तब इमे रै तीन्ह अलां मेसु एक माझण एक लोहार एक सुधार ।  
 हरां सु कुंवर रै बडो प्यार । तब रजपूत कामदारो मेसो हुम नै  
 कुंवर सु कही राज बे सरथ निर्माब बघा करी छी । इर कही रज  
 पूत सु प्यार नहीं । सु राज करण करो छी क नहीं । इहाँ इतरी  
 कही तब कुंवर पही साबण सरथखारी अर राज भौ तो मेने  
 श्री परमेस्वरजी बीबै तेरा छै । ए तीन्हो सौं मेसु छै । इसु भौ  
 म्हासी देही छै । बेला बुरी रांछीरी छै । जितरै म्हापत्र मया छै  
 इतरे बे सरथ म्हासा छै । अर अद म्हापत्र किरा न हुई तब ए तीन्हो  
 म्हासा बे । अी साथे हुसी, कुंवर इतरी कही तब छोके कही धारी

## सूरजोर घोर सत्यवादियों की कहानी

कितो वेठ का एक राजा था । उसका नाम का वीरभयन । उसका  
 कुंवर बर्ब करते कुछ देवता ही नहीं था । कर्मकां भी तब एके  
 बहना था । इसके तीन बानी थे । एक साइण एक मुहर, एक बार्द ।  
 कुंवर का इनसे बड़ा प्रेम था । एक राजपूत कामदारों ने इन्हें होकर  
 कुंवर से कहा कि हे कुंवर ! तुम पनास-छाप नच कर रहे हो और  
 निजी राजपूत ने तुम्हारा प्रेम नहीं । राज्य का नाम कयमे कि नहीं ?  
 इसके दना बहने पर कुंवर ने कहा कि राजा बर्बना घोर राज्य—  
 वे ही जिसे परमेस्वर देता है, उचरि है बाकी इन तीनों के प्रेम है, प्यारि  
 मे मेरे ही शरीर है, कुंवर नगरी के भागी है । जितन दिन परलम्बा  
 की इया है, उतने दिन तुम सब मेरे ही घोर बर्ब मगवान की पना न  
 रहेगी तब वे तीनों मेरे हैं—मे साथी होने । कुंवर ने देखा बडा । नच



धीरज दीसै छै । परमेसर दसी तबहीज राज बसा । तब कु बर  
 कही म्हे बद्दीज लेसा तब परमेसर बेसी घर बिके मनुषा  
 धीरजसंत है विचारा कारज परमेसरजी करसी । इतरी कहि नै  
 भी वृही कहे ॥

वृही ॥ सुराँ घर सतबादियाँ धीराँ एक <sup>रुनाह</sup> रुनाह । कई करेसी  
 कामडा अरब फलेसी वाह ॥१॥ भौ दूही कु बर फकीबा वा पाछे  
 लाग सरब कु बर सु सुना करै । तब लोकाँ ती राजा री छोटी राखी  
 नु भरमाया नै कही जो धीरमाय ना कदायी ती राजा पारी हुषे ।  
 तब इबे राखी राजा नु मरबाय नै पु बर नु एसोटी दिरायो । माछण  
 सोहार सुधार ये तीगहे साथ छै । ताहराँ अँ अवर बेस नु वालीया  
 साथै । तठे फकी समुद्र रे तीर गया । उन एक रोही हूँती तठे रोही  
 माँहे एक सुधार घर बासीदार रहे । सु बकस सनेसणी री हुनर

भीनों के बहा-नुम्हाय बँदँ ऐमा ही बीजना है, परमेसर देवा लमी राज  
 लोने । तब कु बर नै उत्तर दिका कि नै लमी लू गा जब परमेसर देवा  
 धीर जो मनुष्य बँदँबाय है उनके कर्म बतवाए करेबा । यह कह बर  
 कु बर नै यह बोध बहा-

बोधा-पूरधीर लखनी भीरो बा मन एक ।

बई कोणा बाम कन एरंड देवा नेक ॥

यह बोधा कु बर न बहा । इनके बाय लव लोप कु बर तै ईयाँ  
 करन लने । तब लोना नै राजा की छोटी राखी नो बहना कर बहा-जो  
 धीरबाय ना निर्बाकन कथ है लो राजा लुम्हाय हो जाब । तब इन लमी  
 नै राजा की बहना कर कु बर नो बननाम विचरा रिबा । बाहुण, मुम्हा,  
 धीर बहई-नै तीनों भाय नै । नै उत्तर दिका की तरफ चलने जा  
 ग्दे नै । बहाँ वही मनुष्य के रिनर बने । अवर एक धम था । उन जंपन  
 नै एक भात्री बर बनफा ए रहा बा । बर उरनसनेने की विद्या जानना

जाए। उठे पाँव। तब भी क्यार धाय नीसरिया छै। इहाँ क्यारों  
ही तू क्यार री सीधो कवरे तद माझण रसोइ करे।  
धौ क्यारे जीम। इये माँत माला नुहा अठै सुधार रै आया। तद  
कुबर सुधार नु पूछीयो। क्यौ र नू अटै क्यो पछली रहै छै।  
सहर हाँ छोई नही। जद सुधार क्यी मी अटै एक बन्नु हँ पयाऊ  
हू तैरे बाले रहू हू। तद कुबर क्यी र एक माणस म्हारी ते  
पासे बमूर राखे ती उन्ना। तद इये क्यी उन्नीस।

आहराँ मूतहार नु उठै रात्र हर क्यी उठण मूतोक्षणी  
री हुनर सीस अर आये। सुधार नु उठै रात्रि ते आधा पातीया।  
तीने अर जावता अने जावता एकै रोही माहे गया। इसै ती एक  
लोहार रहै छै उये रोही मदि लोहार बने लोहार रै आय नीसरिया।  
तद लोहार नु पाण पूछीयो। क्यी र तँ अटै एकसै पर मीबीयो छै।

पा पीर क्यो बैद्य (लगेते) बगामा कछा बा। उम तदप ये चारों  
उपर मा निबने। अब इन चारों के ह्ये मोत्रगानि का प्रबन्ध हुआ तयो  
बाझण रना करवा पीर चारों मोत्रन करते। इस प्रकार बुकते-छिले  
इम बड़ि के पास घाने। तब कुबर ने बड़ि के पूछ-ये नू महाँ  
घनेमा क्यों रहता है, (पास में) कोई म्हर ता है नहीं। इस पर बाजी ने  
उत्तर दिया-ममी में महाँ पर एक चीन् बगामा हू विनक निर रहता  
हू। तब कुबर ने बड़ा-घने, एक मनुय हमाय तुम बखरूर के कप में  
रम ना हो रम शर्ये। तब इयने बड़ा-नाम मूला।

तब बड़ि को बही रना पीर बड़ा-उमयदाने का हुनर  
लौकिकर मान्य। बड़ि का बहाँ रसकर के घाने बने। तीना बनते  
बनते एक अंदन में बा निबने। बड़ि क्या देखते है कि एक मुहार उम  
अङ्गन में रहता है। के उम मुहार के पास घने पीर उनते पूछ-बहू है,  
नू का पर बना कर घनेमा क्यों रह रहा है? मुहार ने उत्तर दिया-

सु प्यंस् करै छे । तव लोहार कही राम हूँ अठे बायड़ी रे पायी  
 सु पाण देने तरवार करूँ छू । सु विष्ठा तरवार लाल लान् रुपीया  
 लहे छे । अदे कुवर लोहार तु कही रे लोहार एक तू म्हारो  
 पाकर सो पासै राखै तो म्हे राखौ । तव इयै कही ओ राखीम ।  
 वाहरां कुवर लोहार तु कही तू अठे रहि घर तरवार रौ हुनर  
 सील हर आये । लोहार नुँ कठे राख हर अँ आया खालीया । विष्ठा  
 खालीया खालीया पके रोही माँहे आया । कठे एक ब्राह्मण रौ पर ।  
 कठे ब्राह्मण सपरौ ही रहै । तव कुँवर ब्राह्मण रे घर गयो । कठे  
 जाय न ब्राह्मण नुँ पूछी । कही इतना तू अठे क्यू रहै छे  
 रोही माँहे । तव ब्राह्मण कही अठे हूँ एक विद्या सीमू छू ।  
 विद्या रौ जाय मूर्तबय रौ जाय छे । तु अये सु तीन  
 परस रौ मूर्तौ जीवै । तव कुँवर आपरे ब्राह्मण नुँ कही  
 अठे रहि ओ मंत्र सीमू घर आये । तव ब्राह्मण कही ओ हूँ  
 याने कठे मिलीस । तव कुँवर कही रूतहार उडकस्यटोलणी ल

गाइब मैं यहाँ बायड़ी के पाणी से तनघर के चार बजाला हूँ जिनके  
 मात-माघ गये मिसते हैं । तव कुँवर ने गुगार में कहा—गे गुगार तू  
 अपने नाम एक इमाच घादमी भी रख ले । तव कुँवर ने मुहार में कहा—  
 तू यहाँ रह घोर तनघर का हुनर पीठ पर घाला । मुहार को यहाँ राग  
 कर के घाये बड़ । बनते बनते एक जंमन में पहुँके । यहाँ एक ब्राह्मण  
 का पर था । यहाँ केवल ब्राह्मण ही रहता था । तव कुँवर  
 ब्राह्मण के घर गया घोर यहाँ जाकर ब्राह्मण में पूछ—देना तू  
 यहाँ जगन में क्यों रहता है ? तव ब्राह्मण ने कहा—यहाँ मैं एक  
 विद्या सीमू रहूँ हूँ । विद्या का जप मूर्तबय का जप है ।  
 का कर में तो तीन वर्ष का मुर्तौ ओ जाय । तव कुँवर ने अपने ब्राह्मण में  
 कहा—यहाँ रहो घोर मन्त्र सीमू पर घाला । तव ब्राह्मण ने कहा—  
 यही मैं घालने यहाँ मितूँगा ? तव कुँवर में कहा—बड़ उतनघराना

आली ठीरे साथ आबजो । तब आबजो नु उठे राज हर आप बीह  
 पति पकरो आपो आलीयो । तिही किही पहाइ मदि गयो । एक  
 पहाइ रो गुच्छ दीप्री । तब कु'बर मदि बकीयो । सु आपो जाँव तो  
 धम् जानयो बीसे । तब बले आपो गयो तब आगे बले तो धम्  
 एक पहा सह्र डै पण रत्नस मृतो कर रत्नीयो छै । बाजार री  
 हाटां मर्वा सु भरो पकी छै । आपो देखे तो धम् पर पण सूना  
 पकीबा छै । मवाह भली ही छै पण मनस री जाव नहीं । तब थो  
 पोह बरीयो । आपे गयो आगे देखे तो धम् छोट छै नहत्तपण  
 छै । जे एक कन्या कही राजा री छै । तिअ रत्नस जे आपो छै । सु  
 पाणरो में बेटी हीछे छै । नाम फूलमती छै ।

[हुँवर नु देखे बहुत राजी शूह । तब कु'बर फूलमती नु देखे  
 आपो महल मदि आपो । देखे तो धम् बहुत सुन्दर । कु'बर री मन

कर कन्या उसके साथ धा यता । तब बाजारु का बहाँ रत्नकर तथा  
 मान पाड़े पर कडकर ( कु'बर ) कन्या आपे बस । वह किरी पहाइ  
 में पड़ीया । एक पहाइ की गुच्छ रिज्यार री । तब कु'बर उठ गुच्छ में  
 पुता । जब आपे गया तो जे कु'बर उठनी रिज्यार री, तब वह तिर  
 आप बग तो क्या देखता है कि एक बस भायी छर है किन्तु  
 रहस में जे मूक बना रता है । बाजार की दूनामें आप से बरी पकी  
 है । आप क्या देखता है कि पर मूक पकी है, मान तो बुर है पर मनुष्य  
 का नाम नहीं । तब बाड़े पर कड कर कने बग । आप निपता क्या है  
 कि कोट है, घर है । बहाँ किरी राजा की एक कन्या है । जे रहस  
 में बाया है । वह कु'बे में बेटी मूक रही है । आप उसका फूलमती है ।

कु'बर की देखत ही वह बगुन कुण हुई । तब कु'बर फूलमती का  
 देग कर आपे महल में बाया । देखता क्या है कि ( कु'बरी ) बगुन ही

इसै मौं लागो अर फूलमती कुबर नु देख बोहत राखी हुई । तद् फूलमती बोझी रे मानवी तू अठे अस्तु आयी । अठे राखस आयी तो तनें मारसी । तद् कुबर कही सी तेह गत मैह गत । तद् फूलमती कही गत कामू करे । तानूँ राखस मारसी । तद् कुबर कही राखस मारसी ती एक पार तो तू मोनूँ अ गीकार कर । तद् फूलमती कहे । हू कुबारी हूँ । तद् कुबर फूलमती नु हाथ पकड़ अर फेरा से परणीज अर उठे भोगवी ] तैसां अ राखस री डर री मारी मंकोपीज अर रही हूँती तद् कुबर री हाथ लागी ते सू फूल गई । तद् इवै कुबर नु कही इवै सू पल बाँव अर राखस नु मार मही ती आपां भिहुँनु मारसी । ताहरां कुबर भडग ल सूणै द्विप ऊभी छे । अर राखस आयी तद् आवतैज फूलमती नु फूली दीठी । तद् राखस कही फूलमती आज ती ओवन सू फूलीया छे ।

मुन्तर है । कुबर उठ पर पासल हो गया घोर कुबर को देखकर पूषमती बहुत मुग हुई । तद् फूलमती बहने सगी—हे मानव तू यहाँ कैवे थाया ? यदि राखस यहाँ था यथा तो तुझे मार बातेया । तद् कुबर ने कहा—ओ तुम्हारी मति हीली, बही मैरी भी होपी । तद् पूषमती ने कहा—इमने मति क्या करणी, तुम्हें राखस मार बातेया । तद् कुबर ने कहा—राखस मारना ( तो देता जायगा ) एक बार तू मुझे मगीकार तो कर । तद् फूलमती ने कहा—मैं तो कुमारी हूँ । तद् कुबर ने फूलमती का हाथ पकड़ कर बाँव लेकर उसके विवाह कर लिया घोर उसके साथ मानव बनाया, जिसके बह राखस के डर की माँठे लंबीब से उठने वाली कुबर के हाथ सपने में स्थित कई । तद् इमने कुबर ने कहा—यह तुमत्रबुन हो वा घोर राखस का मार, नहीं तो बह हम बाँवो को मार बातेया । तद् कुबर राखस लेकर बोले मैं दिन कर पल हो गया । राखस प्राया । तद् मान ही उठने फूलमती को लिकी हुई देता । तद् राखस ने कहा—फूलमती तो आज जीवन के फूली हुई है ।

उस फूलमती कही हवै राज फूलमती का । इतरे राजस मारये माहि  
नीचो सिर कर बहती हतो भर कुंवर खडग वाणो तैसु राजस  
मारीयो । इतरे राजस मार आपरी सहर कर सूखी करे छे । तव  
सहर महि सिंह आयो । ताहरो फूलमती कही-राज सिंह मायो  
छे । तव कुंवर सिंह नु मारीयो । तव धीमे दिन हाथीयाँ रो  
रुं आयो । तव धीरमार्णु जिकी आनी पडो कुंवर हतो तिकी  
मारीयो । तव धीर हाथी मारुं गया । ताहरो कुंवर हाथी रो मायो  
धीर भर राज मोती काड फूलमती रे मोहूँ आयो दिग कीयो ।  
तव इतरे एक साड़ी मायरो मोतिरो रो कीयो । एडो साहिबी करे ।  
नहीसँ राणी कल-साँखी फलस पाँखी रो भर ले आवै भर रसोई  
करे । तव कुंवर पाँच पातलु परिसाय नै दोस पातलु आप राखी  
जीमे भर तीगु पातलु छे सु पंखी जनावराँ नै पाते । ताहरो कुंवर  
नु राणी पृथ्वी कही राज ए पातलु तीन ये परिसायर

तव फूलमती ने कहा—हो, पूनी हुई हूँ । इतने में राजस बरबाद में  
सिर नीचा करके बुलने लगा और कुंवर ने खडग का बार किया बिचले  
राजस मार गया । जब राजस का मार कर सहर को घाला बना कर कुंवर  
मौजू करने लगा । तब सहर में सिंह आया । फूलमती ने कहा—महाराज !  
सिंह आया है । तब कुंवर ने सिंह को मार डाला । तब दूसरे दिन  
हाथियों का मुण्ड आया । तब धीरमान ने जो घाने खरीदे बड़ा कुंवर का,  
उसको मार डाला । तब धीर हाथी बग मरे । तब कुंवर ने हाथी का मस्तक  
झीर कर तथा बजमुखा निराम कर फूलमती के मुख के घाने देय किया  
बिचले इतने एक साड़ी तथा कहीं मोतिरो का बनाया । वहाँ से राज्य  
करने लय । नही से प्रवीण राणी पानी का कलस भरकर ले घाली  
धीर भोजन बनायी । तब पाँच बत्तों में भोजन परस कर उनमें  
से दो पत्तों में कुंवर स्वयं तथा राणी भोजन करते धीर को रोच  
तीन बत्त है उनको प्यु--सँखियों के घाने डाल देने के । इस पर  
राणी ने कुंवर से पूछा—महाराज ! ये तीन पत्त परस कर

जनायरा ने कैरे नाथ पासी छी मु कही । ताहरां कु बर कही  
 बेरना साब फही नही । ताहरां रांणी कही ती हूँ थाहरी अरध-  
 सरीरी किसी बिष छू अर मैं बारै पगा राखस ने मरायी अर ये  
 मना सांथ कही नही तां थाहरी प्यार किसी । ताहरां कु बर कही  
 ग्हाय तीम्ह बाहर ऐ । हूँ बीष राख आयी छू । तना प पातलां  
 परामू छू । फुलाखी राजा री बेटी छू । इये मांत नीसरीयो छू ।  
 जेही मांत नीसरीया सो बात मांड हर कही । उवे आयसै ताहरां  
 आपां बेस जासां । एक दिन रांणी पांणी मु गइ इती ठठे मोडकी  
 तिलको मु पांणी मदि गई । तइ मोडकी मद्य रै हाय आई । मु मद्य  
 नीगली । तइ रांणी बीठी एक मोडकी मही ती हफे नू अस् फरू ।  
 तइ रांणी बीथी मोडकी पग सुं अजाय पहाइ री गुफां मादे राखी ।

पयु-पक्षियों को जिसके नाम से बातें हो सो मुझे बतलाओ । तब  
 कु बर ने कहा-स्त्रियों को सभी बात नहीं कहनी चाहिए । तब रानी ने  
 कहा-किर मैं तुम्हारी अर्थांगिनी किस तरह ? और मैंने तुम्हारे हाथ  
 रहम को मराया फिर भी तुम मुझे सभी बात नहीं कहने तो तुम्हारा  
 प्यार कैसा ? तब कु बर ने कहा—मेरे तीन चाकर हैं जिनको मैं रातों में  
 ही में छोड़ दिया हूँ । उनके लिए ये पत्तन परमना हूँ । अमुक राजा का  
 सक्का हूँ । इन प्रकार निबत्ता हूँ । जिस तरह निरास्तन हुआ वा बहु  
 बात जमी नांति बहु बी ( तथा बहु भी कहा ) कि जब मैं प्रायिके तब हम  
 प्रान्न देश बनैवे ।

एक दिन रानी पानी मान के लिए गई थी । वहाँ उसकी जूती  
 छिन्नत गई तो पानी में गिरी । बहु जूती मगरमच्छ के हाथ मसी  
 जिनका मगरमच्छ निगत गया । तब रानी ने देखा कि एक जनी ता है  
 नहीं तो एक वा कना बकनी इनलिए रानी ने हुनरी जूती पैर से  
 निजाम कर पट्टा की कुछ में रग थी । घात पानी केतर घर घाई और

थाप पांखी से घरे भाई घर मोड़कीकी सीखो मोड़ो फरकी ।  
 घर म म म कही मांघ छे नदी नदी बाजीकी ठिकी कटे कही  
 धनख दिसे कही राजा रे दस भायी । राजा रे मछ तेस कटापली  
 दंती छद नदी माहे मछ नासीयो । तद मछ सी जान महि  
 भायी । तद राजा मछ रो पेट भीरपी तै मांहा उभा मोठीयां ही  
 लोड़ी छाल कपीयां ही नीसरी । तद मोड़की राजा बना दसने  
 बंदोरो फरीयो कहीकी इवे मोड़की ही जोड़ी पैदास करी तां जेनु  
 भापो रास घर चेटी परणाइ । तद भी बंदोरो राजा रे रनवास  
 इतो माइ सेरी क्यू मुखीपी । तद नाई ही बहू नाइ तु कहीयो राजा  
 कहे तां भा मोड़की धामू छे इवे यो मोड़की रे परखहार तु पैदास  
 कर । नापख बूती इठी । माई माव राजा नुं करि म्हापत्र म्हारी  
 नापख कहे से म्हापत्र कहे तां मोड़की ही कसू खली जेरी भा

कृषिओं का रूप रोग बना दिया । और वह मध्य संयोग्य बनी  
 गयी चक्रा बना उसके द्वारे पर बाहुन की घोर निती राजा के देश  
 में पाया । उस राजा को मलय-देश तैयार करवाना था ।

दम्पित् नदी में जाल बनवाया गया । तब वह मत्स्य उड़ान में  
 ला गया । जब राजा ने मत्स्य का चेह चिराय तो उन्हीं एक लाख दणों  
 की सींगों की बूते निकली । उन बूती को देख कर राजा ने वह  
 दिशोर विचार कि जो इस बूती के बंधे का पडा अपनाया कने क्या  
 राज्य और बनें दुबा । राजा के इस दिशारे को राजा के नाई की स्त्री ने  
 सुना । उस नाइन ने नाई से कहा कि और राजा बड़े ता बहु बूती बना  
 बांध है, इस बूती की पट्टनेवासी को लाकर पैठ कहे । नाइन बूती पी ।  
 नाई ने लाकर राजा से कहा—महापत्र मेरी नाइन कही है कि यदि  
 महापत्र बड़े तो बूती बना बांध है मिठरी बहु बूती है उसी को लाकर



जोड़ी री मोड़ड़ी खी सेनु पैदास करू । तद राजा कही सावास  
 आहीअ आहीअ बुरीयां ले आवी । ठाहरां नायण राजा पास  
 खरणी सेने आदमी दस बीस ले ने एक हू डो फरायने नरी नरी  
 चाही । तठे केही सहर मांहे नरी आवै सहर मांहे जाय सादूकर  
 रा पर देखै पैरा गहसा बेस पदरीया तठे देखै तद पाड़ी आय हू बै  
 वैसे आवी पाले । इवे मांठ केही सहर दीठ । तद आ देखती  
 देखती बबे सुने सहर आई । तद थठे पिण्ड हू बी छमी राज सहर  
 मांहे बबय लागी । तद एकख सुणो बवा बीबी पण मोड़ड़ी पड़ी  
 वीठी । तद नायण जूती उठय लीबी भर पादौ घाय जूती लो  
 चाकरां नु वीबी । कही जूती की बखीबांखी पण अठे हुसी । तद  
 नायण हुकर मांहेकर भीतर गइ । घामे सुनी हाटां पड़ी छे कठोई  
 री पण हाटां मिठई सु भरी पड़ी छे । तद नायण मिठई री

पैरा बरू । तद राजा ने बहू—सावास इसी बरू न घामो । तद  
 राजा राजा के पास से सब सेकर तथा दग-बीत घायनी लेकर एक नाव  
 बना कर नरी-नरी बनी । तद तिस शहर के पास नरी घाबे  
 वहाँ बड़ लुहापों के बरों को जाकर देखनी—तिसों क  
 गढ़ने बेग-गढ़नाय देखनी फिर बार्निठ घाकर नाव में बैठकर  
 घाले बानी । इस प्रकार कई शहर देखे । इनके बार देखनी-  
 बनी उग मूने शहर में आई । वहाँ नाव लड़ा करके बर बड़ शहर में  
 पुनने लगी तद एक बने में घने बड़ लुहापे जूती वही हुई रिगा ही ।  
 तद बाद न जूनी उठय ली घोर बार्निठ घाकर जूनी छे नीटों को व  
 ही घोर बड़ा—जूनी की मार्किन भी वही होगी । नाहन गुग के  
 धन्दर में पुनी । घाबे दूधने सुनी वही है वर बरोई ( दगवाई ) की गुगलें  
 पिण्ड में भरी गनी है । तद नाहन मिठई की बोली भर कर घोर बहर

पाँच मर हर बाहर जाय रखपूर्ता नु बेइ आई । रखपूर्ता नै कठे  
 ही रोटी माहे पाकि आई । अर आप मीतर गई । आगे आ देखे  
 ही कसू फूजमती देखी छै । हीबोलाट माहे हीबे छै । तद नामण  
 पाय पनायां छीनां अर कही पोली जात्रा म्हासी माणोजी हूँ  
 ऊपर । इतरी कही नाइन पास जाइ वेठी । कही सू म्हासी माणोजी  
 छै हूँ बारी मासी छु । तद फूजमती कही ती बोहोव मलां ।  
 तद नामण पुझी कही बारी बणी कठे छै । तद इये कही सिद्धर  
 गयो छै । तद नामण इये नु पीन्नी अर सनान कराय मायो गू ब  
 तेमार कीबी । इतरे कुंवर सिद्धर से आयी ।

[तद कुंवर फूजमती नु पूछीयो आ कीय छै । तद रोखी कही  
 म्हासी मासी छै । तद इये रे मन सुखीपादि इतो तद छै इये नु <sup>विश्व</sup>  
 राखी । आ छै मायस रहै अर हीजा करे । रखपूर्ता सीधो मिथई से <sup>से</sup>

जाकर राजपुतां को वे पाई । राजपुतां को कहीं यज्ञान में छोड़ पाई तथा  
 पाय भीतर गई । पाये जाकर बरा बसती है कि फूजमती रूपे में बंदी  
 रूप रही है । तद नाइन में जाकर कर्पसा की पीर कहा—घननी बानगी  
 पर म्हासीर होती है । इतया बरकर नाइन वास जाकर बैठ गई पीर  
 कहा—तू वेठी मावकी है, मैं तुम्हाणो बीनी हूँ । तद फूजमती ने कहा—  
 बहुत घबरा । तद नाइन में पूछा—तुम्हाण पनि कहाँ है । उनसे  
 कहा—तिहार के सिद्ध गया है । तद नाइन न इतके पीठी (उबटन कर  
 म्हाण कर कर बानी तू बकर उमे तीपार कर रिवा । इतने में कुंवर त्रिहार  
 से आया ।

तद कबर न फूजमती ने पूछा—एह बोन है ? तद राणी न कहा  
 मेरी मोथी है । तद इतके मल में निराण हो क्या पीर उमे बही एव  
 निजा । तद नाइन "बा" रूनी पीर सेवा करती । राजपुतां के लिए मोहन

ने जाय देवै । इयै भांठ रहवे । रहिवां नाम्छ फूलमती नु कही एक हूँ ~~कल्प~~ आयां छां वेंसू तेनु बोहोव सुख हुसी । तव फूलमती कही तो बखाय । तव नायण छठे मुफ्तरी बखायो अर सबायो कु बर नु अर फूलमती मुं दोनां ही मुं । तेसु अर बहुत राखी हुवा अर मुफ्तरी खात्रे । इयै भांठ रहितां २ पके दिन नायण बने कही कुंवर नु एक गोली बखाय छां संसु ये राखी हुसी । तव कुंवर क्यो गोली बखाय । तव नाम्छ विस गोली बखाय इर कुंवर नु दीबी । अर आपसो पाखती जाय सूती । कुंवर पिण आय सूती । तिको विस री गोली सुं छठे मुबी । तव फूलमती कुंवर नु पसो ही बोलायो पण कुंवर तो बोले नहीं । इवा नायण देवै तो कासू कुंवर तो मूवी । ताहरां फूलमती विचारीयां नु हमै कूच तो आपां री अठे कोई नहीं अर इयै जिनास कुंवर

मिटाई नै बाकर बेनी । इस प्रकार रहते—रहने नाइन ने फूलमती से कहा—मैं एक घीनप जानती हूँ जिसने तुम्हें बहुत सुख मिलेगा । तब फूलमती ने कहा—तो तैवार करो । तब नाइन ने छठ कर मुठप बनाया और कुंवर और फूलमती दोनों को निमाया जिससे ये दोनों ही बहुत सुख हाकर मुठप पाते । इस प्रकार रहते—रहने नाइन कुंवर को फिर कहने लगी कि एक बटी बनानी है जिसने तुम सुख दाने । तब कुंवर ने कहा—बटी बनाओ । तब नाइन ने बिय बी गोरी बनाकर कुंवर को दे दी और और आप मरत के बाजू में आकर लो गई । कुंवर भी जाकर लो गया । वह बिय बी गोरी न बहीं मर गया । तब फूलमती ने कुंवर को पून बुझाय पर कुंवर तो बोझा ही गरी । वह नाइन करा देगनी है कि कुंवर मर गया । तब फूलमती ने विचारत—यदि मैं राऊ गी तो बहीं पर अपना कोई नहीं । दस बुला न कुंवर को

तु मारीयो । तेना कहे कामू हुबे । तद फूलमती बिचारी भो  
 कुबर से ब्राह्मण भासे ही बने पासै संजीवन पिशा छे ।  
 सु जीपाइसो । तद फूलमती बडे कुबर नु महनायक माह भरंड  
 से रुद्र हुवा तेरे पाना माह सपेट भर भरंड रे रुद्र अर  
 रन्नीयो । परमाठ हुबे तद नायक कही राधक परजो कठे ।  
 ताहरां ह्ये कही कुबर तो राते मूबो । सु एकोरात राकस ब्याय  
 से गयो । अठे राकस भावे छे । इतरी ह्ये कही तद नायक  
 कही तो हल्लो भापां अठे सु परी हानां । तद ए अठे सु बठ भर  
 नही भाई । भावे बठे राजपूत हुंकी लोपां घंठा छे ।  
 नायक फूलमती नु हुंकी बेसाण भर हुंकी बसाइ । सु  
 अे बानीया भापरि सहर भाया । नायक फूलमती ने ले हुंकी सु  
 बतर भर राधा ही इमूर से राजा रे भासो भायै सन्नाम क्यारै ।  
 महाराजा भा अठे मोडकी से पैहरण वाली भाई छे भर अठ मोडकी

मार जाता । इन फूल में क्या काम होता ? तब फूलमती ने बिचार  
 अब इस कुबर का ब्राह्मण बापेका तो उसके पास संजीवन-पिशा है तो  
 बिला देगा । तब फूलमती ने कुबर का बड़ी मूर्खों में जो एरएक का पैर  
 का उसके पत्तों में लगे कर एरएक के पैर पर रख दिया । अब फूलम  
 हुवा तो माहन ने पूछा—उबहुमार कहां है ? तब उसने उत्तर दिया—  
 कुबर तो राज के दर में ही राख रख कर ले गया । बड़ी  
 राकस भापा करता है । इतनी बात जब दख कही—तब माहन ने कहा—  
 तो क्या हम यहाँ से कहीं निकल जमें । तब ने वहाँ से उठ कर गरी के  
 पास घाई । बड़ी भावे राजपूत नाय लिये बैठे । माहन ने फूलमती को  
 नाब कर कहावा घोर नाब बचाई । सो छे बचने-बचते मन्त एहर में  
 भावे । माहन ने फूलमती को नाब से बजार कर राधा ही बानियों को  
 ले कर राजा के मोहो मकर सनाम क्यारै घोर कहा—भ्यायन एर बहो  
 पर एर मूनी एहन बानी भा गई है । घोर कही एर कुशी भी

उषा हाज़र फ़ीषी । छठे राजा इधे री रूप देस बहुत राजी हुषी । नायण ना पण इनाम देने फूलमती नु भीतर ले गयी । छठे रात पड़ी अब राजा फूलमती रे माखीये गयी । तब फूलमती कही राजा खो तू मोनु हाथ लायी तो हूँ पख मरोस अर तनेई मारीस अर एक बरस ताई हर हेफ हूँ अबदेह महल रहीस एते बरस दिन ताई पुम्य अर कु बर री बरसो अर पड़े घारे होलीये आईस इतरे मने देके मती । ताहरा राजा एक एकरंत महल कराय उते उवे सु राखी । (पात्रती उषा नायण अर तीह बीबी राखी छोफरी कुघारी एक ब्राह्मण री बेटी छै एक सुभार री बेटी एक लुहार री बेटी । छठे अँ तीन्ह छोफरी राखी । छठे फूलमती सहा-वरत मांहीयो जिकीई आवै तेनु सीधो बीजे । इधे भांत रहे तठे उवे नारी कुंवर तीन्ह पाछर राख आयी हुँतो तिकर हुनर सीखीया । विधे सुभार घालीयो सु छोहार पास आवी लुहार नुँ ले

हाजिर बी । बहा राजा इतके बप को पैगवर बहुत गुरा हुषा घीर नाहन को इनाम देकर फूलमती का भीतर ले गया । अब रात हुई तब राजा फूलमती के महल में गया । तब फूलमती ने कहा—राजा जो तुने मेरे हाथ लगाना तो मैं तो मरूंगी ही घीर तुम्हे भी मार डायूंगी घीर यदि एक बरस तक एकरंत मन्म में तू मुझे छुने के उषा एक बरस तक पुण्य करके कु बर की बर्ती बर सेने इ तो बार में तेरे पाम घाऊगी । इनने मुझे मउ छेइ । तब राजा ने एकांत मन्म बना कर उमे बहा रखा । पाल में बहु नाहन घीर तीन हुमरी कुमाठी छोफरियाँ एग छोडी—एक ब्राह्मण बी मइबी हूँ एग गली बी बेगी हूँ एक लुहार बी बेगी हूँ । बहा उन तीनों लड़कियों को एग दिया । बहा फूल मती ने नराहन बाँटना शुरू किया । जो घाना उन भावन दिया जाता । इन घने में वे तीन लोकर जिन्हें कु बर एग घाना था हुनर सीग भये । जो बर्ष था वह बन बर लुहार के पाम घाना । लुहार को पैगवर

भर प्राण्य पास आया तीन्ह भेला हुइ भर कुंवर री खबर  
 करण नुं चानीया । ठिके चालिया चालिया उये सहर आया जिंके  
 सहर पूजमती आइ इतो तइ भी सशबरत नुं लवण गया । छडे  
 इहा च्यार जणा री सीपो मांगीयो । तइ इहां ने क्यो ये तीह  
 हो च्यार री सीपो क्यु मांगो । तइ इहा कही न्ह च्यार छो । तइ  
 जिंके सशबरत देसा इवा जिंठ चाय कही पट्टी राजतीन्ह जणा  
 आया छे जिंके च्यार री सापो मांगे छे कोण हुकूम । ताहरं रांकी  
 क्यो दीयो । तइ इहा ने सीपो दीयो । ठइ ही व महल नीचे  
 रुख इतो तटे ही प्राण्य रसीइ कीधी इर च्यार पावल परीसी ।  
 एक पावल भर लाटो आपो मन नमस्कार कर भर प्राण्य  
 जीमण बैठो भर उये सुधार लोहार पिण पावल री परिहमा  
 कर जामण बैठा । तटे पूजमती दीया । तइ पूजमती थिभारी प  
 सही चोर कुंवर कहतो तिफ हीज छे । ताहरं राणी आपन कपड़ा

तथा प्राण्य के पास आकर तीनों इजठे हुए और कुंवर का पना  
 सगाने के लिए बने । वे बचने-बचने उन शहर में आये जिस शहर में  
 पूजमती आई थी । तब य वहाँ सराजत सने के लिए गये । उन्होंने  
 चार जनों की सामग्री मांगी । तब इनको कहा कि तुम तो तीन हा  
 चार की सामग्री क्यों मांग रहे हो ? तब उन्होंने कहा—हम चार हैं ।  
 तब जो सराजत दिया करता था उसन जा कर कहा—बहूजी तीन  
 बने धान हुए हैं, वे चार की सामग्री मांगने हैं, क्या हुआ है ? तब  
 उनो ने कहा—दे दो । तब इनको सामग्री ब ही गई । उसी महल के  
 नीचे एक दूध था । वही आहमण ने भोजन बनाया और चार पत्तन  
 परली । एक पत्तन और छोटा घाने रन कर तथा नमस्कार करते आहमण  
 मासन करन और और के बरू और मुद्दर भी पत्तन का परिहमा  
 कर भोजन करन बैठे । उस समय पूजमती ने देय विना ती  
 पूजमती ने विचार दिया—जिनके बिजय में कुंवर कहा  
 करता था वे तीक ये ही सामग्री हैं । तब राणी घन्ने काडे

उठार दासी रा कपड़ा पहार इहाँ कन्हें आई तव राँखी पूछीयी  
 साब कहीं ये कौयु छी अर पागल केनु 'पासे राम हर नमस्कार  
 करी छी अर ओम्मी छी । तव इहाँ कही न्ह बीरमान कुवर रा  
 पाकर छी । सु न्हाने बाँसे राम आयी हँती सु हमें न्हें फवर री  
 सबर करण जापाँ छी । तव राँखी कही याने जे बाने बाँसे राखिया  
 इँटा सु विद्या सीली क नही । तव इहाँ कही नू इतरी पूछ सु नू  
 कौयु छे । तव इये आपरी हफ्फिकन कही । इयेकही इय माँत कुवर  
 परणी हँती ह कुवर री राणी छु । अँ मनें इये माँत से आबा छे  
 तिक्र इकीकत पण पूसमती इहाँ ने कही । तव इहाँ कही पबा विद्या  
 न्हें सीस आया छी । तव आ इहाँ ने मीहन माहे ले जाब अरा  
 उइणखनोलीकी सुधार अर इतरा बेठा तीन ती अँ  
 अर राँखी तीन्ह छोफरी अर नापय ते वैस अर छत्र सु  
 खनोत्री ना कही खटोली वाजयों डंड जेय जाय तेय म्हारे

उठार कर घोर बाती के कगड़े पान कर एनके पान आई । तव रानी ने  
 पूछ—सब बहो वृम बोन हो घोर विमने निप पतम रण कर नमस्कार  
 करक मोहन काले हो ? तव इहोन बहा—हम बीरमान कुमार के  
 बाकर हू । तव हमें कीसे छोड़ पाया या सो सब हम कुवर का कर  
 ने बरा—तुम्हें जिन बाने देव

कुंवर री पिंड । तद् खटोली उठी अठें राज दरबार किसी  
बैठी छे । अर नायण री माटी मोरछड़ करे छे । छठे रांणी कही  
अठे नायण मु नास दियो । छठे नायण नुं पकड़ हर कही करे स पावे  
इतरी कही ने नाखी । ठिका दरबार बीच आय पड़ी । तद् राजा नाई  
ठीठी ओं कासुं हुयो । पतो नायण नुं नास खलता हुआ । नायण तो  
मर गई अर अँ छत्रे सागी सहर आया । महल मांहे आय अरंभ रे  
रुस सु कुंवर ने उतार अर ब्राह्मण जाय कीयो तैसु कुंवर जीयियो  
छठे फेर कुंवर आ हकीकत सुणी तद् कुंवर दूही कयो ॥ सुरा  
भीर सतबादियां, धीरों पर मनाह । दई करेसो अमड़ा अरख  
फलेसी ताह ॥१॥ ओं दूही कहि कुंवर छठे अँ छोकरी हंती सु  
ब्राह्मणी ब्राह्मण नुं परणाय सूतारि सूतहार नुं परणाय लोहारी  
लोहार नुं परणाय । छठे सहर मांहे मता इती सु ले ने असवार  
वसाया घोड़ा हाथी से ने बडी लसकर कीयो । तद् छठे सु चालीया

तब खटोली उठी । जहाँ राजा दरबार किया हुए बीच पा भीर माहन  
का प्रति शंकर बुधा रहा था, वहाँ रानी ने कहा कि यहाँ माहन को पटक दो ।  
जहाँने माहन को पटक कर कहा—‘करे सो पावे । इतना कह कर पटक  
रिवा । वह दरबार के बीच में आकर पड़ी । तब राजा भीर नाई न देता—  
यह क्या हुआ । ये तो माहन को पटक कर बसते बने । माहन तो मर गई  
भीर के ठीक वही शहर में घाये । महल में आकर एरख के वृक्ष म  
कुंवर को उतार कर ब्राह्मण ने अप किया, जिससे कुंवर जीवित हो उत्र ।  
वहाँ छिद्र कुंवर ने यह सब बृहस्पति मुना, तब कुंवर ने यह दोहा  
कहा—

शरबीर सत्यव्रती धीरों का मन एक ।

दई करेबा काम कम एरख देमा नक ॥

यह दोहा कह कर कुंवर ने वहाँ ओं छोकरीयां भीं, उनमें से ब्राह्मणी  
ब्राह्मण को बड़हन बड़ई को मुगारिन मुहार को ब्याह री । उग शहर  
में दो मास वा उये भेकर समार बघाये बोड़े-हाथी लेकर बड़ी माटी  
मेना तैयार की । तब वहाँ ने बने ।



उठार दासी रा कपड़ा पहन इहाँ कन्हे आई तब राखी पूखीनी  
 साब कही ये कीण छी अर पावल केनु पासे राज हर नमस्कार  
 करी छी अर बीमो छी । तब इहाँ कही न्हे बीरमाण कुबर रा  
 बाबर छी । सु न्हाने बासे राज आयी इती सु हमें न्हे कंधर री  
 सपर करण बाबा छी । तब राखी कही बाने जै मास्ते बासे राजिया  
 इठा सु विद्या सीसी क नही । तब इहाँ कही तू इतरी पूछे सु तू  
 कीण छै । तब इये आपरी हकीकत कही । इयेकही इण भांत कुबर  
 परखी इती हू कुबर री राखी छु । अ मने इये भांत से आया छै  
 तिका हकीकत पख पूसमती इहाँ ने कही । तब इहाँ कही उवा विद्या  
 न्हे सीस आया छी । तब आ इहाँ ने मौहल मादे ले आय अर  
 उइणमटोझखी सुधार अर इतरा देठा तीन ती अ  
 अर राखी तीनह छोकरे अर नायख मे पैस अर छटा सु  
 खगेली मा कही जटोली बाबणों बंड जेय जाये तेव न्हारै

उठार कर और दासी के कपड़े पहन कर इनके पास आई । तब रानी ने  
 पूछा—उब न्हो तुम नील हो और किसके लिए पकल रख कर नमस्कार  
 करके बाबल करने हो ? तब इन्होंने कहा—हम बीरमान कुमार के  
 बाबर हैं । वह हमें पीछे छोड़ पाया था सो अब हम कुबर का पना  
 लगाने क मिए बाते हैं । तब रानी ने कहा—तुम्हें किस बास्ते पीछे  
 छोड़ गया था वह बिठा तुम बोबा ने सीसी था नहीं ? तब उन्होंने  
 कहा—तू इनकी पूछनाच करती है सो तू नील है ? तब हमने अपना सब  
 बृतांत सुनाया । हमने कहा—इन प्रकार कुबर ने मुझे निगह  
 कर लिया था । मैं कुबर की रानी हूँ । मैं मुझे इन प्रकार से धाये है ।  
 मैं सभी बातें कूनमनी ने इनका बतवाई । तब इन्होंने कहा कि हम के  
 बिछाण नीय धाये है । तब वह रानी इनको महल में ले गई तथा  
 उइणमटोझने पर इनके बने सगर हुए—तीन ती मैं और रानी तीन बातिया  
 और मादन—इन्हाके बड़ी बर कर घटाने मे कहा—हू यत्रने हुए रंडी  
 बानी बानी । वहाँ जाता है जहाँ हजार कुबर का घर पड़ है ।

कुँवर रो पिङ्ग । तद् मद्रोली वही उठे रात्र दरबार कि  
 बैठो छै । अर नायण री माटी मोरछत्र करै छै । तठै राणी का  
 घटै नायण नु नाम दिव्यो । तठै नायण नु पकड़ हर फही फरे स प  
 इतरी कही नै नामी । तिकर दरबार बीच आय पही । तद रात्रा ना  
 दीठो श्री क्वासु हुयो । मतो नायण नु नाम चलता हुआ । नायण र  
 मर गई अर श्री उवै सागी सह्र थाया । महल माँहे भाव अरंभ  
 कस सु कुँवर नै उठार अर आग्रह जान कीयो नैमु कुँवर जीभिय  
 तठै फेर कुँवर आ हकीछत्र सुणी तद् कुँवर इहो कथो ॥ मूर  
 श्रीर सतवादिष्यं, धीरां एक मनाइ । दड फरेसा अमड़ा अरणा  
 पनेसी ताह ॥१॥ श्री वृहो कहि कुँवर उठै उवै छोखरी इती इ  
 आग्रही आग्रह जु परखाइ मूतारी मूतदार नु परखाइ सोहार  
 लोहार नु परखाइ । छै सह्र माँहे मता इती सु ने नै अमवा  
 वसाया घोड़ा हाथी से नै बढी लमकर श्रीयो । तद् उठै सु चापीय

तब खटोली जई । जहाँ राजा दरबार किम् हुए बैठ या घोर महान  
 का पति बैर दुःख रहा बा, वहाँ रानी ने कहा कि यहाँ तान्त्र की पक्क हो ।  
 उन्हीं तान्त्र का पक्क कर कहा— करे सा पावे । इनका कह कर पक्क  
 दिया । वह दरबार के बीच में जाकर पड़ी । तब राजा घोर नाई न देया—  
 यह क्या हुआ । ये ता तान्त्र को पठक कर अपने बने । तान्त्र ता मर गई  
 और ये छीक जसी रात्र में पावे । महल में जाकर एरएह के वृक्ष में  
 कुँवर को उठार कर आग्रह ने जन किया, जिसने कुँवर जीवित हो उग्र ।  
 वहाँ फिर कुँवर ने यह जब वृत्तान्त सुना, तब कुँवर ने यह बोधा  
 कहा—

शरबीर मपहनी बीरों का मन एक ।

हैं कोया काम जन एरएह देत नेक ॥

यह बोधा कह कर कुँवर ने वहाँ जो छेकरिया थीं, उनमें से आग्रही  
 आग्रह को महान बर्हि को मुगलिन नुरार को ध्याइ दी । तब दर  
 में जो मान बा, उडे लेकर उठार बसति भोत्रे-हाथी लेकर वही जाती  
 गया तैपार की । तब वहाँ ने बने ।

तिके आलता आलता पाप रे देस आया । तब राजा नु खपर गइ  
 सु कोई राजा देस पर आलीयो आवे छै । तब इये राजा साम्हा  
 आपरा परधान मेरहीया । कु वर पास आवे पृथक् लागा केरो साथ  
 छै । तब कु पर रा लाख कही कु वर वीरमान छै फलाणी री बेटी छै  
 सु पाप रे पास आवे छै देसोटे गयो इती तिजे आवी छै । परधाने  
 आय राजा नु कही महापत्र राखी कु वर वीरमाण छै सु राखे  
 पास आवे छै । तब राजा रे छोटे महल रे छोरे क्यु नही । राजा  
 शरी वात सुखी राजी हुया । राजा पण साम्हो अहीयो छै । जटे  
 नजीक आया तब कु वर घोड़े सु उतर ने पाप रे पगे आय लागी ।  
 तब राजा बेटी सु मिल दर राजी हुवी । बाजे मायते राजा बटे नु  
 मे परे आयो छै । तब कु वर उहाँ रजपूता नु कही भी परमेसर  
 मोनु राज देय हवो तो दोयो छै तो रजपूता कही राज कही सु  
 सही कहे छै । मात सुरा सवकारीबां री संपुस ।

तो बसते—बसते अपने पिता के देस में आये । तब राजा की बह  
 हुई कि कोई राजा देस पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है । तब इस  
 राजा ने सामने अपने प्रधान को भेजा । वे कु वर के पास आकर  
 पूछने लगे कि यह किस की सेना है ? तब कु वर के आश्रितों ने कहा—  
 समुद्र राजा के लड़के कु वर वीरमान हैं वे अपने पिता के आश्रितों  
 के लिए आये हैं । बगदाद में गये हुए वे जो लौट कर आये हैं । प्रधानों  
 ने आकर राजा से कहा कि महापत्र । आपसे कु वर वीरमान हैं, तो  
 आपके आश्रितों करने के लिए आ रहा है । राजा की छोटी रानी  
 के कोई लड़का हुआ नहीं था इसलिए राजा यह बात सुनकर दुःख  
 हुआ । राजा धनरानी करने के लिए गया । जब नजदीक आया तब  
 कु वर घोड़े से उतर कर पिता के देस आ गिरा । तब राजा पुत्र न  
 मिलकर दुःख हुआ । राजा माये-बाजे के साथ पुत्र को लेकर घर आया ।  
 तब कु वर ने राजपूतों से कहा—भी परमेसर को मुझे राज्य बना पा  
 यह ही रिया ही । तब राजपूतों ने कहा—महापत्र आपने कहा तो ठीक है ।  
 तुमने भी नयकारियों की कहा सम्पूर्ण ।

